# हरियाणा विधान सभा

# की

# कार्यवाही

## 29 मार्च, 1977

खण्ड 1 — अंक 8

अधिकृत विवरण

# विशय सूची

## मंगलवार, 29 मार्च, 1977

पृश्ठ संख्या


| | |
|---|---|
| तारांकित प्र न एवं अतर | (8)1 |
| अताराकिंत प्र न एंव उत्तर | (8)22 |
| ध्यानकर्शण सूचना | (8)25 |
| नियम 16 के अधीन प्रस्ताव | (8)26 |
| राज्यपाल के अभिभाशण पर चर्चा (पुनरारम्भ) तथा धन्यवाद प्रस्ताव पर मतदान | (8)26 |
| बैठक का समय बढ़ाना | (8)68 |
| राज्यपाल के अभिभाशण पर चर्चा (पुनरारम्भ) तथा धन्यवाद प्रस्ताव पर मतदान | (8)68-76 |

# हरियाणा विधान सभा

## मंगलवार, 29 मार्च, 1977

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर 1, चण्डीगढ़ में प्रातः 9.30 बजे हुई। अध्यक्ष (चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की।

## तारांकित प्र न एवं उतर

***1754. Ch. Ram Lal Wadhwa:** Will the Minister for venue be pleased to refer to the reply to Unstarred Question No. 385 lied on 31-1-1976 and to state the acreage of surplus land alloted the persons belonging to Sche Castes, Scheduled Tribes and Backwards Classes, separatlely, during the period from 1-1-1976 to date?

**राजस्व मंत्री** (श्री मांड़ सिह मलिक):

करनाल जिले में 1.1.1976 से 31.1.1976 तक अनुसूचित जातियां अनूसूचित तथा पिछड़ी जातियों के व्यक्तियों को बांटी गई सरप्लस भूमि का क्षेत्र निप्न प्रकार हैं

(I) अनूसूचित जातियं 1487 सादा एकड़

| | |
|---|---|
| (II) अनुसूचित | वर्ग भून्य |
| (III) पिछड़ी जातियां | 783 सादा एकड़ |

**चौधरी राम लाल वधवाः** क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि कितनी सरकार के पास कोई सरप्लस जमीन बाकी हैं?

**श्री माडू सिंह मलिकः** जी हां।

**चौधरी राम लाल वधवाः** क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कितनी जमीन सरकार के पास हैं।

**श्री माडू सिंह मलिकः** यह आंकड़े मेरे पास अवेलेबल नहीं हैं।

**चौधरी पीर सिंह मलिकः** क्या मंत्री महोदय यह बतलाने का कश्ट करेंगे कि उस सरप्लस जमीन को वितरण करने का सरकार का कोई प्रोग्राम है?

**श्री माडू सिंह मलिकः** जी हां।

**चौधरी राम लाल वधवाः** क्या मन्त्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि लैण्ड सीलिंग एक्ट जो सरकार ने बनाया हैं उसके तहत जितनी सरप्लस जमीन निकली हैं उस से कितने लोगो को फायदा हुआ हैं।

**श्री माडू सिंह मलिकः** अभी लोगों से उसके लिए डिक्लेरे ान फार्म मंगाये हैं वह आ चूके हैं, उनको एग्जामिनी करके ही यह बताया जा सकता हैं कि कितने लोगों को उससे फायदा होगा।

**श्री के0 एन0 गुलाटीः** स्पीकर साहब, जो जमीन सरप्लस डिक्लेयर हो चुकी हैं वह जनसंघ के दो एम0 एल0 एज0 के नाम रिर्जव हो सकती हैं?

**Mr. Speaker:** Order please. No arguments.

**श्री बिहारी लाल बाल्मीकिः** स्पीकर साहब, मेरे हल्के में एक गांव बासना हैं, वहां पर बहुत सारी जमीन सरप्लस पड़ी हुई हैं, गरीब हरिजनो ने उस के लिये पैसे वगैरह भी भर दिये हैं लेकिन उन लोगों को अभी तक जमीनो का कब्जा नही दिया गया हैं उन्हें कब तक उस जमीन की अलाटमेट कर दी जाएगी?

कोई जवाब नही दिया गया।

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** स्पीकर साहब, मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि गुलाटी साहब तो बस यूंही ऐसी वैसी बात पूछतें हैं। जिनका कोई मतलब नहीं । इनको पागल खाने में कब भेज दिया जाएगा? (हंसी

**मुख्य मंत्री (बनारसी दास गुप्ता):** यह तो आपके पास ही जायेगा, अकेला नही जायेगा।

**चौधरी पीर चन्दः** अध्यक्ष महोदय, क्या सरकार यह आ वासन देने के लिये तैयार हैं कि सरप्लस जमीन को कब तक गरीब लोगों में बांट दिया जाएगा?

**श्री माडू सिंह मलिकः** अध्यक्ष महोदय, हमने डिक्लेरे ान फार्म मंगाये हुये हैं उनको एग्जामिन करने के बाद ही जमीन तकसीम की जा सकेगी।

**चौधरी राम लाल वधवाः** क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेगें कि इस काम के लिए कोई डेट वगैरह भी रखी हैं कि फलां डेट तक यह काम कर दिया जाएगा।

**श्री माडू सिंह मलिकः** इसके लिये कोई स्पेसीफिक डेट नहीं हैं पर जल्दी से जल्दी ही करने का प्रयत्न किया जाएगा?

**चौधरी पीर चन्द्रः** क्या मंत्री महोदय बतलाएंगे कि ऐप्लीके ान लेने के लिये भी कोई डेट फिक्स हैं और क्या फिक्स की हुई आगे भी बढ़ा दी जाएगी?

**श्री माडू सिंह मलिकः** नहीं डेट आगे नहीं बढ़ायी जायेगी।

**Amount of Bonus**

***1766. Ch. Rizaq Ram:** Will the Minister for Excise and Taxation be pleased to state-

a) the year-wise of bonus received by the State Government for supply of wheat, paddy or other foodgrains to the F.C.I or the other agency during the years 1970 to date; and

b) the amount of bonus distributed to the farmers selling the above said foodgrains of from where the same were procure during the above said period?

Excise and Taxation Minister (Sh. Shyam chand)

A Statement is laid on the Table of the House.

Only an amount of Rs. 4359+671/-out of the bonus on wheat received during the year 1973-74 was distributed in the from of coupons to the farmers selling the wheat to the procuring agencies. The coupons were issued on applications to the farmers for obtaining the fertilizer from the Cooperative Socities at subsidezed rates. In subsquent year, the money earned on bonus was to be utilized for State Development Schemes, primarily in agriculture and irrigation sectors.

Statement

(a)Figures in lacs of rupees

| Financial year | Wheat | Rice | Paddy | Total |
|---|---|---|---|---|
| 1970-71 | | 220.62 | | 220.62 |
| 1971-72 | | 144.30 | | 144.30 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1972-73 | | 157.50 | | 157.50 |
| 1973-74 | 103.67 | 197.76 | | 301.43 |
| 1974-75 | | 189.51 | | 189.51 |
| 1975-76 | 89.09 | 154.54 | 87.28 | 330.45 |
| 1976.77 (upto 2/77 | 374.63 | 416.70 | 170.04 | 961.37 |

**चौधरी रिजक रामः** स्पीकर साहब, अभी मंत्री महोदय ने अपने जवाब में जो स्टेटमेंट सप्लाई की हैं उसमे कहा हैं कि 1973–74 में 4359671 की रा ि ा किसानों में तकसीम की गयी लेकिन बाकी का बोनस का जो रूपया था वह किसानो को क्यों नही बांटा गया हैं, इसके कारण बताने का मंत्री महोदय कश्ट करेंगे?

**Sh. Shyam Chand:** Mr. Speaker, Sir, I have already stated in my reply that the money was utilized for State Development Schemes, Primarily in agriultural and irrigation sectors and it was a valid charge.

**चौधरी रिजक रामः** मिनिस्टर साहब ने अपनी स्टेटेमेंट में दिया हैं that in the subesquent years the money earned by bonus was to be utilized for State developments Schemes. 1973-74 के बारे में कुछ नहीं लिखा कि वह रूपया भी तकसीम हुआ कि नहीं, जरा अपनी स्टेटमेंट मुलाहजा फरमा लें।

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, हमने ऐप्लीके ानज मंगायी थी। हम एक–एक महीनें की लगातार 6 महीने तक डेट एक्सटेन्ड करते रहे मगर farmers did not come forward to utilize that shceme and the money was utillized for developmental schemes.

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** किसान तो हिसाब किताब नहीं दे पा रहे होते हैं क्योकि किसी के पास रसीद नही होगी, र ाीद हो तो भाायद इतना थोड़ा बनता होगा कि वह न कर सकें, पर इस सरकार का भी तो कर्तव्य था कि वह सारा हिसाब किताब बनाकर किसानों को चिटिठयां भेजती कि आप आकर पैसा ले लो, क्या मंत्री महोदय इस पर विचार कर यह बतलाना चाहेंगे कि वह देना चाहते है कि नहीं, देना चाहते हैं तो कब तक देना चाहते हैं?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब मैने बताया कि य तो हम उनको फीड और सीड पर सबसिडी दे सकते हैं, अगर कोई नहीं आता तो हम इरीगे ान और डिवैल्पमैंट के कामो के ऊपर पैसा खर्च कर सकते हैं।

**चौधरी रिजक रामः** स्पीकर साहब, अभी मिनिस्टर साहब ने बताया था कि 1973–74 में 43 लाख रूपया किसानों को दिया। 1970–71 में 220 लाख, 1971–72 में 144 लाख और 1972–73 में 157 लाख रूपया बोनस के रूप में मिलां इसके बारे में सरकार

यह सूचना देने की कृपा करेंगी कि यह रूपया तकसीम हुआ कि नहीं?

**श्री भयाम चन्दः** मैंने बताया कि हमने नहरों को पक्का किया है। चौधरी रिजक राम अभी मेंरे साथ लौबी में बात कर रहे थे। इनकी सोनीपत तहसील में जो दिल्ली ब्रांच हैं उनकी लाइनिंग का काम हुआ हैं, उन पर कितने रूपये खर्च हुये हैं। । हांसी ब्रांच हैं, बुटाना ब्रांच हैं दूसरे हमने ट्यूबवैलज के एनाराइजे ान के लिये जो पैसा यूज किया हैं वह मनी हमने वहां पर ही यूटीलाइज की हैं।

**चौधरी हरस्वरूप बूराः** क्या मंत्री महोदय यह बतायेंगे कि जो रसीदों का जिकर किया गया हैं, वह रसीदें प्रत्येक फार्मर को मिली हैं?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, वह तो उस किसान की ड्यूटी थी कि उसने जिस एजेन्सी को गेहूं बेचा हैं, उस से रसीद लेता।

**चौधरी रिजक रामः** अभी–अभी मंत्री महोदय ने फरमाया कि नहरें पक्की करने के लिये वह रूपया किया गया हैं और यह जो रकम हैं वह 13–14 करोड़ रूपये की बनती हैं। 131415 करोड़ रूपया जो किसानों को मिलना चाहिये था, वह देने की बजाय नहरों पर खर्चा किया गया और भालोट दिल्ली ब्रांच को पक्का करने के लिये दिल्ली सरकार से पैसा मिला हैं और इसके

इलावा इन नहरों को पक्का करने के लिये सन 1958 से सरकार बैटरमेन्ट लैवी वसूल कर रही हैं यह जो रूपया दूसरी तरफ डायवर्ट किया उसको किसानों में तकसीम करने पर सरकार विचार करेंगी?

**मुख्य मंत्री श्री बनारसी दास गुप्ताः** यह ठीक बात हैं कि बोनस में जितना रूपया मिला वह सीधे तौर पर डिस्ट्रीब्यूट किया गया, फिगर्ज भी मेरे साथी ने बतलाया हैं लेकिन बाकी जितना पैसा हमें मिला हैं वह किसान के हित में खर्च किया गया हैं इसके बारे में अगर मेरे साथी जानना चाहें तो पूरे आंकड़े और पूरी सूचनांए उनको उपलब्ध करायी जा सकती हैं इसके अलावा जहां तक दिल्ली डिस्ट्रीब्यूटरी को पक्का करने का सवाल हैं या किसी और चैनल को पक्का करने की बात हैं वह प्रौसैस अभी जारी हैं, कोई तारीख की बात नहीं हैं कि कब की। दिल्ली टेल डिस्ट्रीब्यूटरी का काम समाप्त हो चुका हैं दूसरी नहरों को पक्का करने का काम चल रहा हैं और भी अनेक प्रकार के ऐसे काम हैं किसानो के हित में, जो सरकार कर रही हैं और बैटरमेंट लेवी वगैरह लगाकर भी और बहुत सारा खर्चा किसान के हित में किया जाता हैं जिस खर्च में इस बोनस की रकम का भी इस्तेमाल होता हैं।

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, 1976–77 में (2/77 तक) 9 करोड़ 61 लाख रूपया हमें बोनस का मिला जिसमें 27 लाख रूपया हम पहले फामर्ज को दे भी चुके हैं मैं अपने हाउस

की जानकारी के लिये इतना बताना चाहूंगा की पिछले तीन सालों में जो भारत सरकार ने वीट की कीमत फिक्स की हैं उससे ज्यादा हमने फार्मर्ज को दिलाया है। बेगमी की जब 76 रूपये क्विंटल कीमत फिक्स की गयी थी तो वह भी 88 रूपये पर क्विटल तक बिका। बासमती की कीमत 85 रूपये फिक्स की गयी थी मगर तब 112 रूपये तक बिका और इसमें पहले बेगमी जो सब से लोस्ट क्वालिटी में समझी जाती हैं वह यहां पर 94 रूपये में बिका by manipulation of price mechan m.

**चौधरी भजन लालः** अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्य मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं जैसे उन्होंनें कहा कि जो बोनस का पैसा था वह किसानों के हित के लिये खर्च कर दिया गया है तो जो किसान को आबियाना और बैटरमैंट देना पड़ता हैं क्या उसमें यह रकम काट दी जाएगी?

**श्री बनारसी दास गुप्ताः** अध्यक्ष महोदय, जैसे अभी मैंने अर्ज किया कि आबियाना और बैटरमेंट लैवी यह सब मिला कर और बोनस का जितना रूपया मिलता हैं उसको भी मिला कर जितना पैसा बनता हैं उससे भी ज्यादा खर्च किया जाता हैं इसलिये काटने का प्र न ही पैदा नही होता।

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** मन्त्री महोदय से बोनस के बारे में सवाल पूछा गया था लेकिन उन्होनें दूसरी बात ही बता दी। मैं उनसे यह जानना चाहूंगा कि बोनस रूपया जो सैंट्रल सरकार से मिला हैं वह उन्हीं किसानो के लिये खर्च होना चाहिये जिनसे

प्राक्योंरमैंट की गई हैं। यह जो पक्की नहर बनाई यह तो दूसरे इलाकों में जाएगी और उन किसानो को इससे कुछ नहीं मिलेगा उन किसानों का अबियाना अढ़ाई गुना कर दिया गया और खाद की कीमतें भी बढ़ा दी.....

**Mr. Speaker:** Order please. No arguments.

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** मै यह पूछना चाहता हूं कि जिन किसानों से गेहूं और चावल लिया गया हैं उनको क्या सहूलियत दी गई?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, बोनस इसलिये दिया जाता हैं कि भाायद किसान को कीमत कम न मिली हो लेकिन सबसे ज्यादा प्राइम हरियाणा के फार्मर को मिली हैं। गवर्नमैंट आफ इंडिया का यह फैसला है कि बोनस का पैसा डिवैल्पमैंट के काम पर भी खर्चा किया जा सकता हैं।

**चौधरी राम लाल वधवाः** स्पीकर साहब, मैं मंत्री महोदय से यह जानना चहता हूं कि जिन लोगों ने फसल बेची थी और उसके बदले में उन्ही को बोनस मिलना चाहिये था तो बोनस न मिलने की वजह से उनको जो नुकसान हुआ क्या सरकार उसको पूरा करने के लिये सोचेगी?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, मेरे भाई समझते नही हैं मैंने अभी बताया हैं कि बोनस का जो पैसा हैं वह यह तो किसान को दिया जाएगा या एग्रीकल्चर और इरीगे ान की स्कीमों पर

यूटिलाइज करेंगे। अगर वह फामर्ज को नहीं मिला हैं तो वह एग्रीकल्चर की डिवेल्पमेंट पर खर्च किया हैं।

**चौधरी राम लाल वधवाः** स्पीकर साहब, यह किसानों के साथ डिसक्रिमे ान हैं। मैं मंत्री महोदय को स्पश्ट करना चाहता हूं कि इन्होंनें जो डिवेल्पमेंट पर खर्च किया उसका किसी खास जगह पर जाकर किसान को फायदा हुआ लेकिन सारे हरियाणा में जो अनाज बिका बोनस उन सब को मिलना चाहिये। जिनको कोई फायदा नहीं हुआ उन बेचारों का क्या दोश हैं?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, हम किसी से डिसक्रिमिने ान नहीं करते। हम तो चाहते हैं कि हरियाणा के हर फार्मर को फायदा पहूचें।

**चौधरी रिजक रामः** अभी मन्त्री महोदय ने बताया कि हरियाणा के किसानो को प्रैसक्राइड कीमतों से ज्यादा कीमतें मिली हैं। मन्त्री महोदय ने बासमती चावल का भी जिक्र किया हैं। मन्त्री महोदय को पता हैं कि उन्होंनें बासमती चावल कीमत पर खरीद कर फूड कार्पोरे ान को मुनाफे पर बेचा?

**श्री भयाम चन्दः** हमने 275 रूपये क्विंटल फूड कार्पोरे ान को चावल दिया हैं और मैं समझता हूं कि इसमें कोई फायदे वाली बात नहीं हैं और मेरा ख्याल हैं कि 275 रूपये में स्टेट गवर्नमैंट के वेयर हाउसिंग के चार्जिज ही मीट हुए हैं।

**चौधरी रिजक रामः** स्पीकर साहब, मन्त्री महोदय बताएंगे कि सरकार ने चावल प्रोक्योर किस रेट पर किया और उनको मालूम हैं कि फुड कार्पोरे ान ने वही बासमती चावल 11 रूपये के हिसाब से अरब कन्ट्रीज को भेजा हैं?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, यह बात गल्त हैं कि 11 रूपये के हिसाब से बेचा हैं। उन्होंनें 600 या 595 रूपये क्विंटल के हिसाब से बेचा हैं और इसमें सब चार्जिज भाामिल हैं। हमने उनको उस समय 350 रूपये क्विंटल दिया था और अब 275 रूपये पर दिया हैं।

**चौधरी राम लाल वधवाः** क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि सरकार ने बासमती किस भाव से खरीदी थी?

**श्री भयाम चन्दः** इसके लिये सैपरेट नोटिस दें।

**चौधरी रिजक रामः** अभी मंत्री महोदय बता रहे थे कि किसान को प्रैसक्राइबड कीमत से ज्यादा कीमत मिली हैं और जब हम पूछते हैं कि किस कीमत पर खरीदा तो कहते हैं कि सैपरेट नोटिस दो। तो ये कैसे कह सकते हैं कि उनको ज्यादा कीमत मिली जबकि इनको यही नहीं पता कि इन्होंनें खरीदी किस भाव पर?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, डिफरेंट मंडी में डिफरेंट प्राइस पर पैडी हैं अगर आनरेबल मैंबर यह जानना चाहते हैं तो सैपरेट नोटिस दे दें हम बता दैंगे।

**चौधरी रिजक रामः** अभी मन्त्री महोदय ने बताया कि हरियाणा के किसानों को दूसरी स्टेटृस के किसानों से अनाज की कीमत ज्यादा मिली हैं इसलिये जो बोनस मिला उसको डिवेल्पमेंट के काम में लगाया। मैं जानना चाहूंगा कि क्या इनको इस बात का इलम हैं कि पंजाब में भी किसानों को वही कीमत मिली और इसके आलाव पंजाब सरकार ने न सिर्फ वह बोनस किसानों को तकसीम किया बल्कि अपने पास से भी उतनी रकम मिला कर किसानों को दी?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि 1974 में पंजाब में 105 रूपयें गेहूं की कीमत एक पैसा भी ज्यादा नहीं थी जबकि हरियाणा में इसका भाव 130–135 रूपये क्विंटल था। पैंडी को भी जो कीमत गवर्नमैंट आफ इंडिया ने फिक्स की उससे एक पैसा भी ज्यादा पर नहीं बिकी जहां हमारे हरियाणा में 15 रूपये क्विंटल का हर किसान को फायदा हुआ।

**चौधरी ि िव राम वर्माः** अध्यक्ष महोदय, मैं मन्त्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि जिन लोगों से इन्होंनें अनाज खरीदा उनको क्या आर्कशण दिया?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, यह आर्कशण कम हैं कि हमने एग्रीकल्चर प्रोडक् ान को बढ़ाने के लिये मैकसीमम फैसिलिटीज दी हैं।

**चौधरी रिजक रामः** अभी मन्त्री महोदय ने बताया कि पंजाब में 105/– कि भाव से ज्यादा गेहूं नहीं बिका और हरियाणा में 130–135 रूपये के भाव से बिका तो क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि जिन सरकारी एजेन्सियों ने प्रोक्योरमेंट की थी क्या उन्होंनें कहीं पर 105 रूपये से ज्यादा प्रोक्योर किया हैं?

**श्री भयाम चन्दः** मैं 1974 की बात कर रहा हूं जिसके बारे में चौधरी रिजक राम जी ने सवाल दिया हैं। 1974 में मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि 130 रूपये तक हरियाणा के फार्मर का गेहूं बिका हैं।

**चौधरी रिजक रामः** मैं तो यह पूछता हूं कि किस एजेंसी ने लिया हैं?

**श्री भयाम चन्दः** हेफैड ने लिया है और फूड एंड सप्लाई डिपार्टमैंट ने लिया हैं।

**चौधरी रिजक रामः** क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि किस भाव पर लिया हैं?

**श्री भयाम चन्दः** 1974 में डिफरेंट पालिसी थी। उस समय 50 प्रति ात ओपन सेल थी और 50 प्रति ात प्रोक्योरमेंट थी। उसमें फुड एंड सप्लाई डिपार्टमैंट ने और हेफैड ने भी 130 और 135 रूपये के हिसाब से गेहूं खरीदी।

**चौधरी पीर सिंहः** स्पीकर साहब, मन्त्री महोदय ने चावलो का भाव बताया हैं कि अलग–अलग मण्डियों से अलग–अलग भाव पर खरीदा गया हैं। क्या मन्त्री महोदय किसी भी मंडी के भाव का पता हैं कि किस भाव पर खरीदा हैं?

**श्री भयाम चन्दः** तीन साल की बात हैं, अलग से नोटिस दें, जवाब दें दूगां।

**चौधरी रिजक रामः** मन्त्री महोदय ने बताया कि 1974 में 50 परसैंट ओपन सेल होती थी और 50 परसेन्ट सरकार प्रोक्योर करती थी। बाकी सालों में हरियाणा सरकार खुद परचेज करती रही हैं, किसान से डायरैक्टली खरीदती रही हैं। क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि जो गवर्नमैंट के प्रस्काइब्ड के रैट थे उनके मुताबिक कितना अनाज खरीदा हैं?

**श्री भयाम चन्दः** स्पीकर साहब, चौधरी रिजक राम ने एक बार प्राइवेट तौर पर खुद एडमिट किया था कि अगर हरियाणा सरकार, लास्ट ईयर मण्डियों में खरीदने के लिए न आती तो गेहूं की कीमत 80–85 रूपये फ्री क्विंटल से ज्यादा न होती। चौधरी रिजक राम ने बताया था कि अगर हम दूसरी स्टेट से अनाज आना बन्द न करते तो भाव बहुत कम होता, बहुत पुलिस लगानी पड़ी क्योंकि बाहर से हरियाणा में गेहूं आता था।

**चौधरी भजन लालः** बोनस किसान को मिलना चाहिये जिसने गेहूं और चावल के लिए भाव की खाद डाली हो, सरकार

को पहले इस बात की तसल्ली कर लेनी चाहिए कि जिसने मंहगी खाद डाली हैं। गवर्नमैंट आफ इंडिया से जो बोनस मिला हैं उसका फायदा किसानों को नहीं मिला हैं जिन्होंनें मंहगी खाद और पानी डालकर अनाज पैदा किया है। क्या इस बढ़े हुए वाटर रेट को कम करके उनको फायदा देंगे?

**श्री भयाम चन्दः** जो बोनस की स्कीम हैं, उसी में से फार्मज को पैसा मिलेगा। इस मे स्टेट गवर्नमैट की डिसक्रिए ान हैं कि एग्रीकल्चर प्रोडक ान को बूस्ट करने के लिए इस को यूटलिाइज कर सकते हैं। But my hon. friend did not try to understand it.

**चौधरी रिजक रामः** मन्त्री महोदय ने मेरे सवाल के जवाब देने की बजाए, उसका जिक्र किया जो कुछ मैंने उन से कहा कि अगर सरकार मार्किट में खरीदने नहीं आती तो भाव 80–85 रूपये फी क्विटल भी न रहते। यह ऐसा सवाल हैं जिसके बारे मे बहस नहीं हो सकती.....

**श्री अध्यक्षः** यह बातें तो गवर्नर एड्रैस की बहस पर कर सकते है।

**चौधरी रिजक रामः** मैं कहना चाहता हूं कि 105 रूपये फी क्विटल के भाव से गेहूं खरीदते रहे जबकि महाराश्ट्र और गुजरात में अढ़ाई सौ रूपये फी क्विटल का भाव था। सरकार होल सेल में खुद खरीदती हैं। क्या मन्त्री महोदय बताएंगे कि गेहूं और

पैडी के लिए कोई परस्काइब्ड रेट्स थे, क्या सरकार ने परस्काइव्ड रेट पर गेंहूं खरीदा हैं या नहीं?

**श्री भयाम चन्दः** पैडी हमे ाा परस्काइब्ड रेट से ज्यादा पर खरीदी हैं और गेहूं 105 रूपये के भाव से खरीदा हैं।

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** जैसा कि मंत्री महोदय ने बताया था कि 1974 में गेहूं 130 या 135 रूपये के भाव से बिका और 31 मई, 1974 को खाद के भाव दूगने हो गए थे। दुगने भाव होने के बाद अगले साल 1975 में वही गेहूं का भाव से लिया गया। क्या मंत्री महोदय यह बतायेंगे कि क्या यह किसान के इन्ट्रैस्ट में भाामिल हैं कि जब यूरिया खाद का खट्टा 53 रूपये में डालते थे तो गेहूं 130 भाव लेते थे और जब वही कट्टा यूरिया खाद का 101 रूपये का हो गया तो भी किसान को गेहूं का भाव 105 रूपये हि मिला?

**श्री भयाम चन्दः** फर्टिलाइजर के भाव दो बार कम किए गए हैं। अब जनता पार्टी की हकूमत आई हैं आनरेबल मेम्बर उन को कहें कि 10 रूपये का भाव कर दें।

**कृशि मंत्री (कर्नल महा सिंह):** अध्यक्ष महोदय, कृशि मंत्री होने के नाते मुझे बीच में इन्टरफीयर करना पड़ रहा हैं। हमें जो बोनस मिला हैं,उसकी काफी रा ि ा फर्टिलाईजर के लिए गयी हैं। हमने फासफेट और पौटा ा पर सबसिडी दी हैं और वह खाद

कुरूक्षेत्र और करनाल के जिलों में गई हैं, दूसरे जिलों में नहीं गई.....

**एक आवाजः** क्या हिसार जिले में नही गई हैं?

**कर्नल महा सिंहः** हिसार में भी गई हैं लेकिन ज्यादातर इन दो जिलो में गई हैं। (व्यवधान) हम पैडी सीड पर सबसिडी देते हैं। इतनी ज्यादा दे रहे हैं कि जिस भाव से हम पैडी खरीदते हैं उसके आधे भाव पर पैडी सीड देते है। इसी तरह गेहूं पर सबसिडी देते हैं, उसी तरह ग्राम्ज पर देते हैं। एरियल सप्रे करवाया हैं ऐसे एरियाज में जहां लोग पैस्टीसाइड नहीं खरीद सकते थे। यह भी इसलिये बोनस के पैसे में से खर्च किया गया हैं। आगे के लिए मैं कृशि मंत्री के तौर पर, मुख्य मंत्री जी से दरख्वास्त करने वाला हूं कि इसी बोनस में से ज्यादा से ज्यादा पैसा किसानों की बेहतरी पर खर्च किया जाए। पूंजपतियों पर नहीं, मेरे साथी सुरजीतसिंह जैसे पूजीपतियों पर नहीं खर्च करना बल्कि गरीब किसानों पर किया जाना हैं।

**श्री ओम प्रका ा गर्गः** स्पीकर साहब, मैं आपकी मारफत मुख्यमंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि उस वक्त खाद्य मंन्त्री कौन थे?

कोई जवाब नहीं दिया गया।

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** क्या कृशि मंत्री महोदय बतायेंगे कि खाद का भाव 53 से बढ़कर 104 रूपये कट्टा हो

जाने से और बाद में 5 या 10 रूपये उसकी कीमत कम कर देने से यानी 5 या 10 रूपये कम खरीदने को सबसिडी समझा जाए जबकि लोग 87 या 90 रूपये में पहले से ही खरीदते हैं?

**श्री बनारसी दास गुप्तः** अध्यक्ष महोदय, हरियाणा सरकार ने फर्टेलाइजर में सबसिडी दी है, अगर कीमत बढ़े तो केन्द्रीय सरकार की तरफ से बढ़ी, कारखानों की तरफ से बढ़ी। हमने जिस कीमत पर खाद खरीदी उसी कीमत में भी सबसिडी दी और उस बोनस की रकम में से दी। यह सबसिडी फर्टिलाइजर में दी हैं, बीज में दी हैं जिप्सम में दी हैं और यह डायरैक्ट इन्सैक्टिव किसान को मिला हैं।

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि खाद की जो कीमत थी उसको दुगनी करने के बाद थोड़ी सी सबसिडी दी हैं....

**Mr. Speaker:** Order please. It has been replied.

**बनारसी दास गुप्तः** अध्यक्ष महोदय, हमारे अपने रिकार्ड भाो करते हैं कि आये साल हमने गेहूं और पैडी की कीमत बढ़ाने की डिमांड हैं और इसी साल भी करेंगें । 2 तारीख को मुझे दिल्ली बुलाया गया है। जो आल इंडिया की पालिसी होगी, केन्द्रीय सरकार को फैसला करेगी उस पर हम अमल करेंगे, उस पर चलेंगे।

**कर्नल महा सिंहः** मैं भी मुख्य मंत्री महोय के साथ था, हमने काफी ज्यादा कीमत मांगी थी लेकिन भारत सरकार ने खाली किसान का ही ख्याल नहीं रखना हैं, उसको कंज्यूमर को भी देखना हैं, मजदूर का भी ख्याल रखना हैं और जो दूसरे प्रोफै ान में हैं उनका भी ध्यान रखना हैं। यह निर्णय भारत सरकार ने किया हैं। भारत सरकार से हरियाणा सरकार ने बहुत अच्छी कीमत मांगी थी। अब मैं आ ाा करता हूं कि मेरे साथी भारत सरकार ज्यादा से ज्यादा कीमत मांगेंगे।

**चौधरी रिजक रामः** अध्यक्ष महोदय इस बात का जवाब दे दिया गया हैं। मैं हैरान हूं कि मेरे साथी इस बात को क्यों बार–बार रिपीट कर रहे हैं। हमने सबसिडी दी हैं फर्टिलाइजर में सबसिडी दी हैं, बीज में सबसिडी दी हैं, कुछ और काम किए हैं किसान के लिए जिसमें उसका सीधा हित हुआ हैं। फिर ये कैसे कहते हैं कि सरकार हजम कर गई। अगर कर गई तो सरकार हजम करके कहां ले गई। अगर सरकार अपनी जेब में डाल कर ले गई तो इसमें सामने वाला भी हिस्सेदार हैं?

**Employes in Each Depot of Haryana Roadways**

***1755. Ch. Ram Lal Wadhwa:** Will the Minister for Transport be pleased to state-

a) the category-wise number of employess working in each depot of Haryana Roadways as no 31-12-1974;

b) the category-wise number of employess appointed in each depot of Haryana Roadways during the period 1-1-75 to date; and

c) the category-wise criteria/system fixed. adopted in the matter of recruitment?

**Transport Minister (Sh. K.L. Poswal):**

(a) and (b) Statements are laid on the Table of the House.

(c) All the recruitments in Haryana Roadways are made according to the Ministerial and non-Ministerial Draft Rules through Public Service Commission/Subordinate Service Selection Board/Employement Exchange.

| post | Chandigarth | Ambala | Hisar | Karnal | Bhiwani | Kaitha | Gurgaon | Rohtak | Rewa |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| endet | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Senior | 1 | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| visor | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| nt | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| uditor | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| | 3 | 5 | 4 | 3 | 1 | 3 | 4 | 3 | 1 |
| uditor | 2 | 3 | 3 | 2 | 2 | 2 | 3 | 3 | 2 |
| npher | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| pist | 3 | 2 | 2 | 2 | 1 | 1 | 3 | 4 | 1 |
| | 2 | | 2 | | | | | 1 | |
| | 1 | 2 | 4 | 1 | 2 | 1 | | 2 | 2 |
| nt | 4 | 3 | 2 | 2 | | | | 3 | 2 |
| | 3 | 6 | 5 | 8 | 2 | 7 | 6 | 5 | 2 |
| eeper | 2 | 3 | 3 | 2 | 1 | 1 | 3 | 3 | 1 |
| | 26 | 26 | 354 | 28 | 23 | 25 | 31 | 37 | 25 |
| | 1 | | | | | 1 | | 1 | |
| | 2 | 1 | 5 | 1 | 2 | 1 | 10 | 3 | 3 |
| ar | 6 | 14 | 20 | 11 | 6 | 4 | 11 | 10 | 2 |
| | | 8 | 5 | 5 | 4 | 4 | 7 | 9 | 5 |
| | 3 | 12 | 25 | 12 | 7 | 4 | 14 | 17 | 8 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Officer | 1 | | | | | | | 1 | |
| or | 2 | 5 | 6 | 2 | 4 | 1 | 6 | 4 | 2 |
| perctor | 1 | 3 | 4 | 2 | 1 | 2 | 3 | 2 | 1 |
| | 25 | 33 | 34 | 22 | 16 | 22 | 31 | 35 | 20 |
| Cleerk | 2 | 6 | 2 | 3 | 1 | | | | |
| | 2 | 4 | 8 | 4 | 2 | 4 | 6 | 4 | 2 |
| Purchase | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| Store | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| eper | 2 | 2 | 6 | 4 | 3 | 2 | 5 | 4 | 3 |
| | 1 | | 1 | | 1 | 1 | 1 | | 1 |
| Store | 2 | 5 | 2 | 4 | 2 | 2 | 1 | 2 | 1 |
| | 216 | 305 | 345 | 227 | 143 | 194 | 266 | 292 | 179 |
| ter | 2 | 4 | 4 | 2 | 3 | 2 | 5 | | 2 |
| or | 216 | 307 | 351 | 266 | 142 | 183 | 266 | 289 | 185 |
| nductor | 75 | 71 | 74 | 42 | 43 | 20 | 73 | 95 | 19 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 3 | 1 | 1 |
| Station | 4 | 2 | 4 | 2 | 3 | 2 | 5 | 3 | 2 |
| chanic | 2 | 4 | 6 | 2 | 3 | 2 | 6 | 6 | 3 |
| ct. | 2 | | 1 | 1 | 1 | | 2 | 1 | 1 |
| eman | 1 | | 1 | 1 | | | | | |
| | 25 | 46 | 38 | 25 | 13 | 23 | 36 | 41 | 21 |
| | 1 | 1 | 1 | 2 | 1 | 1 | | 1 | |
| | 1 | 2 | 1 | | 1 | 2 | 3 | 3 | |
| | 20 | 26 | 38 | 46 | 24 | 21 | 32 | 29 | 13 |
| r | 8 | 1 | 7 | 9 | 4 | 8 | 6 | 9 | 4 |
| penter | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 |
| an | 12 | 16 | 10 | 12 | 5 | 8 | 13 | 18 | 6 |
| r | 2 | 4 | 3 | 2 | 2 | 3 | 4 | 2 | 1 |
| | 2 | 4 | 3 | | 1 | 2 | 3 | 1 | 2 |
| cksmit | 8 | 5 | 7 | 6 | 3 | 6 | 6 | 10 | 3 |
| cksmit | 1 | 1 | 1 | 1 | | | 1 | 1 | 1 |
| t | 1 | 1 | 1 | 1 | 2 | 4 | 1 | 2 | 1 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 3 | 2 | 2 | 1 | 2 | 2 | 2 | 1 |
| | 4 | 5 | 4 | | 2 | 2 | 4 | 1 | 2 |
| iter | 1 | 1 | 1 | 1 | | | 1 | 1 | |
| | 4 | 2 | 8 | 6 | 3 | 8 | 6 | 19 | 36 |
| itter | 30 | 48 | 31 | 24 | 20 | 20 | 30 | 30 | 17 |
| r | 1 | 1 | | 3 | 2 | 2 | 5 | 5 | 3 |
| Welder | 1 | | 4 | | 1 | 5 | 3 | 2 | 2 |
| Elect. | 6 | | 7 | 5 | 5 | 5 | 8 | 4 | 5 |
| Paniter | 1 | | 5 | | 1 | 2 | 2 | 3 | 2 |
| | 3 | 4 | 7 | | 2 | 2 | 3 | 10 | 5 |
| | 39 | | 74 | 26 | 23 | 19 | 24 | 13 | 26 |
| Boy | 2 | | 10 | | 8 | | 3 | 5 | |
| | 4 | 4 | 13 | 5 | 4 | 8 | 9 | 6 | 4 |
| or | 1 | | | | | | | | |
| onizer | 1 | | | | | | | | |
| olster | 1 | | 1 | | | 2 | | 2 | 1 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| epair | 1 | 1 | 4 | 1 | | 3 | 2 | 5 | |
| ksmith | | 3 | 2 | 5 | 2 | 4 | 7 | 6 | 2 |
| der | | 1 | 1 | 1 | | | | 1 | |
| | | | | 18 | | 20 | 30 | 36 | 14 |
| rrier | | 4 | 3 | 2 | 1 | 1 | | 1 | 1 |
| ttendant | | | | 1 | | | 1 | | |
| | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 |
| | | 1 | 5 | 1 | 2 | | 2 | 1 | 1 |
| nt | | 1 | | 2 | | | | | |
| hier | | | | | | | | | |
| m-Store | | | | 2 | | | | | |
| lerk | | | | 2 | | | | | |
| | | | | 8 | | | | | |
| | | | | 2 | | | | | |
| vai | | | | 2 | | | | | |
| | | | | 2 | | | | | |
| ok | | | | 2 | | | | | |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 2 | | | | | |
| | | | | 4 | | | | | |
| ar-cum- | | | | 2 | | | | | |
| Driver | | 1 | | | 1 | 1 | 1 | | |
| r | | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 | 1 | |
| | | | | | | | | | |
| Clerk | | | | | | | | 5 | |
| n | | | 1 | | | | 2 | | 1 |
| | | | | | | | | 1 | |
| ner | | | | | | | | 1 | 1 |
| Incharge | | | | | | | | 2 | |
| tendant | | | | | | | | 1 | |
| p Clerk | | | 1 | | | | | | |
| nspector | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 |
| angaer | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 |
| anager | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | | 1 | |
| anger | 1 | 1 | 1 | | 1 | | 1 | 1 | |
| Purchase | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | | 1 | |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Accounts | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 | 1 |

**ANNEXURE II**

**Category-wise of employees appointed in each depot of Haryana Roadways during the period from 1-1-1975**

| post | Chandigarth | Ambala | Hisar | Karnal | Bhiwani | Kaitha | Gurgaon | Rohtak | Rewar |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| endet | | | | | | | | | |
| uditor | | | | | | | | | |
| uditor | 2 | | | | | 1 | 1 | | |
| hpher | | | | | | 1 | | | |
| pist | | | 2 | 1 | | 1 | | | 2 |
| | | 5 | | | | | | | |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| at | | 1 | | | | | | | |
| ashier | | | | | | | | | |
| keeper | | | | | | | | | |
| | 9 | 4 | 4 | 7 | 4 | 8 | 8 | 1 | 2 |
| | 3 | | 1 | 3 | | 4 | | | 1 |
| ar | | | 6 | | | | 3 | 5 | 2 |
| | 2 | | 1 | | | 1 | 1 | | |
| | | | 8 | | 1 | | | | |
| or | | | | | | 1 | | | |
| r | 3 | 1 | 2 | 2 | | | 5 | | 1 |
| | 1 | | 2 | | | | 2 | 1 | |
| re | 1 | 1 | | | | | | | |
| | 22 | 19 | 76 | 56 | 57 | 52 | 70 | 34 | 27 |
| s | 19 | 63 | 150 | 135 | 68 | 17 | 91 | 55 | 128 |
| nducts | 23 | | | | | 47 | | 1 | |
| | 1 | | | | | | 1 | | |
| chanic | 1 | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ion | 1 | | | | | 2 | | | |
| erman | | | | | | 1 | | | |
| c | 4 | | | | | 3 | 4 | | |
| | | | | 1 | | | 1 | | |
| | 1 | | | | | | | | |
| | 6 | 1 | 3 | 1 | | 2 | 3 | | |
| er | 2 | | | 1 | | | 6 | | |
| rpenter | | | | | | 1 | | | |
| n | | | | 1 | | | | | |
| | 2 | | | | | | 1 | | |
| ith | | | | | | | | 4 | |
| Repair | | | | | | | | 1 | |
| | 2 | 1 | | 1 | | 1 | 2 | | 1 |
| ter | 33 | | 2 | 1 | | 2 | 1 | | |
| rpenter | | | 9 | 2 | | | 3 | | 1 |
| lder | | | 5 | 1 | | | | | |
| an | | | 6 | 3 | | 2 | 1 | | 1 |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ainter | | | 8 | 2 | | | 5 | | 1 |
| reman | | | 8 | 2 | | | 5 | | 1 |
| | | 44 | 38 | 31 | 16 | 4 | 14 | 8 | 5 |
| Boy | 3 | 3 | 4 | 1 | | 1 | | 3 | |
| y | 3 | 3 | 4 | 1 | | 1 | 4 | | |
| rer | | | 5 | | | | | | |
| ith | | | 5 | | | 1 | | | |
| lder | | | | | | | | | |
| arrier | | | | | | | 5 | | |
| | | | 1 | | | | | | |
| er | | | | | | | 1 | | |
| rner | | | 5 | | | | | | |
| | | | | | | | | | |
| Manager | 1 | | | | | | 1 | | |
| anager | | | | | | | | | |
| urchase | | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| s Office | | | | | | | | | |

**चौधरी रिजक राम जीः** क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि ये जो कैटेगरीवाइज पोस्टस हैं ये कुछ डिपोज पर खाली भी पड़ी हुई हैं।

**श्री के0 एल0 पोसवालः** इसके लिए सैपरेट नोटिस दे दें मैं पता कर दूंगा।

**चौधरी फूल चन्द्र मुंलानाः** क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि इन सब कैटेगरीज में जो पोस्टस रिजर्व की है वे पूरी हैं? अगर पूरी नहीं हैं तो क्या पूरी की जांएगी?

**श्री के0 एल0 पोसवालः** हम कोि ा ा करते हैं कि वे पूरी रहें। अगर इस तरह की कोई बात ये मेरे इल्म में लाएगे तो और ऐग्जिामिन करवा लूंगा।

**चौधरी पीर चन्द्रः** क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि सभी डिपुओं पर जो वर्तमान मुलाजिम हैं उसमें हरिजनों का कोटा पूरा हैं?

**श्री के0 एल0 पोसवालः** इसके लिए सैपरिट नोटिस दे दें क्योंकि यहां तो क्वै चन ही कुछ और हैं।

**चौधरी ि िव राम भार्माः** क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि पिछले दिनों जो 150 जो 150 बस कंडक्टर्ज की पोस्टस ऐडवरटाईज हुई थी, जिसके लिए 25000 दरखास्तें आई थी और 600 बस कडक्टर्ज की सिलैक ान हुई थी, उनकी जिलेवार ब्रेक–अप क्या हैं?

**Mr. Speaker:** It is not supplementary to this question.

**चौधरी राम लाल वधवाः** क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि सरकार ने रोडवेज में कोई डायरैक्ट टैम्पररी भर्ती भी की हुई हैं? अगर की हैं तो कितनी हैं।

**श्री के0 एल0 पोसवालः** जो भी भर्ती हमने की हैं वह ऐम्पालायमैंट ऐक्सचेंज के थ्रू ही हैं।

**चौधरी राम लाल वधवाः** कृपया यह बताएं की वह रैगुलर है या टैम्पररी हैं। अगर टैम्पररी है तो वह कितनी हैं?

**श्री के0 एल0 पोसवालः** क्राइटेरिया वहीं हैं।

**चौधरी राम लाल वधवाः** मैं तो यह जानना चाहता हूं कि वे कितने हैं?

**श्री के0 एल0 पोसवालः** इसके लिए आप सैपरिट नोटिस दीजिए।

**Mr. Speker:** The Question Hour is over.

## अताराकिंत प्र न एवं उत्तर

**Trips allowed to various Roadways**

**575.* Ch. Ram Lal Wadhwa:** Will the Minister for Transport be pleased to state the number of trips with mileage allowed by the Haryana Government in mutual agreements to the Roadways of the States of Jammu & Kashmir, Rajasthan, Punjab, Uttar Pradesh and Union Territory of Delhi for plying, Bus Services in the state of Haryana during the year 1975 and 1976, together with the date of such agreements, separately?

**श्री के0 एल0 पोसवालः** कथन सदन की मेज पर रखा जाता हैं।

**'कथन'**

वर्श 1975 तथा 1976 में दूसरे राज्यों के साथ किये गये परिवहन समझौते तथा उनके अन्तर्गत स्वीकृत वापसी चक्कर व दैनिक किलोमीटरेज प्रचलन का विवरण।

| क्र0 सं0 | समझौता कृत राज्यों के नाम | समझौता कि तिथि | वापसी चक्कर जो दूसरे राज्यों को हरियाणा में | दूसरे राज्यों को हरियाणा राज्य में | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | स्वीकृत हुए | दैनिक प्रचलन (किःमीः) | |
| 1 | हरियाणा–राजस्थान | 11–11–75 | 9 राजस्थान | 2076 | इसके अतिरिक्त दैनिक प्रचलन में समानता लाने के लिये राजस्थान ने अपना प्रचलन कुछ अर्न्तराज्य मार्गो पर से2714 कि0मी0 हरियाणा में घाटा लिया हैं |
| 2 | हरियाणा–उत्तर प्रदे ा | 32–24–/9/75 | 6 उत्तरप्रदे ा | 1724 | उत्तर प्रदे ा सरकार द्वारा इस परिवाहन समझौता को मान्यता नहीं दी गई। |
| 3 | हरियाणा–जम्मू–क मीर | 1–6–76 | | | |
| 4 | हरियाणा–दिल्ली | 24–10–75 | | | यह निर्णय हुआ हैं कि हरियाणा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | तथा देहली द्वारा जो बस का प्रचलन एक दूसरे राज्यों में किया जाता हैं वह 1:1:3 के अनुपातों से होना चाहिए और जब देहली प्र ाासन सभी अन्तर्राज्य मार्गो पर बस सेवा का राश्ट्रीयकरण कर लेगा तो यह अनुपात बढ़ कर 1:1:5 की होगी। |
| 5 | हरियाणा–पंजाब | 7–6–76 | 345 पंजाब | 20000 | यह निर्णय हुआ था कि अन्तर्राज्य मार्गो पर एक दूसरे राज्यों में 20000 कि0मी0 दैनिक प्रचलन के हिसाब से सेवा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | पुनः आरम्भ की जायेगी। |

**Remission of Imprisonment**

**576. Ch. Ram Lal Wadhwa:** Will the Chif Minister be pleased to state the Jailwise names of life imprisoned prisoners in the Jails of Haryana who have been granted remission in their sentences by the State Government during the years 1968-69 to 1976-77 todate, separately?

**परिवहन मंत्री श्री के0 एल0 पोसवालः** इस सम्बन्ध में जो सूचना मांगी गई, उसे एकत्रित करने पर जो समय तथा परिश्रम लगेगा वि ोश लाभ नहीं होगा।

Panches Removed from the Panchayats

589. Ch. Ram Lal Wadhwa: Will the Minister for Agriculture be pleased to state the number of punches removed from the Panchayats in the State on village Charges of corruption, misappropriation of funds and misconduct during the period from 1975-75 to 1976-77 todate by the Government together with the percentage of such panches in the State?

**कृशि मंत्री (कर्नल महा सिंह) :**

(क) 1975–76 8

(ख) 1976–77 आज तक 19

(ग) प्रति ात .099 प्रति ात

Crushing Capacity of the Cooperative Sugar Mils at Karnal and Sonepat.

590.Ch. Ram Lal Wadhwa: Will the Chief Minster be pleased To state:-

the present crushing capacity of sugarcane of the Cooperatve Sugar Mills at Karnal and Sonepat together with the production of sugar after the start of these Mills during the year 1976-77 to date separately:

whether there is any proposal under consideration of the Government to increase the crushing capacity on the Sugar Mills as referred to in part (a) above; and

if so, the steps, if any, proposed to be taken together with the details thereof?

**मुख्य मंत्री श्री बनारसी दास गुप्तः**

(ए)(I) प्रत्येक चीनी मिल की प्रतिदिन गन्ना पेलने की क्षमता 1250 टन हैं।

करनाल मिल सोनीपत मिल

(II) 28–2–1977 तक

(बी) नहीं जी।

(सी) नहीं जी।

ध्यानकर्शण सूचना

**चौधरी राम लाल वधवा:** स्पीकर साहब, 16—13—1977 को हिसार के एक गांव के पोलिंग बूथ पर फायरिंग हुई थी और तीन आदमी उसमें जख्मी हुए थे। मैंने उसके बारे में एक काल अटै ान नोटिस दिया था।

**श्री अध्यक्ष:** आर्डर प्लीज। उसका जवाब आपके पास पहुंचा गया होगा।

**चौधरी राम लाल वधवा:** स्पीकर साहब, इसके बारे में मेरी एक प्रार्थना हैं क्योंकि वह मुझे अभी मिला हैं।

**Mr. Speaker:** This has been disallowed.

**चौधरी राम लाल वधवा:** स्पीकर साहब, यह बड़ा इम्पौटैंट मैटर है क्योकि फायरिंग हुई हैं और उसमें तीन आदमी जख्मी हुए हैं?

Mr. Speaker: The motion has been disallowed. This had been agitated on floor of the House yesterday and the Hon. Minister has already replied that the matter is sub-judice. When I have disallowed the motion, how canot it be raised? It cannot be raised.

**चौधरी राम लाल वधवाः** स्पीकर साहब, उस पर कोई एक ान हुआ या नहीं हुआ, आदमी अरैस्ट हुए या नहीं हुए, यह बात यह हाउस जानना चाहता हूं क्योंकि यह बड़ी सीरियस घटना हैं जो इलैक ान के दिनों में घटी हैं।

**Mr. Speaker:** Order please.

**Transport Minister (Sh. K.L. Poswal):** Sir, I beg to move-

(10.00बजे) That the Assembley at its rising this day shall stand adjourned Sine-die.

**Mr. Speaker:** Motion moved-

That the Assembley at its rising this day shall stand adjourned Sine-die.

**Mr. Speker:** Question is-

That the Assembly at its rising this day shall stand adjourned Sine-die

The motion was carried

राज्यपाल के अभिभाशण पर चर्चा (पुनराम्भ) तथा धन्यवाद प्रस्ताव पर मतदान

**श्री ओम प्रका ा गर्ग (थानेसर):** आदरणीय स्पीकर साहब, मैं कल अपने हल्के और हरियाणा में डिवैल्पमैंट के बारे में कह रहा था। इसमें कोई भाक की बात नहीं हैं कि हरियाणा डिवैल्पमैंट हुई है। यह कोई दोहराने की बात नहीं हैं लेकिन मैं इतना जरूर अर्ज करना चाहता हूं कि मेरे हल्के में पिपली एक ऐसा गांव है। वह जी0 टी0 रोड़ पर हैं। वह गांव कसबे की भाक्ल में तबदील होता जा रहा हैं। मेरी गुजारि ा है कि उस कसबे में वाटर सप्लाई और सीवरेज का इन्तजाम होना जरूरी हैं। दूसरी मेरी दरखास्त यह हैं कि कुरूक्षेत्र और लाडवा के अन्दर वाटर सप्लाई और सीवरेज का काम जो जारी हैं उसे सम्बन्धित कुरूक्षेत्र और लाडवे के अन्दर वाटर सप्लाई और सीवरेज का काम जारी हैं उसे सम्बन्धित मंत्री महोदय जल्दी से जल्दी पूरा करवाने की कृपा करेंगे क्योंकि इससे हर आदमी को, हर मिडल तबके के भाई को लाभ मिलेगा। इसके अलावा, स्पीकर साहब, मैं आपकी मारफत यह भी अर्ज करना चाहता हूं कि मेरी कांस्टिचुएंसी के ज्योतिसर, उमरी मथाना और नवारसी आदि गांव में भी वाटर सप्लाई और सीवरेज स्कीम का होना जरूरी हैं।

अध्यक्ष महोदय मैं आपकी मारफत यह अर्ज करना चाहता हूं कि मार्किटिग बोर्ड हरियाणा में किया हैं वह किसी से भूला हुआ नहीं हैं। अगर आप हमारे लाडवा की मंडी और दूसरी जगह बनी हुई मंडियों को देखे तो दिल खु ा हो जाएगा। हमारी लाडवा की मंडी तो ऐसी है कि उसे फौरन कंटरी से आए हुए

भाइयों को भी दिखाया जाता हैं। इसके लिए तो मैं सम्बन्धित मंत्री महोदय का धन्यवाद करता हूं और साथ उनसे यह प्रार्थना करता हूं कि पिपली के अन्दर भी एक अच्छी मण्डी तामीर की जाए ताकि वहां के किसान और व्यापारी उसका पूरा पूरा फायदा उठा सकें।

स्पीकर साहब, मैं एक बात और अर्ज करना चाहता हूं। कालेजिज के बारे में एक यू0 जी0 सी0 बैठा थां। उसने यह फैसला दिया कि सन 1973 से पहले के जो कालेज हैं उनको ग्रांट मिलेगी लेकिन उसके बाद जो कालेज बने हैं उनको ग्रांट नहीं मिलेगी। यह फैसला सन 1973 से लागू होता हैं जबकि उसने यह फैसला मेरे ख्याल में सन 1975 में दिया लेकिन लागू कर दिया 1973 से जिन भाइयों ने कालेज सन 1973 के बाद बनाए हैं वे उन्हें आज चला नहीं सकते क्योंकि जनता कालेज की बिल्डिंग तामीर करने के लिए तो पैसा दे सकती हैं लेकिन उसके प्रबन्ध के लिए पैसा नही दे सकती। इसलिए स्पीकर साहब मैं आपकी मारफत मुख्य मंत्री महोदय जी से अर्ज करना चाहता हूं कि वे इस कार्य को पूरा करने की कोि ा ा करें।

स्पीकर साहब, मैं आपकी वसातत से यह अर्ज करना चाहता हूं कि हिन्दोस्तान के अन्दर जहां हरिजन भाई हैं, भाड्यल कास्टस के भाई हैं वहां बैकवर्ड क्लासिज के भाई भी बहुत ज्यादा तदाद में है। उनकी रिजर्वे ान की जो तादाद रखी हुई हैं वह

मेरे ख्याल में बहुत कम हैं। यह मेरे ख्यालानुसार उनकी जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए कोई दस परसैंट होनी चाहिए।

स्पीकर साहब, हरिजनों को जो सहूलियत गवर्नमैंट ने दी हैं वे किसी से भूली हुई नहीं हैं। हरिजन भाइयों को प्लाटस दिए गए हैं और उन प्लाटस के ऊपर कितनी ही जगह मकान भी बना कर दिए गए हैं और दिए जा रहे हैं। गवर्नमैंट ने यह भी वि वास दिलाया हैं और उसके लिए मैं गवर्नमैंट का धन्यवाद करता हूं कि जो भाई इस क्राइटेरिया में आते हैं और वे प्लाट्स मिलने से महरूम रह गये हैं उनको कन्सिडर किया जायेगा। इस बात के लिए मैं अफसरान को और गवर्नमैट को निवेदरन करता हूं कि वे अपने इस वायदे को पूरा करायें और इस बात की जांच भी करायें कि किन व्यक्तियों को अभी तक प्लाट्स नहीं मिले हैं। हम भी कोि ा ा करेगे और आप के नोटिस में लायेंगे कि किन–किन लोगों को अभी तक प्लाटस नहीं मिले हैं।

स्पीकर साहब, कुरूक्षेत्र एक नया जिला बना हैं। वहां पर मिनी सैक्रेरियट और अदालतें अभी अन्डश्र कन्सट्रक ान हैं। जब तक उनकी तामीरात पूरी नहीं होगी। तब तक कोटर्स उनमें नहीं जा सकती। यही जुडि ायल कम्पलैक्स की पोजी ान हैं। वह तो तकरीबन तैयार हो गया हैं लेकिन अन्दर ि ाफ्ट करने को अभी दिक्कत मालूम होती हैं। वहां पर जब तक रेजिडेन् ाल एकमोडे ान नहीं बनेगी तब तक वहा कोर्टस नहीं जा सकेंगी। सै ान जज साहब के हाउस की कन्सट्रक ान अभी भारू नहीं हुई

हैं। तो मैं आपसे अर्ज करना चाहता हूं कि वहां पर रेजिडेन्‍ ाल एकमोडे ान जल्दी से जल्दी बनायी जायें सभी एम्पालाइज के लिए बनायी जानी चाहिए चाहे वे बड़े हैं या छोटे हैं सब के लिए जरूरी हैं वरना एम्पलाइज की तन्खाह का एक तिहाई हिस्सा किराये में चला जाता हैं। वे बेचारे अराम से नहीं रह सकते।

दूसरे इंकमटैक्स को जो हमारा दफ्तर हैं वह अभी तक करनाल में ही चल रहा है। वह जिला स्तर का दफ्तर हैं। वह कुरूक्षेत्र प्रोपर के अन्दर आना चाहिए। उसमें जो भी मदद की आव यकता हो हम करने के लिए तैयार हैं।

लाडवा के अन्दर जो हमें बिजली मिलती हैं वह करनाल से मिलती हैं। पानीपत से करनाल और करनाल से इन्ददी और लाडवा को आती हैं। वह बिजली नहीं रहती। अगर हमें लाडवा को यमुनानगर की साइड से दे दी जाये तो उससे सहूलियत मिल जायेगी। मैं मुख्यमंत्री जी का बड़ा भाुक्रगुजार हूंगा कि हमें यमुनानगर साइड से बिजली मिल जाये तो हमें बड़ा फायदा हो जायेगा।

स्पीकर साहब, इसमें कोई भाक नहीं कि हरियाणा में जो सड़के का निर्माण हुआ हैं वह किसी से भूला हुआ नहीं हैं। 70–75 फीसदी गांवो को सड़को से जोड़ दिया गया। अब मैं अपने हलके के विशय में क्या बताऊ कि अफसरान से भूल हो गई या मेरी अपनी कमजोरी समझिए क्योंकि गवर्नमेंट का तो काम हैं

वह तो करती हैं परन्तु मेरे इलाके में और कुरूक्षेत्र के इलाके में रतनगहरा, खेड़ी मारकन्डा, प्रतापगढ़, विसनगढ़ रावगढ़ की सड़को का काम अभी आरम्भ नहीं हुआ और बादली से कदामी और मथाना से कदामी वाली सड़क अभी ना–मुकम्मल पड़ी हैं। कुरूक्षेत्र मंडी में उन लोगों ने माल भी ले जाना हैं, हस्पताल भी जाना हैं, थाने और तहसील में भी काम के लिए जाना हैं। इसलिए इन सड़को का बनाना निहायत ही जरूरी हैं और कई सड़को के तो मुझे नाम भी याद नहीं हैं। उनको मैं आपके नोटिस में फिर लाऊंगा।

दूसरी बात यह हैं कि लाडवा के अन्दर पुलिस स्टे ान बनाने के लिए एक जगह पर 15–20 साल से सैक ान 4 चली आ रही हैं। जिस जगह पर यह पुलिस स्टे ान बनाया जा रहा हैं आज से 15–20 साल पहले यह मौजा था लेकिन आज वह जगह मन्डी के नजदीक आ चुकी हैं। यह जगह मंडी के और रेजिडै न ाल हाउसिज के दरमियान में आ गई हैं। अब मेरी आपसे गुजारि ा है कि इस इस पुलिस स्टे ान को इस जगह की बजाए दूसरी जगह पर बना लिया जाए। यह कस्बे की भलाई के लिए भी अच्छा रहेगा। इस जगह के लिए पन्द्रह बीस साल से सैक ान चार चली आ रही हैं। तो मेरी आपसे यह गुजारि ा हैं कि इसको छोड़ने की कृपा करेंगे और ऐसी तजबीज करेंगे कि जिस आदमी ने पुलिस स्टे ान जाना हैं वही आदमी जायें, जो आदमी छतो पर खड़े हो कर पुलिस स्टे ान देखने वाले हैं के

वहां न जायें। इसलिए मेरी गुजारि ा हैं कि यह पुलिस स्टे ान वहां से अलग जरूर होना चाहिए। उस वक्त जब यह पहले बनाया गया था, अलग और दूर जगह पर था जगह पर था लेकिन अब लेकिन अब यह मन्डी के पास हो गया हैं। दूसरी बात यह भी हैं कि आई0 जी0 साहब वहां जा कर देख लें कि इस पुलिस स्टे ान का जल्दी से निर्माण नहीं हुआ तो वहां पर कोई न कोई दबकर जरूर मरेगा। थाने का नहीं मरा तो मुल्जिम जरूर मरेगा चाहे थाने वाले बताये या न बताये इसलिए मेरी अर्ज हैं कि वहां पर जल्दी से जल्दी थाने कि बिल्डिग बनाई जानी चाहिए। यह थाने वाले भाइयों के हित मे भी हैं।

हमारा यहां जो हस्पताल हैं उसके बारे में मैंने कल भी जिक्र किया था आपने जो हस्पताल बनाया, उसके लिये तो हमें खु ाी हैं लेकिन हमारे यहां जी डाक्टरज हैं उन्होंनें अपनी कोि ा ा से और हिम्मत से एक या डेढ़ लाख रूपया पब्लिक से इकट्ठा करके दिया था और उसका सामान वहां पर आया था। यह मैं मानता हूं कि हमारा हस्पताल किसी से कम नहीं हैं लेकिन उसके सामने ही खाली जगह पड़ी हुई है, उसके लिए सैक ान 4 पन्द्रह–बीस साल से चल रही हैं। उसको हर तीन साल के प चात रिन्यू कर देते हैं। अगर उस जमीन को ले लिया जाये तो हस्पताल बन सकता हैं। अब तो यह जगह मिल रही है फिर जगह नही मिलेगी। उस जगह पर जो भी कन्सट्रक ान वगैरह करनी हैं वह चाहे फिर कर लें लेकिन लागत नहीं आयेगी। हमें आज

बिल्डिग की इतनी आव यकता नहीं हैं जितनी फैसेलिटी लागत भी नहीं आयेगी। बिल्डिग तो हम खुद बनवा देंगे। आप ने वहां आदमी का प्रबन्ध नहीं हैं। इसलिए मेरी गुजारि ा हैं कि वहां पर आदमी भी भेज जाये। वहां पर पूरा स्टाफ दे दिया जाये तो अच्छी तरह से काम चल सकता हैं। लाडवा के हस्पताल के साथ चार गांव बाबस्ता हैं, उनके आसपास कोई अच्छी डिस्पेंसरी नहीं हैं।

एग्रीकल्चर के मामले मैं जो प्रगति हुई हैं, जो तरक्की हुई हैं वह किसी से भुली हुई नहीं हैं। मेरे भाई चौधरी भजन लाल जी ने बोनस की बात की थी। खु ाकिस्मती की बात तो यह थी कि वे भाई भी इस को पूरी कर सकते थे, वे खुद ही बोनस देने वाले थे, उनको दिलवानी चाहिए थी, उन्होंनें ही बोनस ऊपर से लेनी थी। वे भाई पहले इधर बैठने वालों में थे आज वे इधर बैठे हैं।

**चौधरी भजन लालः** मैं तो लाया था लेकिन आगे नहीं दी गई।

**श्री ओम प्रका ा गर्गः** आप लाये थे, तो अच्छी बात हैं। हमने तो आपके अहद में भी काम किया। आपकी भी पूरी चमचागिरी की। हम तो अब भी आपके साथ हैं, आपकी इज्जत करते हैं, आपको पूरा मान देते हैं। आपसे हमने जो भी काम कहा वह आपने किया लेकिन आप इधर से उधर दो गज के फासले पर बैठ कर इस तरह के सवाल पूछते हैं यह ठीक नहीं भाोभा नहीं

देता। स्पीकर साहब, इनको वहां गए हुए, अभी जुमा आठ दिन हुए नहीं और अभी से सवाल पूछने भाुरू कर दिये। मैं तो यह कहूंगा कि साबका मुख्य मंत्री चौधरी बंसी लाल और हमारे अन्य मंत्रीगण की कृपा से आज हिन्दोस्तान के भण्डार के अन्दर मेरे ख्याल में 2 करोड़ टन अनाज मौजूद है।

आज हिन्दोस्तान के अन्दर एक यह समस्या बनी हुई हैं कि जो आगे फसल आयेगी, उसको रखेंगे कहां? यह एक समस्या बनी हुई हैं और जिस वक्त हरियाणा बना और हकूमत ने बागडोर संभाली थी, उस वक्त यह समस्या थी कि हरियाण की ही नहीं थी, यह समस्या केन्द्र सरकार के सामने थी, कि वह खाने के लिये कहां से देंगे। आज स्पीकर, साहब यह हमारे लिये खु ाकिस्मती की बात हैं कि आज जो केन्द्रीय सरकार बनी हैं, वह किन हालात में और कैसे हालात में बनी हैं और इसने राजपाट संभाला है। वह किसी से भूला नहीं हैं। केन्द्रीय सरकार के सामने जो–जो भी आपत्तियां थी, वह हमारे भूतपूर्व उप–प्रधान मंत्री ने कितने तरकीबो से, कितनी मेहनते से और कितनी वफादारी से और अपना सहयोगियों का सहयोग लेकर उसको दूर किया हैं। आज हिन्दोस्तान का मान सारे वर्ल्ड के अन्दर हैं। आज हमारे पास अनाज का भण्डारा भरा पड़ा हैं। आज पेट्रोल के अन्दर हम यह ब्यानात पढ़ते रहें कि फलां साल तक हम आत्मनिर्भर हो जायेंगे। कोई भी कल कारखाने की कोई चीज हमें बाहर से मांगनी न पडेगी। आज हम एटम बनाने की भाक्ति में भी आत्म निर्भर हैं।

हम किसी के ऊपर डिपैन्ड नहीं करते बल्कि हिन्दोस्तान की एटम भाक्ति से दुनिया घबराती हैं। दुनिया के चन्द दे ा, अपने देखा होगा कि जब हमारे यहां लोकसभा के चुनाव हो रहे थे तो चुनाव तो हमारे यहां हो रहे थे लेकिन दर्द उनको हो रहा था। बी0 बी0 सी0 और अमेरिका वालों ने यहां पर दर्द हो रहा था। सारा दिन उनको यह फ्रिक लगी रहती थी किस तरह से इन्दिरा गांधी कामीयाब न हो जाये। लेकिन जो इलैक ान हुए उन्हें इलैक ान न समझा लिया जाये। इसे आप चाहे तो एक हवा समझ लीजिए या चाहे तूफान था। मैं साफ कह देना चाहता हूं कि लोक सभा के इलैक ान दोबारा कराये जायें तो आपको पता चल जायेगा कि आपकी स्थिति क्या हैं?

**चौधरी भजन लालः** आप पहले असैम्बली के इलैक ान तो करवा लो.....।

**श्री ओम प्रका ा गर्गः** मै स्पीकर साहब, आपके द्वारा यह बताना चाहता हूं कि इस इलैक ान के अन्दर चौधरी भजन लाल जी जैसे दृढ़ नेता जो मत्रिमण्डल में भी रह चुकी हैं, इनकी कांस्टीच्यूएंसी में काग्रेस उतने ही वोटों से हारी हैं जितनी वोटों से मेरी कांस्टीच्यऐंसी में कांग्रेस हारी हैं हालांकि मैं एक छोटा सा गवर्नर हूं।

**चौधरी भजन लालः** यह तो हमने हरवायी हैं।

**श्री ओम प्रका ा गर्ग:** मैं उन्हें यह बता देना चाहता हूं कि वह तो एक हवा थी। अगर इलैक ान दोबारा कर देंख ले तो आपको असलियत का पता चल जायेगा। अगर हार जीत देखनी हैं तो दोबारा इलैक ान करवाके देख लो पता चल जायेगा। वह तो एक तुफान था। वह इलैक ान थोड़े ही था। जो इलैक ान हुए हैं, उनके मुताल्लिक तो मैं अर्ज करना चाहता हूं.....।

**चौधरी ि ाव राम वर्मा:** असैम्बली के भी इलैक ान होंगे ही। लेकिन इसके बावजूद जो भी जनता ने हुक्म दिया हैं, वह ठीक हैं। वह हमें इज्जत के साथ कबूल करना चाहिए। हमें खु ाी हैं कि केन्द्रीय सरकार के अन्दर जो प्रधान मंत्री बने हैं वे श्री मोरारजी भाई बने हैं। हमें उन पर बड़ा गर्व हैं, बड़ा मान हैं। वह कोई जनसंघी नहीं हैं। वे ऐसे अच्छे विचारो के आदमी हैं कि अगर कोई सही मायनों में उन्हें गांधीवादी कह जाये तो इसमें कोई भाक की बात नहीं हैं। आज भी अगर कोई सच्चा गांधीवादी है तो वह मोरारजी भाई हैं। वह अपने हाथ से रोज चरखा कातते हैं। श्री जय प्रका ा नारायण उनके सरपरास्त हैं। उनके ऊपर हैं। बाबू जगजीवन राम जी जैसे सिपाही भी उनके साथ हैं। चौधरी चरण सिंह जिनका एक इतिहास हैं, वह भी इनके साथ हैं और उनके पु त पर जो मेरे जनसंघी साहब, मोरार जी भाई भी उन्हें अच्छी तरह से समझते हैं और एक बात आप किसी जनसंघी भाई से पूछ लें कि भाई आपकी स्ट्रैन्थ कितनी हैं, तो एक तो बतायेगा

**चौधरी ि ाव राम वर्मा:** स्पीकर साहब, जो यह बोल रहे हैं, क्या यह रैलेवैन्ट हैं?

**Mr. Speaker:** Order Please. No interruption please.

**चौधरी ि ाव राम वर्मा:** क्या वह रैलेवेंट हैं?

**श्री अध्यक्ष:** आर्डर प्लीज। रैलेवेन्ट तो इसलिये हो गया क्योंकि आपने इलैक ान का सबजैक्ट इन्ट्रोडयूस कर दिया।

**चौधरी ि ाव राम वर्मा:** स्पीकर साहब, असैम्बली के चुनाव तो करवा नहीं रहे। लोक सभा के दोबारा इलैक ान कराने की मांग कर रहा हैं। जनता का फैसला नहीं मान रहा वह कहता हैं कि वह तो एक हवा थी। जनता का फैसला नहीं था।

**Mr. Speaker:** Order Please. You cannot interrupt like this.

**चौधरी ि ाव राम वर्मा:** स्पीकर साहब, हमें तो टाईम नहीं मिला और इनको इलैक ान पर बोलने की आप इजाजत दे रहे हैं।

**Mr. Speaker:** Order Please. I am here to decide about the time.देखिए अगर एक साइड से इलैक ान का इ ू छिड़ता हैं तो दूसरे को जवाब देने से मैं नही रोक सकता। अच्छा तो यह हैं कि दोनों तरफ से यह इ ू उठाया न जाए।

**चौधरी ि ाव राम वर्मा:** उन्होंनें कहा कि दोबारा पार्लियामेंट के इलैक ान करवा लो।

Mr. Speaker: Order please. You should not interrupt like this. भ्ाुरूआत आपकी तरफ से हुई हैं। तो अब यह जवाब देते हैं तो आप एतराज करते हैं। इलैक ान के मुताल्लिक अब बोलने के लिए दोनो तरफ ही पाबन्दी है। एतराज इसका अब जिक्र न करें।

**चौधरी ि ाव राम वर्मा:** इन्होंनें तो जवाब दे दिया, हमको भी तो इसका जवाब देना पड़ेगा।

**श्री ओम प्रका ा गर्ग:** अगर इन जनसंघी भाइयों से पूछे कि लोकसभा में कितनी स्ट्रैथ हैं तो कोई 95 बताता हैं कोई 105 और अगर इनके नाते मोरार जी भाई किसी साथी से पूछें तो वह बताते हैं 270। इनके दिमागों के अन्दर से वह तादाद अभी तक नहीं गई हैं। इनकी नीयत वही है। जो पहले थी। लेकिन मेरे दोस्तो, मोरार जी भाई और दूसरे साथी, आपकी नियतों को सब समझते हैं।

**चौधरी ि ाव राम वर्मा:** आन ए प्वायंट आफ आर्डर सर। स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा यह पूछना चाहता हूं इस**********से कि जब जनता स्पीकर पार्टी सब पार्टियों को मिला कर एक पार्टी बन गई हैं तो यह **********क्या मजाक कर रहा था? इसको पता नहीं आज दे ा के अन्दर स्थिति क्या हैं।

जनता से पिटने के बावजूद भी इसी तरह से **********कट कर रहा हैं। जनसंघ का नाम बार–बार लेना, कहां तक उचित हैं?

**Mr. Speker:** Order pease. This is no point of order. You cannot interrupt like this.

**Education Minister (Pandit Chiranji Lal):** Sir, hon. Member from the oppostion has used a *** word which does not look nice. I would, therefore, requst the hon. Member not to use such word and this should be expunged.

Mr. Speaker: Yes. It is not in good taste.

**श्री ओम प्रका ा गर्ग:** कोई बात नहीं। यह पता नहीं हमें क्या–क्या कहेंगे। जो यह कहत हैं। इन्हें कह लेंने दे। इनकी सभ्यता इनके साथ रहेगी और हमारी सभ्यता हमारे साथ रहेगी। हम इनका मुकाबला नहीं कर सकते। ये मुझे ***** कहें या जो भी कहें, इन्हें हक हैं लेकिन आपको पता हैं कि उन्होंनें क्या किया भापथ लेने से पहले। इन सब भाइयों को राश्ट्रीयता महात्मा गांधी की समाधि पर ले गये और इनके जिस्म के ऊपर जो खुन के धब्बे थे, वह उन्होंनें उनको दिखाये और यह कहा कि हे राश्ट्रपिता महात्मा गांधी जी यह खून के धब्बे अपने जिस्म पर लेकर मेरे ये साथी आये हैं, अगर आप इन पर उपकार कर सकते हो, इनको माफ कर सकते हो, इनको माफ कर दो। स्पीकर साहब, इन्होंनें इन चीजो को महात्मा गांधी जी के सामने पे ा किया था। इन्होंनें राश्ट्रपिता के सामने भापथ ली हैं। इनकी भी आप हिम्मत देखो कि खून करने वाला आदमी भी उनके पांव को हाथ लगाकर भापथ

लेता हैं कि हमें राज दे दो हमें माफ कर दो। तो मेरा कहने का मतलब यह हैं कि मोरार जी भाई, चौधरी चरण सिंह जी, बाबू जगजीवनराम जी, जो कुछ इन्होंनें किया हैं, उसको भूले नहीं हैं। यह आपकी मर्जी हैं कि आप चाहते हैं कि राश्ट्रीय स्वयं संघ को गली गलो, जगह–जगह और गांव–गांव में फिर जागृत करना चाहते हैं। आपका यह विचार था कि एक बार हम किसी न किसी तरह से केन्द्रीय सरकार के अन्दर दाखिल हो जायें फिर हम जानें या हमारे भाई।

आपने यह कहा कि भई कई बात नहीं मुरार जी भाई दस साल ही और रहेंगे और जगजीवन राम भी ज्यादा नहीं रहेंगे। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि मुरार जी जो पूरे गांधीवादी हैं और उनकी नीतियों में पूरा वि वास रखने वाले हैं। मैं कह सकता हूं कि उनकी उमर 125 साल होगी। आप लोगों के ख्वाब कभी पूर नही होंगे और कोई ताज्जुब नहीं कि वह टाईम न आ जाए जो बंगाल की असैम्बली में हालात हुए थे और अजय मुखर्जी को मरण व्रत रखना पड़ा था। जैसे कि मैंने बताया वहां भी कुछ नेता बैठे हैं जो इनकी एक्टीविटीज को वाच करेंगे और कोई बात नहीं होने देंगे दे ा और दे ा के अन्दर कोई बदअमनी नहीं होने देंगे। स्पीकर साहब, इन्होंनें 21 तारीख को जालूस निकाला और वह जलूस हमारे घर पर आकर बन्द किया। मैं अपने घर वालों से कहकर आया था कि वे आप लोग घबनाराना नहीं। स्पीकर साहब, इन्होंनें तो पहले जूलस निकाला हैं हम तो 1936–38 से जूलूस

निकालते आ रहे हैं। इनका तो भाायद पहला ही था और हो सकता हैं यह आखिरी भी हो। हमने अपने जलूसों में किसी के खिलाफ नारे नहीं लगाए, भंगड़ा नहीं डाला, किसी की मां बहन को गाली नहीं दी लेकिन इन भाइयों ने तो हमारे घर पर और दोस्तों को गालियां दी, भगडें डाले और हमारे घर पर पत्थरों कियां। इन्होंनें कोई सौ जूतियां और चप्पले फेंकी।

**चौधरी मेहर चन्दः** आन ए प्वायंट आफ आर्डर, बेहतर होगा अगर राज्यपाल महोदय के ऐड्रैस पर डिस्क ान हों। यहां पर सैन्ट्रल गवर्नमेंट के अफेअर्ज पर डिस्क ान नहीं होना चाहिए।

**श्री अध्यक्षः** आर्डर प्लीज, राज्यपाल के ऐड्रैस पर सेन्ट्रल गवर्नमेंट के अफंअर्ज को हाउस में कोई डिस्कस नहीं कर सकता।

**श्री ओम प्रका ा गर्गः** स्पीकर साहब, मैं कह रहा था कि इन्होंनें हमारे घर पर पत्थर फैंके और सौ के करीब जूते और चप्पल फैंकी। मेरे पास टेलिफोन आया और मैं वापिस लाडवा गया और जाकर देखा कि घर के सब लोग भयभीत थे। मैं समझता हूं कि यह सारा काम एक–दो आदमियों ने कराया और वह भी बच्चों से कराया। मेरे साथी भी गुस्से में थे और मैंनें उनको कहा कि हमारी सभ्यता और उनकी सभ्यता मे फर्क है। इन्होंनें जनता को कहा था कि हम अच्छा ला एण्ड आर्डर देंगे, पेट्रोल की कीमत चौदह आने कर देंगे, का तकार जो 170 रूपये अनाज का भाव देंगे। मैंने कहा कि इन्होंनें ला एण्ड आर्डर का वादा तो पूरा कर

दिया और आगे जाकर भी जो दूसरे वादे हैं उनको पूरा कर देंगे। इस प्रकार मैंने अपने घरों के मैंम्बरों को तथा दूसरे साथियों को समझाया। वहां पर श्री बृज मोहन हैं जो जनता पार्टी के लीडर हैं और वे श्री जय प्रका ा जी के भक्त हैं। मैंने उनको बुलाया और दो चार साथियों को और बुलाया और उनको सारी चीजें दिखाई। वहां एक जलसे से इन्होंनें मेरे से पहले इस सब के लिए माफी भी मांगी। वे काफी परे ाान थे और बेचारे जलये को छोड़कर चले गए। वे एक दिन पार्टी छोड़ कर चले जाएंगे यह तो डेफिनिट हैं। स्पीकर साहब, कल यहां पर जो धमकियां दी गई थी वे तो आपने सुनी ही थी जिनमें कहा गया था कि हम किस प्रकार जलसे करेंगें और जनता से करवाएंगे। स्पीकर साहब, मैं भी बता देता हूं कि हम पीछे नहीं रहेगें। आपने गुजरात के बारे में रेडियो में सुना होगा वहां पर तो चार–छह का फर्क हैं और यह तो बीस का फर्क हैं। वहां पर नो–कांफिडेंस मो ान आया और वह फेल हो गया। बिहार में भी यही हाल हुआ। अब इनके सामने कोई रास्ता नहीं रह गया। जिस तरीके से ये भाई कहते हैं और उस तरह का वातावरण पैदा करना चाहते हैं जैसे ब्लैक आउट में किया जाता हैं, जिससे मुरार जो, जगजीवन राम और चौधरी चरण सिंह को कुछ पता न लगे। मेरे कहने का मुद्दा यह हैं कि अगर इन लोगों के नोटिस में इनके कारनामें आ गए, उनके नोटिस में जनसंघ वालों की कारसतानियां, इनकी धांधली उनके नोटिस में आ गई तो वे कभी माफ नहीं करेंगे। जनसंध वालों को यह दुःख हैं कि बाबू जगजीवन राम ने भापथ क्यों ले ली। पहले नम्बर एक

से हटाया फिर नम्बर दो पर भी नहीं रहने दिया। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि बाबू जगजीवन राम एक बहादूर सिपाही हैं उन्होंनें मुल्क की बहुत सेवा की हैं और हम यही आ ाा करते हैं कि हमे ाा और ज्यादा सेवा करतें रहेंगे।

**श्री अध्यक्षः** आर्डर प्लील, आप गवर्नर ऐड्रैस पर ही बोंले।

**श्री ओम प्रका ा गर्गः** स्पीकर साहब, मैं इन भाब्दो के साथ आपका धन्यवाद करता हूं और गवर्नर महोदय का भी धन्यवाद करता हूं लेकिन मैं अर्ज कर देना चाहता हूं कि जनसंघ के भाइयों! आपको मौका मिला हैं और मु कल से मौका मिला हैं अगर लोकसभा के अन्दर कोई लाया हैं किसी की मारफत अगर आप आए हो तो आप जय प्रका ा की कसम खाकर आए हो और आपने यकीन दिलाया है, अपनी तसल्ली दिलाई हैं कि हम ठीक काम करेंगे और कोई सैबोटेज नहीं करेंगे। अगर आपने कोई सेबेटिज करने की को ा ा की तो याद रखना कि हमारे भी उन 270 आदमियों में कुछ आदमी हैं वे आपकी हर एक्टीविटी को वाच करते रहेंगे। अगर आप यह समझते हो कि हम हिन्दुस्तान का ना ा कर देंगे, मुरार जी नहीं रहेंगे जगजीवन राम नही रहेंगे तो मै आपके स्वप्न अधूरे रह जाएगें और वक्त आएगा जब आप ही नहीं रहेंगे। स्पीकर साहब , इन भाब्दों के साथ मैं समाप्त करता हूं।

**श्री अध्यक्षः** श्री बंसी सिंह।

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** स्पीकर साहब, मुझे भी टाइम मिलेगा या नहीं। अगर नहीं मिलना हैं तो फिर क्यों बैठा जाए।

**श्री अध्यक्षः** पहले कमिटमैंट कैसे कर दी जाए। जो आनरबेल मैम्बर बिल्कुल नहीं बोले पहले उनको टाइम दूंगा।

**चौधरी ि ाव राम वर्माः** मैं भी बिल्कुल नहीं बोला हूं।

**श्री अध्यक्षः** आप दो तीन दफा बोल चुके हैं।

**राव बंसी सिंह (अटेली):** अध्यक्ष महोदयत्र मैं ज्यादा समय न लूंगा। इस हाउस में कल से गवर्नर साहब के ऐड्रैस पर बहस हो रही हैं कल भी बहुत सारे साथी बोल चुके हैं और बहुत सारे साथियों ने अभी बोलना हैं। गवर्नर महोदय के ऐड्रैस में चुनाव का कोई जिकर ही नहीं था लेकिन हाउस में दोनों ही साइड से चुनाव में जो फैसला किया हैं वह सब के सामने हैं। इस चुनाव में जो आंधी तुफान आया, इसके कई कारण हैं। खैर मैं इन बातों में ज्यादा न जाता हुआ कृशि के बारें में कुछ कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, हरियाणा कृशि प्रधान प्रदे ा हैं और कृशि के लिये दो चीजों की बड़ी आव यकता होती हैं, सब से पहली आव यकता होती हैं पानी की। आज हरियाणा में पानी दो तरीकों से दिया जा रहा हैं और दिया जा सकता हैं, बिजली और दूसरा नहरों के जरिये से खेतों को पानी पहुंचाया जा सकता हैं। मै ंयहां महेन्द्रगढ़ के किसानों का जिकर करना चाहता हूं वहां पर

किसानों को खेती करने के लिए केवल बिजली के साधन से ही पानी मुहैया किया जा रहा हैं। 1966 से आज तक कि फिगर्ज उठाकर देखें तो पता चलेगा कि जो बिजली पम्पिंग सैट्स को दी गई हैं वह कई गुना ज्यादा दी गई हैं लेकिन इसके साथ–साथ अध्यक्ष महोदय, मैं यह बताना चाहूंगा कि वहां पर किसान बहुत दखी हैं उसका कारण है कि उसको बिजली की सप्लाई पूरी नही मिलती हैं। मेरी आपके द्वारा एक ही सरकार से रिकवैस्ट हैं कि हरेक ट्यूबवैल को पूरी बिजली दी जाए। जब हमारे पास पूरी सप्लाई न हो तो फिर कनैक ानज देने का क्या लाभ? बिजली की जरूरत इसलिए होती हैं, कनैक ानज की जल्दी जरूरत इस लिये होती हैं कि गरीब किसान ने अपने ट्यूबवैलज के लिये लोन लिये होते हैं, बैकन्स से कर्जा लिया होता हैं उनकी कि तें कटती होती हैं, अतः मेरा यह सुझावा हैं कि किसानों को पूरी बिजली दी जाए ताकि वह अपना काम अच्छी तरह से कर सकें। अध्यक्ष महोदय, दूसरी महेन्द्रगढ़ के किसानों की यह प्राब्लम हैं कि वहां के किसान ने बड़ी दुख और तकलीफें सही है उन्होंनें अपने बच्चों को दुखी होकर बी0 ए0 एम0ए और इन्टर पास करवाए लेकिन उनके लिए कोई सरकारी नौकरी नहीं हैं। अध्यक्ष महोदय, आप पिछला रिकार्ड उठाकर देख लें कहीं भी ऐसी कोई मिसाल नहीं मिलेगी। सो मेरी आपके द्वारा सरकार से यह रिकवैस्ट हैं कि किसानो के बच्चों को भी कोई न कोई नौकरियों में हिस्सा अव य मिलना चाहिये। (इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुई)

डिप्टी स्पीकर साहिबा, अगला मेरा प्वायंट कोआपरेटिव के बारें में हैं। मैं यह मानने के लिए तैयार हूं कि कोआप्रेटिव विभाग ने और उनके रजिस्ट्रार साहब ने मुख्यमंत्री महोदय से मिलकर जो मिनी बैंकस बनाये हैं, वह बहुत ही अच्छी बात हैं लेकिन इसके साथ किसानों की एक प्राबलम है कि जिन किसानों के पास जमीन नहीं हैं जो टेनैन्ट्स के रूप में काम करते है और हरियाणा के अन्दर उनके नाम से कोई गिरदावरी नहीं हैं, उस किसान को बैंकस से कर्जा नहीं मिलता हैं, इसके लिए मेरी सरकार से प्रार्थना हैं कि उन्हें टेनैंट्स माना जाए और बैंकों से कर्जा दिलवाया जाए।

डिप्टी स्पीकर साहिबा, इसके साथ कोआपरेटिव साइड के अन्दर एक और बात हैं कि जो लेबर कंस्ट्रक ान सोसायटीज हैं, जो वीकर सैक ानज हैं, उन से ठेकेदारों की तरह अरनेस्ट मनी ली जाती हैं जोकि अच्छी बात नहीं हैं, वह गरीब आदमी अरनैस्ट मनी कहां से भरे, अतःमेरी सरकार से आपके द्वारा प्रार्थना हैं यह जो वीकर सैक ानज से अरनेस्ट मनो लेने का फैसला है वह सरकार को वापिस लेना चाहिए।

इसके बाद अब मैं महेन्द्रगढ़ में अन–एम्प्लायमेंट के बारे में कुछ कहना चहाता हूं कि वहां पर किसी भी यंग तबके के लोगों को कोई एम्प्लायमेंट नहीं मिली हैं इसलिये ऐसा नहीं होना चाहिये सभी के साथ यकसां व्यवहार होना चाहिये ताकि किसी प्रकार की कोई आ ाांति उनके मने में न रहे। इसके अगरे यह

भी सरकार के नोटिस में लाना अपना कर्तव्य समझता हूं कि सरकार हमे ाा अपने मुलाजिमों पर चलती हैं। मेरे ख्याल में मुलाजिमों जितनी दुखी हैं उतना कोई नही होगा तो मैंने महसूस किया हैं कि उनको डयू ोयर मिलना चाहिए, डी0 ए0 का सवाल हैं कोठारी कमि ान कर दिया हुआ ग्रेड मिलना चाहिये। महेन्द्रगढ़ के और सारे हरियाणा के ही अध्यापकरण इस बात से बड़े अ ाांत है, उनको कमि न की रिकमेन्डे ान के अनुसार ग्रेड, डी0 ए0 मिलना चाहिये और सरकार को उनकी मांगे अव य स्वीकार कर लेनी चाहिये ताकि वे पूरी तरह खु ा होकर स्टेट का अच्छा काम कर सकें।

इसके बाद डिप्टी स्पीकर साहिबा, फैमिली प्लेनिंग के बारे में बताना चाहता हूं, यह एक अच्छी स्कीम हैं सारे राश्ट्र के हित मैं हैं पहली सरकार ने भी इसकी जारी रखा आज की सरकार ने भी इसी जारी रखे लेकिन अमल करने में कुछ तरीका और रहा जिसका नतीजा आज सबके सामने हैं। कई लोगों के साथ ज्यादतियां हुई हैं, जिन अफसरों ने ज्यादतियों की हैं, उन सब की इंक्वारी होनी चाहिये। उनके खिलाफ एक ान होना चाहिये और यह देखा जाए कि काबिल था उसका हुआ या जो काबिल नहीं था उसका हुआ इन सब बातों की इकंवारी होनी चाहिये ताकि पब्लिक के अन्दर सन्तोश हो कि हमोर साथ ज्यादतियां हुई हैं और ज्यादतियां करने वालों पर ऐक ान हो रहा

हैं, इन भाब्दों के साथ मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया।

**चौधरी देवी लाल रोड़ीः** डिप्टी स्पीकर साहिबा, इस वक्त यहां गवर्नर ऐड्रैस पर बहस चल रही हैं उस पर बोलने के लिये मैं खड़ हू कुछके बातों की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। सबसे पहले जो पिछले इलैक ानों में कांग्रेस को हार हुई हैं। मैं उन कारणों में न जाता हुआ मैं इतना बता देना चाहता हूं कि हरियाणा एक ऐसा सूबा हैं जहां हिन्दोस्तान में सबसे ज्यादा परसेन्टेज में कांग्रेस की हार हुई, ि ाकस्त हुई क्योंकि यहां पर बहुंत से कांस्टीच्यु ानल और मिनिस्टर्ज आजाद हुये, हमारा हरियाणा आजाद हुआ लेकिन डिप्टी स्पीकर साहिबा ... ..विघ्नकृ

**उपाध्यक्षाः** चौधरी साहब आपकी डिस्क ान तो गवर्नर ऐड्रैस पर ही होनी चाहिये।

**चौधरी देवी लालः** जो अन–कांस्टीच्यु ानल काम हुये हैं ये सारे गवर्नर में आने चाहिये थे, मेरा कहने का मतलब यह हैं कि 1968 के जो तौर तरीके थे वे आज भी उन्हीं तौर तरीकों पर चल रहे हैं क्या इसे बजट का सै ान कहा जाता हैं। छः दिन में बजट भी पास हो चुका हैं और इसके अलावा बिल भी पास हो चुके हैं। यह सिर्फ इसलिये किया जा रहा हैं कि हम किसी तरीके से अपनी जिन्दगी बचाएं क्योंकि ये फेस नहीं कर सकते इनकी यह

कोि ा ा होती हैं कि सत्र जल्दी से जल्दी खत्म हो जायें और यही हालत पहले हुआ करती थी। पिछले 9 साल का रिकार्ड आप देखें लें डिप्टी स्पीकर साहिबा, आपकी मौजुदगी में सब होता रहा हैं। एक दिन में 19–19 के बिल पास होते रहते हैं। यह अन–कांस्टीच्यू ानल तरीका हैं और इसी वजह से कांग्रेस की बहुत बड़ी ि ाकस्त हुई हैं। यहां पर सरकार असली रूप से नहीं चल रही थी सरकार तो सिर्फ दो आदमियों के हाथ में थी, संजय और सुरेन्द्र के हाथ में। इसका सबूत देने की जरूरत नहीं हैं आप आज का ही अखबार पढ़े उसमें कांग्रेस के 125 सदस्यो ने यह मांग की हैं इनको पार्टी से निकाला जाए वरना हम पार्टी में नहीं रह सकेंगे। तो इन हालात में जबकि जनता ने कांग्रेस के खिलाफ बहुत बड़े बहुमत से यह फतवा दिया हैं तो इनको इस्तीफा दे देना चाहिये और इनका यहां बैठना एक मिनट के लिए मुनासिब नहीं हैं। यह डिमांड गुंजरात में, बिहार में भी की गई थी लेकिन इन्होंनें यह बात मानी नहीं और उसी से हमे ाा सेठ गोविन्द दास जी चुन कर आया करते थे उनके बाद जिस कांग्रेसी ने वहां से इलैक ान लड़ा उसकी 65000 वोटों के बहुमत से हार हुई थी। उसके बाद हरियाणा में महम और रोड़ी में जनता ने अपना फतवा दिया और फिर पंजाब की तीन सीटों में जनता ने फतवा दिया और इनका जो ह ार वह आपके सामने हैं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आपकी मारफत हमारे मुख्यमंत्री महोदय जी से मैं इनको मुख्य मन्त्री तो नही कहना चाहता हूं क्योंकि मुख्य मंत्री तो वह होता हैं जो इलैक ान से आता हैं। मैं इनको नामजद

मुख्यमंत्री कहना चहाता हूं। मैं कहूंगा कि वे उसी रास्ते पर न चलें, इनको चाहिये कि ये लोगों के जजबातों का ख्याल करें। इनको तब ठीक कहा जा सकता है जब ये कांस्टीच्यू ानल तरीके से चलेंगे.....

**Deputy Speaker:** It would be better of you could speak on the Governor address. You should not discuss the election question.

**चौधरी देवी लालः** मैं अर्ज कर रहा हूं कि इलैक ान किस ढंग से हुए हैं। यह भी अन–कांस्टीच्यू ानल हैं कि हमको बोलने की इजाजत नहीं दी जाती। इलैक ान के दिनों में सरकार को चाहिये था लोगों को वोट डालने के लिये खुली इजाजत दी जाती लेकिन इन्होनें वहां पर अफसर डिप्यूट किये और पुलिस को डिप्युट किया कि वह जाकर लोगों को तंग करे। वह पर पुलिस का पहरा देना पड़ा। जहां तक भिवानी और महेन्द्रगढ़ की सीट का ताल्लुक हैं वहां जिस ढंग से जबरदस्ती की गई और कहीं नहीं हो सकती। लोगों को वोट डालने नहीं दिया गया। वहां के डी0सी0 खुद कनवैंसिग करते कुम्हारों के घरों में गए और वोट मांगते रहे। तो जब सरकार कांस्टीच्यू ानल तरीके से न चले तो लोग मजबुर हो जाते है जैस सैंट्रल गवर्नमैट के खिलाफ लोगों को मजबूर होकर फैसला करना पड़ा .....विघ्न...

**श्री गिरी ा चन्द्रः** डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरा प्वायंट आफ आर्डर हैं कि यह गवर्नर एड्रैस हो रहा हैं या जनता पार्टी का तफसरा हो रहा हैं?....भाोर

**उपाध्यक्षाः** आर्डर प्लीज

**चौधरी राम लाल वधवाः** डिप्टी स्पीकर साहिबा जब ओम प्रका ा गर्ग बोल रहे थे तो उस वक्त तो ये बोले नहीं , वे कितना इररैलेवैंट बोल रहे थे....भाोर

**Deputy Speaker:** Order please. Please take your seat Ch. Devi Lal ji, I would requst you that you should speak on the Governor's address.

**चौधरी देवी लालः** मैं गवर्नर एड्रैस पर बोल रहा हूं। मैं कहना चाहता हूं कि इस तरह का बजट सै ान नहीं होना चाहिये था। आपके पड़ोस में पजाब का सै ान हो रहा हैं वह बजट सै ान नहीं हैं बल्कि कुछ महीनों के लिए पैसा मांग रहे हैं और यही पार्लियामेंट में हो रहा हैं लेकिन 6 दिन में बजट भी पास कर दिया गया और गवर्नर ऐड्रैस भी हो गया। मेरे कहने का मतलब यह है कि सरकार अन–कांस्टिच्यू ानल तरीके से चले तो इसका रिएक ान होता हैं। मैं यह बात इनके इन्ट्रैस्ट में ही कह रहा हूं। हमारा इन्ट्रेस्ट तो इसमें हैं कि संजय गांधी और सुरेन्द्र और पैदा न हो। मैं इलैक ान की बात नही कह रहा हूं बल्कि जो हालत सामने हैं उनको नोटिस में लाना चाहता हूं और इनसे अर्ज करना चाहता हूं कि वह पुराने तौर तरीके जो चौधरी बंसी लाल ने

इस्तेमाल किये थे जोकि एक कैबिनेट मिनिस्टर को गाली दिया करता था....

**श्री ओम प्रका ा गर्ग:** डिप्टी स्पीकर साहिबा मेरा प्वायंट आफ आर्डर हैं कि सुरेन्द्र और संजय हमारे यहां तो पैदा हो चुके अब इनके यहां पैदा होंगे (हंसी एव भाोर)

**चौधरी राम लाल वधवा:** डिप्टी स्पीकर साहिबा, अब आप देख लीजिये आप दूसरों को कह रही हैं ये तो सुनो क्या कह रहे हैं.....भाोर

**Deputy Speaker:** No member should speak without a point of order.

**चौधरी राम लाल वधवा:** डिप्टी स्पीकर साहिबा, वह फिर बीच में इन्टरफियर कर रहे हैं.....भाोर

**उपाध्यक्षा:** आर्डर प्लीज। जब कोई मैंबर बोल रहा हो तो किसी को भी बीच में नहीं बोलना चाहियें। मैं दोनों तरफ को बराबर समझती हूं और यही वजह हैं कि आपको बोलने का टाइम भी दिया गया हैं।

**चौधरी देवी लाल:** वरना नहीं देना था (हंसी)

**उपाध्याक्षा:** हाऊस में डिसआर्डर नहीं होना चाहिये।

**चौधरी देवी लाल:** गवर्नमैंट की तरफ से जब सरकारी म ाीनरी का गल्त इस्तेमाल हो तो वह अन–कांस्टीच्यू ानल होता

हैं इलैक ान में सारी सरकारी म ीनरी का इस्तेमाल किया गया। कांउटिग के वक्त यह देखने को मिला.....

**श्री के0 एन0 गुलाटीः** डिप्टी स्पीकर साहिबा, अभी देवी लाल जी बता रहे थे कि इलैक ान अन–कांस्टीच्यू ानल होता हैं मैं आपको बताना चाहता हूं कि इन्होंनें बैलट बाकस उठा कर ठका ठक मोंहरे लगाई और फरीदाबाद के जनसंघ के प्रेजीडेट ने मेरे ऊपर और मेरी मिसेज के ऊपर हमला किया ( ाोर)

**उपाध्यक्षाः** आर्डर प्लील।

**चौधरी देवी लालः** डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरी बात की ये ताइद कर रहे हैं। अगर रूलिंग पार्टी के बकसे अपोजी ान वाले उठा सकते हैं तो उसका मतलब हैं कि इनको रूल करने का कोई हक नहीं हैं क्योंकि ये अपनी रक्षा आप नही कर सके जैंसे डिफैंस मिनिस्टर अपनी रक्षा नहीं कर सकते तो इनको चाहिए कि ये गवर्नमैंट को इस चीज का इलजाम दें। मैं यह बातें इनके इन्ट्रैस्ट के लिये ही याद दिला रहा हूं। पिछले आठ नौ साल में न तो कहीं किसी मिनिस्टर की इज्जत होती थी और जो एम0 एल0 ए0 थे***की तरह खड़े रहते थे। इसकी मिसाल देने की जरूरत नहीं हैं हरियाणा भवन में किसी एम0 एल0 ए0 की जुर्रत नहीं होती थी कि वहां जाकर ठहर सकें।

(*उपाध्यक्षा महोदया के आदे ानुसार कार्यवाही से निकाल दिये गये)

**उपाध्यक्षाः** एम0 एल0 ए0 के लिये जो चापड़ासी लफज का इस्तेमाल हुआ है उसे एकसपंज किया जाए.....भाोर.....

**चौधरी देवी लालः** तो मैं बता रहा था कि सरकारी म ाीनरी का किस तरह से गल्त इस्तेमाल हुआ (भाोर)

**मुख्य मंत्री श्री (बनारसी दास गुप्त):** उपाध्यक्षा, महोदया, मेरी एक सबमि ान हैं कि हम चौधरी देवी लाल को आराम से सुनना चाहते हैं। मैं समझता हूं कि ज्यादा इन्ट्रपं ाज उधर से होती हैं अगर कोई भाई प्वायंट आफ आर्डर करता हैं तो यह उसका हक है, वह जायज हैं या नही उसका फैसला आपने करना हैं। इन्ट्रप ांज इनकी तरफ से हैं हमारी तरफ से नहीं।

**एक आवाजः** हमारी तरफ से कोई खड़ा नहीं होता..... ( ाोर)

**श्री बनारसी दास गुप्तः** हम आराम से सुनना चाहते हैं और आप भी आराम से बोले। जितनी देर बोलना चाहें, बोले।

**चौधरी देवी लालः** बहुत मेहरबानी, भाुक्रिया आपका क्योंकि मैं आपके इन्टरैस्ट में **(11.00 बजे)** बोल रहा हूं आपकी मदद चाहिए। हालात इस किसम के बना दिए गए कि इलैक ान के दौरान हमें पुलिस का पहरा देना पड़ा। आखिर, जहां पुलिस चली जाती हैं, वहा तसल्ली हो जाती हैं, किसी ओर को फिकर होनी चाहिए। लेकिन आपने देखा होगा, तहसील हैडक्वार्टर ऐसा बन गया था कि अगर एक बैलट बाक्स हैं तो 500 आदमी पहरा

देते थे। भिवानी तहसील में चौधरी भजन लाल को जाना पड़ा, चौधरी बंसी लाल को जाना पड़ा, मुझे जाना पड़ा, इसलिए सरकार पर वि  वास नहीं था, सरकार का क्या भरोसा कि बैलट बाक्स को बदल दें और इस अवि  वास का खम्याजा हमारी पहली सरकार को भुगतना पड़ा। अब इस ढंग से चलें जिससे कांस्टीच्यू  न की मुखालिफत न हो। कहीं ऐसा न हो कि जैसे गवर्नमैंट ने कहीं दफा 144 लगा दी कि कोई व्यक्ति आर्म्ज लेकर नहीं जा सकता, पोलिंग स्टे  न पर बदूक, रिवाल्वर लेकर पहुंचे, वहां फायरिंग हुई और आज तक उसके खिलाफ कोई ऐक  न नहीं हुआ। ये वाकयात एक जगह नहीं, कई जगहो पर हुए हैं। अगर इस किसम के हालत चलते रहे तो जनता में री–एक  न होगा। मैं चीफ मिनिस्टर दरख्वास्त करूंगा कि कम से कम उनको कांस्टीच्यू  न का तो ख्याल रखना चाहिए। विधान के मुताबिक इस सरकार को चलाने की कोि  ा  ा करें और विधान के मुताबिक इनको यहां रहने का हक नहीं हैं, इन्हें इस्तीफा देना चाहिए। इन्होंनें कहा कि अगले लोकसभा का इलैक  न करवायें तो पता चलेगा कि जनता किस के साथ हैं। इलैक  न तो अभी हुए। पाकिस्तान में इलैक  न हुए हैं और अब वहां असैम्बलीज के इलैक  न चल रहे हैं। वहां के हालत ठीक नहीं हैं। मै ंयहा की बात कहना चाहता हूं कि इन्होंनें असैम्बिलियों की म्याद 6 साल रख दी हैं जबकि जनता से पांच साल के लिए चुनकर आये थे, इनका हक नहीं है कि पांच साल के बाद यहां बैठे। असैम्बलियों का इलैक  न करवाओ, दाल आटे का भाव का पता मालूम हो जायेगा। दो

परसैंट भी आदमी चुनकर तुम्हारी पार्टी के नहीं आएंगे। इनको ला एंड आर्डर को मेनटेन करना चाहिए। (इस समय श्री अध्यक्ष पदासीन हुए) अगर इनके घरों में पथराव हुआ तो यह कमजोरी सरकार की हैं अपोजी ान की नहीं हैं अगर अपोजी ान के साथ ज्यादती हो तो वह कह सकती हैं कि हमारी साथ इस किस्म की ज्यादती हुई हैं, लेकिन सरकार नहीं कह सकती ला एंड आर्डर उनके हाथ में। मैं ज्यादा वक्त न लेता हुआ यह समझता हूं कि समय कम हैं इन्होंनें पार्लियमेंट का भी ख्याल नहीं किया, वहां भी बजट सै ान चल रहा हैं और पंजाब विधान सभा में भी बजट का सै ान हो रहा हैं। इनका तजुर्बा कर लेते, इनसे सबक सीख लेते. ..

**श्री अध्यक्षः** आप जितनी देर बोलना चाहें बोल सकते हैं।

**श्री बनारसी दास गुप्तः** और क्या बोंलेंगे? चौधरी साहब ने ऐड्रैस तो पढ़ा ही नहीं और न ही बजट पढ़ा हैं। बोलें तो क्या बोलें?

**चौधरी देवी लालः** मैंने सबकुछ पढ़ा हैं। छह दिन में बजट भी रख दिया और ऐड्रैस भी रख दियां। मैं कहता हूं कि सै ान को टाईम मिलना चाहिए ताकि लेाग उसको पढ़ते।

**श्री बनारसी दास गुप्तः** अगर बजट सै ान एक महीना भी चलता तब भी इतना ही बोलना था।

**चौधरी देवी लालः** ये चाहते थे कि किसी तरीके से बजट सै ान निकल जाए और हमारी जिन्दगी बच जाए। स्पीकर साहब, आपने मुझे बोलने का मौका दिया हैं, इसके लिए धन्यवाद। लेकिन जिस अन–डैमोक्रेटिक ढंग से ये चल रहें हैं, यह तरीका ठीक नहीं है।

**श्री गिरी ा चन्द्र जो ी (यमुनानगर):** अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाशण पर चर्चा हो रही हैं। मेरे साथी श्री गुलाब सिंह जैन ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा, जिसका समर्थन श्री फूल चन्द जी ने किया और उसका अनुमोदन करेन के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। कल चर्चा के दौरान में मैं यह देखता रहा हूं कि अभिभाशण पर बोलने की बजाए विरोधी पक्ष के लोग जनता पार्टी के तफसरे पर ही बोलते रहे और कोई दूसरे बातों पर बोलते रहे। किसी दे ा या प्रदे ा का जब बजट सै ान आता हैं तो केन्द्र में प्रोजिडैंट साहब अपना अभिभाशण देते हैं और प्रदे ा में राज्यपाल महोदय अपना भाशण देते हैं जिसमें वे बताते हैं कि पिछले साल में सरकार ने क्या काम किया हैं, आगे क्या करना हैं, सरकार की नीति क्या हैं उसके आधार पर जनता के हित में क्या काम करने हैं, इस बात पर डिस्क ान को आधारित किया जाता हैं। राज्यपाल महोदय के अभिभाशण को अगर गौर से देखा जाए तो प्रतीत होता हैं कि प्रदे ा के अन्दर बहुत बड़ा विकास हुआ हैं। ऐड्रैस के पहले पैरा में ही स्पश्ट कर दिया हैं कि विकास का माप दण्ड विकास की दर पर अधारित होता हैं। इसे कहते हैं....'रेट

आफ ग्रोथ' हमारी स्टेट का रेट आफ ग्रोथ हिन्दोस्तान के बस प्रदे ाो में बताई हैं जिस पर विरोधी दल के किसी सदस्य ने नरजसानी नहीं की। हमारे वित्त मंत्री महोदय ने और खुलासा किया है कि हमारी रेट आफ ग्रोथ 15 परसैंट है जबकि सारे हिन्दुस्तान की 5.5 परसैंट है। जो भाई इकनौमिक्स पढ़ते हैं, वे इस बात को अच्छी तरह समझते है, क्या इन्होंने इक्नौमिक्स पढ़ी है? ये तो कांस्टीच्युशन की बात करते है? यह तफसरा न करें, कम से कम यह तो समझें कि हमने जनता की हालत को सुधारना है, आर्थिक हालत को सुधारना है, केवल तफसरे करने से जनता की हालत सुधरने वाली नहीं है। जब तक हम आर्थिक तौर पर अपने आपको आजाद नहीं कर पाएंगे तब तक जनता की हालत नहीं सुधार पाएंगे। मैं आपका ध्यान 25 जून, 1975 के पहले के वाक्यात की तरफ ले जाना चाहता हूं। उस वक्त देश में क्या था? देश में क्या–क्या चीजें मिलती थीं? लौगों को खाना नहीं मिलता था, सीमेंट नहीं मिलता था, लोहे के भाव आसमान को छूते थे, कपड़े के भाव आसमान को छूते थे, यहां तक हालत पैदा हो गई कि देश में अनुशासन को तोड़ दिया गया, लोगों को काम करने से रोका गया, फैक्ट्रियों में चलते हुए काम को रोका गया, रेल गाड़ियां चलने से रोकी गई और आफिसिज में हमारे कर्मचारी काम नहीं करते थे। आम जनता दुखी थी, तड़पती थी, इसके परिणामस्वरूप 25 जून, 1975 को एमरजैसी लगी। इसके बाद आपने देखा होगा कि देश में क्या हालत हुई। 18 महीनों के दौरान चीजों की कीमतें चीचे गिरी, जनता को हर चीज मिली।

लोहा 2800 रूपये टन से गिरकर 1500 रूपये टन हुआ, टायर 6000 रूपये से घट कर 2000 पर आया। लोगों को हर चीज मुहैया हुई। यह मैं ही नहीं कहता, वर्ल्ड बैंक के चेयरमैन मिस्टर मैकरमारा जो अमेरिया के है, वही अमरीका जिसके पैटन टैंक ओर सैबरजैटों को, पाकिस्तान की लड़ाई में हमने करारी हार दी थी, वे कहते हैं कि इन 18 महीनों के दौरान हमारे देश ने इतनी तरक्की की है जो दुनियां के किसी देश ने नहीं की है। आज हमारे पास साढ़े चार हजार करोड़ रूपये की फारेन एक्सचेज कंजर्व हुआ हैं। इस फारेन एक्सचेज के आधार पर हम बाहर से, बिना कर्ज लिए, मान मंगा सकते हैं। ठीक है, एक हवा चली, जिसके बिना पर यह बातें हुई, मैं इन बातों पर नहीं जाना चाहता, लेकिन कुछ ऐसी ही बातें मेरे एक माननीय सदस्य ने मेरे सामने कह दी हैं। वे बहुत पुराने सदस्य हैं, सरकार प्रताप सिंह सिंह कैरो के समय में पार्लियामेंटरी सैक्रेटरी भी रहे हैं, चौ. बंसी लाल जी के टाईम पर खादी बोर्ड के चेयरमैन भी रहे हैं, लम्बे चौड़े भी हैं लेकिन बात गलत ढंग से कहते हैं। कम से कम इस सदन के अन्दर उनको ऐसी बातें कहना शोभा नहीं देता। उन्होंने चीफ मिनिस्टर का कह दिया ''नोमीनेटिड सी.एम.''। मैं आज दावे के साथ कहता हूं कि हमारा चीफ मिनिस्अर नीमिनेटिड नहीं है। हमारा चीफ मिनिस्टर तो चुना गया चीफ मिनिस्टर है। (तालियां) हम चुनकर आए हैं ओर हम चुनकर चीफ मिनिस्टर बताते हैं। हम खुल तौर पर कहना चाहते हैं कि ऐसी औछी बातें, ऐसी छोटी बातें बड़े आदमियों के मुंह से शोभा नहीं देती हैं। मैं तो एक

मजदूर लीडर हूं। बड़ी सीधी सी बात सुनना जानता हूं और सीधी सी बात सुनाना भी जानता हूं। हरियाणा क्या था पहली नवम्बर, 1966 को? हरियाणा जब पैदा हुआ, वजूद में आया, तो यह क्या था? हमारे पास मुलाजिमों को पैसा देने को नहीं था, एक लाख क्विंटल अनाज केन्द्र से लेते थे और सन् 1967–68 तक यह हालत थी कि इसे आया राम और गया राम का प्रदेश कहा जाता था। वे आया राम गया राम कोन थे? वे आज विरोधी दल में बैठें हैं। मैं सबको नहीं कहता लेकिन जो लोग थे वे समण लें। इन हालात में स्पीकर साहब सन् 1968 का वह शुभ दिन आया जब हमारी प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने हरियाणा की जनता से एक आश्वासन किया कि अगर आप अपने इस प्रदेश में कांग्रेस की सरकार बनाएंगे तो जनता की भलाई के लिए बहुत कुछ कार्य किया जाएगा। सन् 1968 में चौ. बंसी लाल ने हरियाणा की बागडोर संभालीं उस समय हरियाणा कया था वह मैंने आपको बताया। उसके बाद क्या हुआ? केन्द्र से पैसा मिला ओर इस कदर पेसा मिला जो प्रंशसनीय है। चौं. बंसी लाल की सूझबूझ की बुनियाद पर नए हरियाणा की प्लानिंग हुई। हरियाणा की टापोग्राफी आप देखें। एक ओर पहाड़ हैं, दूसरी ओर रेगिस्तान है, तीसरी तरु सेम का इलाका है। हमारी कोई नदी नहीं, हमारे कोई पहाड़ नहीं लेकिन इसके बावजूद भी एक नई प्लानिंग बनाई गई। जुई कैनाल, इन्दिरा गांधी कैनाल, बीरेन्द्र नारायण चक्रवती कैनाल और जवाहरलाल नेहरू कैनाल को बनाने का चिरस्मरणीय कार्य इस दौरान हुआ। हमारी उइान सिंचाई स्कीम तो एशिया में अपनी

ही किस्म की एक योजना है। इससे 570 फुट की ऊंचाई तक पानी जाएगा। आज दुनियां के लोग इसे देखने आते हैं। आज ये हरियाणा की बात करते हैं कि हरियाणा में क्या किय महज इसलिए कि विजिटर गैलरी में बैठे लोगों को बरगलाया जाए। प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत है?इस प्रानत की 76 लाख की आबादी होती थी जो आज एक करोड़ सोलह लाख की हो गई है। क्या आज हम केन्द्र को अनाज नहीं देते? क्या हरियाणा के काश्तकार ने मेहनत नहीं की है? क्या हरियाणा की सरकार ने योजना नहीं बनाई जिससे हरियाणा आगे बढ़ा। मैं इन बातों पर ज्यादा नहीं जाना चाहता क्योंकि मेरे साथी इन बातों पर बहुत कुछ बोल चुके हैं। लेकिन दो तीन बातों अध्यक्ष महोदय मैं जरूर आपकी मारफत सदन के सामने रखूंगां हमें फिसकल प्रायरिटी मुकर्रर करनी पडऋती है। हमारे तीन सैक्टर्ज हैं। प्राईमरी सैक्टर ऐग्रीकल्चर है, सैकेंडरी सैक्अर इंडस्ट्रीयज है और टर्सरी सैक्टर सर्विसीज हैं हमारा देश कृशि प्रधान है और यह प्रदेश भी कृशि प्रधान है। इसलिए हमारे यहां प्राईमरी फिसकल प्रायरिटी ऐग्रीकल्चर को दी गई। उस प्रायरिटी की बुनियाद पर हरियाणा के बजट का काफी हिस्सा ऐग्रीकल्चरल सैक्टर पर खर्च किया जाता है। जब हरियाणा की बागडोर चौ. बंसी लाल ने संभाली तो उन्होंने भी ऐग्रीकल्चार की डिवैल्पमैंट के लिए प्रायरिटी दी इलैक्ट्रिसिटी को। गांव गांव में इलैक्ट्रिसिटी पहुंचा दी सन् 1970 में। हरियाणा पहला प्रदेश था देश का जिसने सन् 1968 में चौ. बेसी लाल के बागडोर संभालने के बाद दो साल के छोटे से अर्से

में गांव–गांव में बिजली पहुंचाई। जैसा मैंने पहले अर्ज किया कि उस वक्त हमारे पास कोढ नहर नहीं थी। हमारे पास केवल एक नदी है जमुना ओर वह भी एक बार्डर बन कर चलती है। इस कमी को पूरा करने के लिए चो. बंसी लाल ने टयूबवैल्ज लगावाए और नहरें खुदवाई। इसी तरह आवागमन के साधन मुहैया करने के लिए हरियाणा के 70 प्रतिशत गांव को सड़कों से मिला दिया गया। इतना जल्दी यह सारा काम हुआ जो देश भर के लिए एक उदाहरण है। अब जाकर के पंजाब में गांव–गांव में बिजली पहुंची है लेकिन हरियाणा वह प्रदेश है, जिसके पैदा होने के मौके पर लोग हंसते थे कि पता नहीं यह अपने कर्मचारियों को वेतन भी दे पाएगा या नहीं, जिसने दो साल के दौरान गांव गांव में बिजली पहुंचाई। उस बिजली की बुनियाद पर टयूबवैल्ज लगे। इनकी संख्या पहले हजारों में थी लेकिन थोड़े ही समय में यह लाखों में पहुंच गई। अनाज हम केन्द्र को देते हैं। केन्द्र को ही नहीं दते बल्कि ऐक्सपोर्ट भी करते हैं। आज हमारा चावल फारेन में जाता है। अध्यक्ष महोदय, ये सारी चीजें जनता के सहयोग से, सरकार की सूझबूझ से और अधिकारियों की हिम्मत से हुई हैं ओर हरियाणा आगे बढ़ हैं आज ये लोग एक हवा की बुनियाद पर खुशी मना रहे हैं लेकिन याद रखें कि ये दिन ज्यादा देर नहीं रहेंगे। जनता समझती है जो तरक्की यहां हुई है ओर इस प्रदेश के अन्दर जो बातें जनता की खुशहाली के लिए कांग्रेस सरकार ने की। हमारी जनता यह भी जानती है कि केन्द्रीय सरकार ने, जिसकी नेता इन्दिरा गांधी थी, पैसा दे कर हमारी सरकार को

मजबूर किया जनता की भलाई के काम करने के लिए। जनता इस बात को भूलेगी नहीं। यह तो एक तूफान आ गया और निकल गया।

स्पीकर साहब, जो जो बातें यहां हुई हैं उन सब बातों का खुलासा राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाशण में दिया है और उन्होंने बताया है कि हरेक सैक्अर में क्या क्या हुआ है चाहे वह इंडस्ट्रीयल सैक्टर है या चाहे ऐग्रीकल्चरल सैक्टर है। ट्रांसपोर्ट के सिलसिले में भी हमने काफी तरक्की की है ओर टूरिजम में भी बहुत तरक्की की है। भला टूरिजम की तरक्की को हम क्यों न मानें? हरियाणा बीच मे ंआता है दिल्ली ओर काश्मीर के तथा दिल्ली ओर पंजाब के। लोग काश्मीर देखने के लिए जाते हैं। रास्ते में ठहरेंगे कहां? जी.टी. रोड़ हरियाणा के मध्य से गुजरती है। टूरिस्ट लोग बहार क देशों से भी आते हैं और हमारे देश के दूसरे भागों से भी आते हैं। हमारी सरकार ने सोचा कि यदि हम जी.टी. रोड के आसपास होटल और मोटल आदि बना दें ओर कुछेक पिकनिक स्पोटस डिवैल्प कर दें तो वे लोग बड़े आराम से ठहर सकंगे ओर हमारी खुशहाली को देख सकेंगे। इसके लिए हमने बहुत से कदम उठाऐ हैं और उनकी वजह से हमारा टूरिज्म इतना आगे बढ़ा है कि आज हम यू.पी. को भी ऐडवाइज करते हैं। यही नहीं हमारे माईनर इरीगेशन कार्पोरेशन ने तो बिहार में जाकर भी टयूबवैल्लज लगाए हैं। ये सब समझते की चीजें हैं कि हमने न सिर्फ अपनी तरक्की की है बल्कि अपने पड़ोसी प्रदेशों की

तरक्की में भी योगदान दिया है। ये बातें देखने की हैं। ये बातें देखने की नहीं हैं कि हम जीत गए और कांग्रेस हार गई। मैं तो नया–नया एम.एल.ए. हूं। हमारे पास बड़े–बड़े स्टालवर्टस बैठे हुए हैं लेकिन वे तो वह बात करते हैं जैसे 100 चूहें खाकर बिल्ली हज को चली। अपने दिन तो वे भूल गए। जरा ये लोग बताएं कि चौ. देवी लाल जी ने जो ज्वायंट पंजाब में चीफ पार्लियामैंटरी सैक्रेटरी होते थे उस समय हरियाणा के लिए क्या किया था। मैं सनृ 1954 में यहां आयां मैंने सच्चर साहब की मिनिस्ट्री देखी और मैंने प्रताप सिंह कैरो की भी मिनिस्ट्री देखी। मैं लेबर लीडर के तौर पर यू.पी. से यहां आया। चौ. रिजक राम उस वक्त पंजाब में इरीगेशन एंड पावर मिनिस्टर थे। ये ही जरा बता दें कि इन्होंने उस वक्त हरियाणा की भलाई क लिए क्या क्या काम किए थे? जब ये अपने समय में तो कुछ कर नहीं सके तो मैं कहता हूं कि जब हरियाणा का विकास हो गया तो उसकी नुक्ताचीनी करना और सच्ची चीज को नजर अन्दाज करना ठीक बात नहीं है। अध्यक्ष महोदय, आप जानते है कि सोये हुए को जगाना तो आसान बात है लेकिन जगे हुए को जगाना मुश्किल है। हमें तो ये जगे हुए जगाने पड़े रहे हैं। यह हमारे लिए मुश्किल बात है। अध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा समय न लेते हुए एक दो बातें ओर कहूंगा जहां तक सिविल लिबरटी का सवाल हैं। यहां पर सिविल लिबरिटी क नारे दिये जा रहे हैं। कहते हैं कि शासन को भंग कर दो क्या यही सिविल लिबरटी है। आम जनता के लिए अनाज बन्द कर दो, होर्ड कर दो, स्मगलिंग कर दो, जमाखोरी करो क्या

यह सिविल लिबरटी है? क्या आम जनता इस बात को नहीं समझेगी कि इनके मन में क्या सिविल लिबरटी है? हमारे भाइयों के ऊपर जलूस में जूते फैको, गन्दी बातें करो, औरतों के खिलफ बोलो, क्या इसी बात को ये सिविल लिबरटी समण्ते हैं? क्या यही इनकी धर्म है? यहां पर धर्म की बात बोलते हैं और राजघाट पर जा के शपथ लेते हैं ओर तरह तरह की बातें करते हैं। गांधी जी के नाम पर तरह तरह की दुहाई करते हैं और फिर सिविल लिबरटी की बात करते हैं। आज जनता खुद समझेगी, हम क्या समझते वाले हैं। जनता खुद समझ रही है, वह तो दूरबीन लगाकर देख रही है कि इस देश का क्या हाल होने जा रहा है?

दूसरी बात मैं अपने हरियाणा के बारे में कहना चाहता हूं। एक तो हमारे टीचर्ज का मामला है। वे यह महसूस करते है कि सभी की डी.ए. पूरा मिलता है लेकिन हमें नहीं मिलता, हमारे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? उनका अभी तक डी.ए. रेस्टोर नहीं हुआ। राम किशन मिनिस्टरी के टाईम पर डी.ए. पपर कट लगायी गई थी, आजतक यों की यों वह कट चली आ रही है। पंजाब में तो डी.ए. रेस्टोर हो गया लेकिन हरियाणा में आज तक नहीं हुआ। मेरी आपके द्वारा चीफ मिनिस्टर साहब से दरखास्त है कि टीचर्ज का डी.ए. रेस्टोर किया जाये। वे भी हमारे भाई हैं, उनके ऊपर हमरे आने वाले बच्चों का भविश्य निर्भर करता है।

कुछ वर्श पहले हरियाणा में गवर्नमैंट एम्पलाइज ने हड़ताल की थी। उस हड़ताल का पैसा आज तक नहीं मिला।

सरकार ने ओर चीजें तो सारी कनडोन कर दी परन्तु उनको हड़ताल के दिनों की तन्खाह नहीं मिली, वह भी दे देनी चाहिएं कोई ऐसी बात नहीं है, हमें इनकी ओर भी देखना चाहिए। तीसरी बात स्टाइपेंडरी टीचर्ज के बारे में है। जो टीचर्ज स्ट्राइक के दौरान लगाये गये हैं उनको अभी तक रेगूलर नहीं किया गया। रेगूलर न होने के कारण से उनके ट्रांसफर भी नहीं होते हैं। उन्होने हड़ताल के दौरान सरकार का सहयोग दिया ओर हमारे बच्चों का भला कियां जिस तरह से हमारे मुख्यमंत्री जी ने बड़ी फराखदिली से प्रोफेशनल टैक्स माफ कर दिया इसी तरह से एक दफा फराखदिली से उनको भी रेगूलर करने की कृपा करेंगे। यह दो चीजें मैंने टीचर्ज के बारे में अर्ज की हैं उन पर सरकार अवश्य गौर करेगी क्योंकि काफी बड़ी तादाद में 55–60 हजार टीचर्ज हैं। उनके परिवारों का गुजारा ठीक प्रकार से चल सकेगा। वे हमें दुआयें देंगे। हमें दुआयें लेने की जरूरत नहीं है। हम काम करते जायेंगे, बेशक बददुआयें दें। हम तो जानते हैं। न्याय करने वाला भगवान है–

जतेा धर्मा ततो जयः

सत्यमेव जयते।।

हमेशा सच्चाई की जीत होती है। उसी सच्चाई पर कांग्रेस की बुनियाद है। गांधी जी सत्य और अहिंसा के असूल पर चले थे उसी पर यह कांग्रेस चल रही है। आज इनका झण्डा

देखिए और हमारे को देखिएं हमारा तिरंगा झण्डा है उसमें भगवा, हरा और सफेद रंग हैं। इन्होंने अपना झण्डा दुरंगा कर दिया, सफेद निशान को हटा दिया। सफेद शान्ति का प्रतीक है लेकिन ये विरोधी दल वाले शान्ति नहीं चाहते इसलिए इन्होंने इस निशान को हटा दिया, शान्ति के प्रतीक को हटा दिया है। ये शान्ति नहीं चाहते, अशान्ति चाहते हैं। यह तो इनका हाल है। मैं ज्यादा न कहता हुआ, राज्यपाल महोदय के अभिभाशण पर धन्यवाद के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए और आपका धन्यवाद करते हुए अपना स्थान लेता हूं।

**चौ. शिव राम वर्मा**: स्पीकर साहब, क्या मुझे टाईम नहीं मिलेगा?

**श्री अध्यक्ष**: आपको भी टाईम मिलेगा।

**शिक्षा मंत्री** (पंडित चिरंजी लाल शर्मा): स्पीकर साहब, मेरा बोलने का विचार तो इतना नहीं था लेकिन कुछ दोस्तो ने तनजन कहा कि क्यों मोहरे खामोसी लगाये बैठे हो, बोलते ही नहीं हो। ट्रेजरी बैंचिज की तरफ से सिर्फ मुख्यमंत्री जी ही जवाब देते हैं तो मैंने अपना फर्ज अव्वलीन समझा कि कुछ गलतफहमी को दूर करूं। स्पीकर साहब, बड़े गौर से उनकी तकरीर को सुना जो विरोधी दल के माननीय सदस्य कल से इस सदन में कर रहे हैं। किसी डैमोक्रेसी में सरकारी पार्टी, हकूमती पार्टी ओर अपोजीशन पार्टी एक साइकिल के दो पहिए होते हैं। मैं यह

समझता हूं कि एक हैल्दी डेमोक्रेसी मं एक अच्छी अपोजीशन का होना निहायत जरूरी है मगर दुर्भाग्य की बात है कि अपोजीशन बतौर खूबसूरत अपोजीशन के अपना रोल अदा नहीं करती जा रही है।

स्पीकर साहब सन् 1962 में अर्स्टवायल पंजाब में मैं मैम्बर असैम्बली बन कर आया था और इंडिपैन्डेन्ट कैपेसिटी में आया था और तमाम पंजाब में से सब ज्यादा राय लेकर आया था। हमने एक प्रोग्रेसिव इंडिपेन्डेन्ट पार्टी बनायी यानी मेन अपोजीशन। मैंने उस पार्टी का सैक्रेटरी बना और पांच साल तक सैक्रेटरी रहा। मैं जानता हूं कि कितना दबाव मुझ पर डाला गया, कितने डोरे मुझ पर डाले गये, मुझे बुलाया गया कि कांग्रेस में आ जाओ। सरदार प्रताप सिंह कैरों जिनदा नहीं हैं लेकिन उनके दस्तेराज पंडित मोहन लाल आज भी मौजूद हैं वे तीन दफा मेरे घर गये और कहने लगगे कि सरदार साहब कहते हैं कि पंडित जी को कांग्रेस में ले आओ, हम उनको वजीर बना देंगे। मैंने कहा कि मुझे आजाद हैसियत से इलैक्ट्रोरेट ने चुनकर भेजा है, मैं उनके साथ विश्वासघात नहीं करूंगा, चोला नहीं बदलूंगा और ट्रेजरी बैंन्चिज पर जाने का स्वप्न नहीं लूंगा। पांच साल तक मैं अपोजीशन बैंचिज पर ही रहा। मुतहदा पंजाब में बड़ी स्ट्रौंग अपोजीशन थी। 90 ट्रेजरी बैंचिज में थे और 64 मैम्बर अपोजीशन में आये थे। उन दिनों चौ. देवी लाल, जस्टिस गुरनाम सिंह आदि भी अपोजीशन में होते थे लेकिन कोई दूसरी तरफ जाने का नाम

तक नहीं लेता था। सबने पांच साल तक अपने अपने कर्तव्य का पालन किया और आज आप देख रहे हैं क्या हाल हो रहा है? स्पीकर साहब हमारे विरोधी दल के भाई 29 अपोजीशन के आये थे और 52 कांग्रेस बैंचिज पर आये थे और 29 में से इमीजीएटली आफटर दी इलैक्शन कांग्रेस में आने की सोचने लगे।

स्पीकर साहब राज्य सभा का इलैक्शन हुआ। उसका नतीजा आपके सामने है। विरोधी दल की तरफ से चौ. देवी लाल जी खड़े हुए थे। विरोधी दल के भाई बड़े आराम से एक मेम्बर बना सकते थे लेकिन सिर्फ दस राय उनको मिली। कांग्रैस पार्टी ने श्री कृश्णकान्त को खड़ा किया था और दूसरे चौ. रणबीर सिंह को खड़ा किया था, इस ख्याल से कि शायद कुछ राय मिल जायेंगी और उनको मिली। कांग्रेस के दोनों केन्डीडेंट राजय सभा के लिए चुने गये। मैं इस सिलसिलें में आपको बताऊ जिन दिनों में मुतहदा पंजाब में मेम्बर था, हमने लाला जगत नारायण को राज्यसभा के लिए अपोजीशन से खड़ा किया था। पंडित मोहन लाल और पंडित भगवत दयाल ने मुझे दिल्ली कैनाल रैस्ट हाउस में बुलाया। मैंने उनसे फरमाया, बताईये किस लिए याद किया है। मेरे उनके साथ जाती तौर ताल्लुककात थे, उन्होंने कहा कि आप जगत नारायण को मेम्बर बनाना चाहते हैं, यह तो बहुत बुरी बात है। उन्होंने कहा कि मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप जगत नारायण को राय न दें। मेरा एक ही जवाब था कि पंडित जी मेरे दिल में आपका बड़ा अहतराम है लेकिन मैं अपोजीशन का सैक्रेटरी

हूं, आप ये चाहते है कि मैं विश्वासघात करूं हमारी पार्टी ने खड़ा करने का निर्णय ले लिया है, मैंने सिर्फ उनको राय दूंगा बल्कि डट कर बनायेंगे और हमने लाला जगत नारायण को बनाया। अभी चौ. देवी लाल जी यहां पर नहीं हैं, मैं उनसे यह हां भरवाया कि प्रोफेसर शेर सिंह असैम्बली का चुनाव हार गये थे। उनको हमारी पार्टी ने अपर हाउस के लिए खड़ा कर दिया। रात के पौने दो बजे एम.एल.ए. होस्टल में आकर मुझे देवी लाल जी ने जगाया कि पंडित जी इज्जत का सवी हैं। मैंने कहा चौ. देवी लाल क्या बात है? उनका ख्याल था कि पंडित श्री राम शर्मा ने मुझसे यह कह दिया होगा कि प्रोफेसर शेर सिंह को राय न दी जाये। मैंने चौ. देवी लाल जी को कहा कि आप मेरे कैरेक्टर से वाकिफ नहीं, मेरी राय प्रोफेसर शेर सिंह की है। मैं अपोजीशन का सैक्रेटरी हूं। यह तो हमारी नामोसी है। क्या आप हमें इतना कच्चा समझते हैं, क्यों हमारी जीयत पर आप शुबाहा करते हैं। यह दुर्भाग्य से यहां विराजमान नहीं हैं, वरना उनसे इन सभी बातों की हां करवाता, हमने प्रोफेसर शेर सिंह को 3/4 राय की मेजोरिटी लेकर जिताया। एक तो यह कैरेक्टर था और एक यह आज का कैरेक्टर है। मैं किसी व्यक्ति की जात पर हमला नहीं करता। जब इलैक्शन हुआ तो 29 मैम्बर अपोजीशन के बन कर आये थे और असैम्बली खुलते ही मैंड रेस चली जैसे कि रेलवे स्टेशन पर गाड़ी खड़ी है उसमें बिना टिकट लिए हुए ही जो चाहें चढ़ जाओ। असैम्बली मीट करने से पहले ही कभी हरियाणा भवन में, कभी कहीं कदमबोसी करनी शुरू कर दी कि हमें कांग्रेस में ले लो, हमें

कांग्रेस में ले लो। मैं नहीं समझता कि अगर उन लोगों ने जनता के साथ विश्वासघात नहीं किया तो क्या किया? (तालियां) आज ट्रेजरी बेचिंज वालेां को ये कहते हैं कि कुर्सियां छोडऋ दो कि जनता ने फतवा दे दिया है, पार्लियामेंट के इलैक्शन में हार गये हो। हिन्दुस्तान की जनता ने कांग्रेस के खिलाफ फतवा दिया है, हमने बड़ी खूबसूरती से उसको तसलीम किया है।

हमारी पार्टी की महान नेता, देश की महान नेता और हमारी भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने किस खूबसूरती से हैंडओवर किया है। जहां तक असैम्बली इलैक्शन का ताल्लुक है, वह तो मैदाने कारगुजारी में पता चलेगा, लड़ाई के मैदान में फिर दो–दो हाथ होंगे। अगर हरियाणा की जनता असैम्बली के इलैक्शन में हमारे खिलाफ फतवा देगी तो हम उसके सामने सिर झुका देंगे?

**चौ. भजन लाल**: सिर नहीं झुकाओंगे तो क्या करोंगे?... ..(व्यवधान).....

**श्री बनारसी दास गुप्ता**: और तरीका भी क्या है सरकार बदलने का? .....

**पंडित चिरंजी लाल शर्मा**: स्पीकर साहब, मैं यह कहना चाहता हूं कि–

चमन बहार लुटाकर चमन नहीं रहता,

बतन न कहियें उसको जो वतन नहीं रहता।

मुरझाया हुआ फूल और चली हुई गोली एक समान होती है। मुरझाये हुए फूल में वह खुशबु नहीं रहती जो पहले थी, और न ही उस गोली में दागने की ही ताकत रह जाती है। चाहे लाख कोई चली गोली को दागने की कोशिश करे मगर वह कोई नुक्सान नहीं पहुंचा सकती।

हकीकत से आशनां हूं वाकफे इकरारे हस्ती हूं।

समझता हूं मगर दुनियां को समझाना नहीं आता।

गुजारिश यह है कि मेरे माननीय साथी चौ. भजन लाल आज अपोजीशन के बैंचिज पर जलवे फरीशां हैं। मेरे दिल में उनके लिये बहुत अहतराम है। मैं उन पर कोई जाति हमला नहीं करूंगा। दूसरे जो अपोजीशन के मैम्बरान है, उनके लिये भी मेरे दिल में इज्जत हैं। वह इन बैचिज पर चुनकर आये हैं। मैं चौ. भजन लाल जी से जो आज हमें यह कहते हैं कि इस्तीफा दे दो, यह पूछना चाहता हूं कि वह अपने सीने पर हाथ रखकर देखें कि उनके सीने की क्या आवाज है? इस्तीफा उन्हें देना चाहिए न कि हमें। (व्यवधान) ..... इसलिये इस्तीफा अब आपको देना चाहिये। (व्यवधान)

**चौ. भजन लाल**: दो हल्कों से कांग्रेस जीती है मगर बाकी सब जगहों से हारी है। .....

**पंडित चिरंजी लाल शर्मा**: स्पीकर साहब, अपोजीशन के रोल के बारे में कुछ कहूं तो मेरे अपोजीशन के भाई मुझे माफ

करेंगे। मैं आपकी इजाजत से यह अर्ज करना चाहता हूं कि जब एक माननीय सदस्य के खिलाफ प्रिविलेज कमेटी की रिपोर्ट इस सदन में आयी और उसके द्वारा यह फैसला कर दिया गया कि उनको हाउस की मैम्बरी से हटा दिया जाये तो यह लोग कहां थे? मैं ये पूछना चाहता हूं कि हरियाणा की अपोजीशन में से किस अपोजीशन के मैम्बर ने उस रैज्योलूशन का विरोधी किया था। जिस मैम्बर को हटाया गया था वह अपोजीशन के थे? उस वक्त कितने ही आदमी अपोजीशन के यहां पर थे लेकिन क्या किसी ने उसका विरोध किया? (व्यपधान).....आप हाउस की प्रोसीडिंग्ज निकाल कर देख लें। हाउस की प्रोसीडिग्ज आपके सामने हैं। स्पीकर साहब, मैं उन्हें बड़े अदब के साथ यह कहना चाहता हूं कि शीशें के महल में बैठकर दूसरों पर पत्थर मारना अच्छा नहीं लगता। हमारी बदकिस्मती यह है कि जो हमारे अपोजीशन के भाई यहां अपोजीशन के बैन्चिज पर आये, उनमें पता नहीं क्यों कमजोरी है? कमजोरी क्या है—छोटे छोटे काम करवाने की। वे यह सोचते हैं कि अपोजीशन में रहेंगे तो काम नहीं होंगे। मैं हाउस की इन्फर्मेशन के लिये यह बता देना चाहता हूं कि मैं अपोजीशन का सैक्रेट्री था जिस वक्त पंजाब में स्कूल अपग्रेड करने का सवाल आया। श्री प्रबोध चन्द्र उस समय एजुकेशन मिनिस्टर होते थे। उन्होंने काह कि एक एम.एल.ए. का एक स्कूल अपग्रेड होगा, कोई सा करवा लो। लेकिन मैं यहां पर यह बाता देना चाहता हूं कि मैं ही वह शख्स था जिसने अपने इलाके गन्नौर में 12 स्कूल अपग्रेड करवाये थे। Maximum number of schools were upgraded in my

constitutency मैंने किसी की खुशामदनहीं की और न ही किसी की चापलूसी की और न ही किसी को यह विश्वास दिलाया कि मैं कांग्रेस में आऊंगा। अगर ये इकट्ठे रहे और मेरी तरह करते तो कोई वजह नहीं थी कि इनके 29 सदस्य चुनकर आये थे जोकि अब घटकर 18 रहे गए हैं इनकी बात कोई न सुनता। 18 भी तब हो एग हैंजब कि हमारे कुछ भाई महीना–बीस दिन पहले हमसे नाराज होकर उधर चले गये। जैसे मैंने अर्ज किया कि अपोजीशन का होना बहुत जरूरी है ताकि बरसरे इकतदार पार्टी के अन्दर कहीं ताकत का नशा न आ जाये। जो उनमें गलतियां आ जायें, जो उनकी नालायकियां हों, जो उनकी खामियां हो, वह उन्हें प्वायंट आउठ करें। तो मेरा कहने का मतलब यह है कि अपोजीशन का यह फर्ज बनता है कि वह हमारी गलतियां प्वायंट आउट करे और हमारे कान खीचे लेकिन यह अपना फर्ज निभाने में नाकामयाब रहे है। इस सदन के सामने कुछ दिन पहले गवर्नर एड्रैस पढ़ा गया और आज कुछ दिनों के बाद उस पर डिस्कशन हो रही है। उन्होंने जो इल्जामात लगाये हैं, उनको यह पता है कि उनका हमने जवाब देना है। आपने देखा है कि इन दो दिना के अन्दर लगाये गये इज्जामात का जवाब सुनने के लिये कितने मैम्बरों की दिलचस्पी है। वे लोग तो अपनी बात कह कर यहां से चले गये लेकिन उनका जवाब सुनने के लिये उनका होना बड़ा लाजमी था। मैं यह कह रहा था कि हमारी राजनीति इतनी नीची सतह तक जा चुकी है कि उसमें व्यक्तिगत तौर पर यानी जाति तौर पर हमले किये जाते हैं। एक आदमी को निशाना बनाकर उस

पर अटैक किया जाता है। मैं किसी भाई का नाम नहीं लेता? लेकिन क्या यह राजनीति है? हमारी पार्टी पर आप कटाक्ष करें, हमारी पालिसी पर आप कटाक्ष करें लेकिन एक व्यक्ति को निशाना बनाकर कटाक्ष करना कहां की शोभा की बात है? मेरे विचार से ऐसा नहीं होना चाहिये। मैं नहीं बोलना चाहता था लेकिन कल एक माननी य सदस्य ने यहां पर यह जिक्र किया कि इस राज्य के मिनिस्टर के खिलाफ इस एमरजैन्सी के दौरान जलूस निकलता है और उसके खिलाफ नारे लगते हैं। स्पीकर सहाब, वह मंत्री मैं ही था। मेरे ही खिलाफ नारे लगे थे कि 'चिरंजी लाल की क्या पहचान, लुच्चा गुण्डा और बेईमान।'' मेरी अपनी कांस्टीच्यूएंसी सोनीपत में जिसका मैं नुमान्यदा हूं, यह नारे लगे थे। लेकिन सपीकर साहब, आप हमारी यह फिराखदिली देखिये, जमहूरियत पर अमल देखिये कि हमारे पास ताकत थी, पुलिस कप्तान था, डिप्टी कमिश्नर भी था, लेकिन हमने उनको कुछ नहीं कहा। मैंने कहा कि यह नादान बच्चे हैं, इनको कुछ नहीं कहना हैं लेकिन शायद यह बात हमारे अपोजीशन के भाइयों को बर्दाश्त नहीं थी यह नहीं चाहते थे कि मेरी कार पर झण्डा लहराये। गुप्ता जी उन दिनों हास्पिटल में थे। जब मैं इनसे मिलने के लिये कर्टसी काल पर गया तो गुप्ता जी मेरे से कहने लगे कि आपने उनको गिरफतार क्यों नहीं करवा दिया? मैं इन्हें यह साफ कर देना चाहता हूं कि मैं अगर बेईमान हूं तो मुझे राजनीति में जिन्दा रहने का कोई हक नहीं है। मैंने अगर 5 रूपये तो बहुत बड़ी बात है, 5 पैसे की भी हेरा–फेरी की तो मैं राजनीति छोड़ दूंगा। मुख्यमंत्री जी के नोटिस

मैं जब यह बात आयी और जब मैं उनके पास मिलने के लिये अस्पताल गया तो उन्होंने कहा कि वे कौन–कौन हैं, मुझे नाम बताओं, आई.जी. को कहकर अभी पकड़वाला हूं। मैंने उनसे कहा गुप्ता जी, नादान बच्चे हैं, वे बहकाये गये हैं। उनको गिरफ्तार करवा कर कल छुड़ाने के लिये भी फिर मुझेही आपकी खुशामद करनी पड़ेगी। वे तो नादान बच्चे हैं, कुछ आदमियों ने उनको गुमराह कर दिया। मेरी तो उससे सोनीपत में इज्जत बढ़ी है। शादय एक लाख रूपया खर्च कर प्रोपेगण्डा करवाता तो भी मुझे शायद उतना सम्मान नहीं मिलता जितना इनकी इस नारेबाजी से मिला है। लेकिन मुख्यमंत्री जी यह कहने लगे कि नही, अभी आई. जी. से कहता हूं। मैंने इनकी बड़ी खुशामद की कि अप कृपया इसे जाने दें। तक यह कही मानें। लेकिन फिर 19 तारीख को गोहाने के तीन ट्रक लाये। फिर नारेबाजी की। मैंने मुख्यमंत्री जी से कहा कि सोना जितना तपेगा उतना ही ज्यादा चमकेगा, सुरमा जितना छिसाओगे उतना ही आंखों के लिये लाभदायक रहेगा और मेंहदी जितना रगड़ोगे उतना ही ज्यादा रंग देगी। स्पीकर साहब, मैंने उनसे यह कहा कि जितना हमारा विरोध होगा उतनी ही यहां पर पार्टी को इज्जत बढ़ेगीं स्पीकर साहब मैं इस बारे में यहां पर कुछ भी नहीं कहना चाहता था लेकिन हमारे एक भाई ने जब यह कहा कि हमारी स्टेट में एक मंत्री की यह पोजीशन थी तो मुझे यहां पर बोलना पड़ा। हमारी पार्टीकी फराखदिली थी, महात्मा गांधी ने यह रास्ता दिखाया था जिसकी पार्टी से हम ताल्लुक रखते हैं। उस महात्मा ने अहिंसा का रास्ता दिखाया था जिसकी

पार्टी से हम ताल्लुक रखते हैं। उस महात्मा ने अहिंसा का रास्ता अपनाया और इतने बड़े राज्य का यहां से सफाया कर दिया जिसकी सलतनत में कभी सूरज छिपता भी नहीं था। यह नीति हमने गांधी जी से सीखी वरना ये जो नारेबाजी करने वाले कच्ची उम्र के कालिजों में पढ़ने वाले बच्चे थे उनको जेल की सलाखों में बन्द कर दिया जाता। लेकिन डेमोक्रेसी के अन्दर लोगों को यह अधिकार है कि वे अपने रोश को जाहिर करें। हमने उनको मौका दिया कि अगर हमारे अन्दर को त्रुटि हैं तो वे बताएं। जहां तक नारेबाजी का ताल्लुक है, मैं किसी पर आक्षेप नहीं करता, आपने अखबार में पढ़ा होगा और रेडियो पर भी सुना होगा कि बाबू जगजीवन राम की कोठी पर नारे लगे, जनता पार्टी मुर्दाबाद और मुरारजी देसाई जो हमारे प्रधानमंत्री हैं और जो पक्के गांधीवादी हैं जिनके लिए हमारे मन में बहुत श्रद्धा है उनकी कोठी पर भी नारे लगे सी.एफ.डी. मुर्दाबाद। जार्ज फर्नांडिज के खिलाफ भी नारे लगे। स्पीकर साहब, डेमोक्रेसी के अन्दर किसी की जुबान पर लगाम नहीं लगाई जा सकती। स्पीकर साहब, हमारी फराखदिली का तो यह आलम है कि ये इलेक्शन करवाए गए वरना अभी टाइम रहता था। अपोजीशन वाले कहते थे कि इलेक्शंज में बड़ी भारी बिकरिंग हो रही है, गवर्नमैंट मशीनरी यूज की जा रही है, डिप्टी कमीश्नर और पुलिस कप्तान इसमें दखल अन्दाजी कर रहे हैं। लेकिन आज वही अपोजीशन बेन्चिज हमारे सोर एडमिनिस्ट्रेशन को खराजे अकीदत पे करते हैं और उन्होंने कहा है कि Credit goes to the treasury benches not to these benches. स्पीकर साहब,

इलेक्शंज के दौरान सारे हिन्दुस्तान मे आपको कोई मिसाल नहीं मिलेगी कि कांग्रेस ने कहीं पर भी विरोधी दल के जलसों को डिस्टर्ब किया हो। कहा जाता है that every thing is fair in love and war. इस चीज को सामने रखकर ये लोग चूंकि बहुत निराश हो चुके थे, गड़बड़ करनी शुरू की। मैं गांवों में गया वहां पर जनता पार्टी जिन्दाबाद के नारे लगते थे। मैंने कहा कि बच्चों का अधिकार है। बच्चों का जिस तरह सिखाया जाता है वे कहने लगते हैं लेकिन मैंने कहा कि किसी के जलसो ंमें गड़बड़ न करो। मैंने कहा कि मैं आज वजीर की हैसियत से नहीं आया हूं मैं तो एक कांग्रेसी के कार्यकर्ता की हैसियत से आया हूं। स्पीकर साहब, मेरी कार पर रोड़े फैंके गए। वह ड्राईवर को लगा, मेरे पी.ए. को पत्थर लगा। मैं हरिजनों की चौपाल का उद्घाटन करने के लिए गया। मैं वहां राय नहीं मांगने गया था। वहां पर दस–बारह लड़कों ने डले फैंके। मेरे एक साथी ने कहा कि पर्चा रजिस्टर कराओ। मैंने कहा नहीं इनको कुछ लोगों ने गुमराह कर दिया अरग इनको पकड़ा जाएगा तो इनका नुक्सान होगा। सोनीपत के शहर की 85 हजार की आबादी है। शहर में जलसे हुए। वहां पर कोई नाराजगी इलेक्शन के दौरान डिमोरेलाइज करने की कोशिश नहीं की लेकिन बहुत जगहों पर ईटें बरसी, मीटिंगे डिस्टर्ब की गई लेकिन हमने फराखदिली से पुलिस वालों को कहा कि बैठ जाओ। आपको कुछ करने की जरूरत नहीं है। स्पीकर साहब, इलैक्शन के दौरान सरकार ने, हमारी पार्टी ने न सिर्फ हरियाणा प्रान्त में बल्कि हिन्दुस्तान की सरकार ने बड़ी फराखदिली और जिन्दादिली का

सबूत दिया है। हम तीस साल तक बरसरे इकतदार रहे हैं। कोई सारी जिन्दगी का सबूत दिया है। हम तीस साल तक बरसरे इकतदार रहे हैं। कोई सारी जिन्दगी का हमने ठेका नहीं लिया है। हमारी नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी के बारे में कहा जा रहा था कि यह इलेक्शन नहीं करवाती, यह डिक्टेटर बनना चाहती हैं। उस बहादुर बाप की बहादुर बेटी ने कितना दिलेराना फैसला किया यह कोई छोटी बात नहीं थी। पार्लियामेंट एक साल तक और चल सकती थी। उन्होंने यह फैसला इसलिए लिया कि हिन्दुस्तान की जनता के दिमाग में यह ख्याल न आ जाए कि मैं डिक्टेटर बनना चाहती हूं। हिन्दुस्तार की जनता इसका निर्णय करे। 1971 में जब इलेक्शन हुआ तो वह भी 14 महीने पहले करा दिए थे और हिन्दुस्तान की जनता ने इनके खिलाफ फैसला दे दिया था। स्पीकर साहब, इस जीत को देखकर विरोधी दल के भाई इतने उफनने लगे हैं। जीत की खुशी मनाना इनका अधिकार है लेकिन उसकी भी एक हद होती है। जूते फैंकना, रोड़े, फैकना मेरे ख्याल में राजनीति यह इजाजत नहीं देती। स्पीकर साहब, फैमिली प्लानिंग के बारे में बहुत कुछ कहा गया। मुख्यमंत्री महोदय के बयान के बाद जो उन्होंने इस सदन में पिछले दिनों दिया, मेरे ख्याल में अब कुछ कहने की जरूरत नहीं है। विरोधी दल के भाईयों के पास कहने के लिए और कुछ नहीं है। स्पीकर साहब, हरियाणा में एक कहावत है आगे पीछे नीम तले। इनके पास कोर्ठ और बात कहने के लिए नहीं है। स्पीकर साहब, 1901 में हिन्दुस्तान की आबादी बीस करोड़ थी जबकि बर्मा भी हिन्दुस्तान

में था। 1947 में पाकिस्तान बनने के बाद तीस–इक्ततीस करोड़ थी और आज हमारी आबादी साठ–इकसठ करोड़ को पर कर चुकी है। यह फैमिली प्रोग्राम कोई नया प्रोग्राम नहीं है। स्टरलाइजेशन होती रही है ओर हर साल आप्रेशन होते रहे हैं। स्पीकर साहब, मैं यह कहना चाहता हूं कि कोई काम होता है तो गल्ती भी होती है और गल्ती हुई है और हमने उन गल्तियों को ओन किया है। हमारे चीफ मिनिस्टर ने उस रैसपांसिबिलिटी को किसी दूसरे के कन्धों पर डालने की बजाए आप ओन करके एक बहादुरी का सबूत दिया है। आज विरोधी दल के भाई हर बार उसी चीज को रिपीट करते हैं। स्पीकर साहब, अंग्रेजी का एक शब्द है मनजरिया जिसका मतलब है क्रिमिनल इंटेन्शन। एक शिकारी बन्दूक लेकर शिकार करने जाता है। वह समझता है कि झाड़ी के पीछे कोई खरगोश है लेकिन उस झाड़ी के पीछे कोई आदमी जो रफा हाजित के लिए गया है, बैठा है। वह शिकारी गोली चला देता है। वह आदमी शिकारी की गोली से मर जाता है। कानून के नीचे दफा 302 में उसको फांसी की सजा नहीं होती क्योंकि उसकी नीयत उस आदमी को मारने की नहीं है। वह उसको मारना नहीं चाहता। वह तो सिर्फ शिकार खेलना चाहता था। ज्यादा से ज्यादा दस–पांच दिन की सजा उसको हो जाएगी। फैमिली प्लानिंग में भी सरकार की नीयत साफ थी। जो कुछ भी किया गया था वह राश्ट्रहित में किया गया था। स्पीकर साहब, चौथे प्लान में 269 करोड़ रूपया इस फैमिली प्लानिंग पर खर्च किया गया और आज जो हमारे नेतागण सेन्ट्रल गवर्नमेंट में कुर्सी पर विराजमान हैं

उनमें बहुत से भाई कांग्रेस बेन्चिज पर बैठते थे और प्लान बनाते थे आप कहीं भी चले जाइए, रेलवे स्टेशन पर देखिए, चौराहे पर देखिए, बस स्टेन्ड पर देखिए, दीवारों पर देखिए हर जगह लाल निशान बनाकर लोगों को आगाह किया जाता है कि दो या तीन बच्चे। वह एक निशान है और वह बताता है कि वक्त की आवाज है कि समझ जाओ वरना जिस धरती पर तीस वर्श पहले 31 करोड़ का भार था आज उस पर साठ करोड़ का भार है। साठ करोड़ जनता के भविश्य की जिम्मेदारी आज की सरकार के ऊपर है और उसकी जिम्मेदारी बनती है कि वह ऐसा काम करे जिससे देश का भविश्य उज्जवल बने। कैसे बने, आबादी को बढ़ने से रोका जाए। जो ज्यादतियां हुई हैं (घंटी) बस स्पीकर साहब, एक ही मिनट और लूंगा। स्पीकर साहब, घंटी बज चुकी है अपोजीशन के ओर भाईयों ने भी बोलना हैं। मैं अपने मुअजज दोस्तों से अर्ज करना चाहता हूं कि खूबसूरती दखलाक, सभ्यता और शराफत यह सब तो जीवन से ताल्लुक रखने वाली चीजें हैं, इनको जीवन का हिस्सा होना चाहिये यह उतार चढ़ाव तो जिन्दगी में होता ही रहता है लेकिन राजनीति का पैमाना हमें गिराना नहीं चाहिये। इस अलफाज के साथ मैं आपका शुक्रिया अदा करते हुए गवर्नर साहब के ऐड्रैस का समर्थन करात हूं।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष, महोदय किसी एक सदस्य को आप मौका दे दें बोलने का फिर उसके बाद मैंने बोलना है।

**श्री अध्यक्षः** वर्मा साहब, पांच मिनट के लिये आप बोल लें, फिर जवब भी देना है।

**चौ. शिव राम वर्माः** स्पीकर साहब, 15 बार तो मैं बोलने के लिये खड़ा हो लिया।

**श्री बनारसी दास गुप्तः** अध्यक्ष महोदय, हाउस की यह परम्परा रही है कि जो साथी बजट पर बोल लेते हैं वे गवर्नर ऐड्रैस पर नहीं बोलते और जो गवर्नर ऐड्रैस पर बोल लेते हैं वे बजट पर नहीं बोलते?

**श्री अध्यक्षः** पहले उनको चान्स दिया था जो नहीं बोले।

**चौ. शिव राम वर्मा** (नीलोखेड़ी)**:** अध्यक्ष महोदय, यहां पर राज्यपाल महोदय के एड्रैस पर चर्चा चल रही है, मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया। अध्यक्ष महोदय, जितना कह सका उतना ही जल्दी जल्दी कहने का प्रयत्य करूंगा, कुछ माननीय सदस्यों ने अपने मुताबिक कुछ बातों कहीं हैं, जैसा उसका स्तर था वैसे ही उन्होंने कह दिया (विघ्न) किसी का जवाब तो दे सकता हूं अध्यक्ष महोदय।

**श्री अध्यक्षः** जवाब दे सकते हैं लेकिन रेपीटीशन न करें।

**चौ. शिव राम वर्माः** अध्यक्ष महोदय, उन्होनें बड़ी गैर जिम्मेवाराना बातें यहां करी हैं यहां पर मसखरापन दिखाने की

कोशिश की है उसका तो जवाब दूंगा ही। अब तो वे समझ गये हैं कि उन्होंने कितनी गल्त बातें कही है। अध्यक्ष महोदय, जो उन्होंने गलत नाम लिये, इधर उधर के, जनसंघ के, की खून के धब्बे कहे उन्होंने तो अपने मन की बातें कहीं, हरियाणा के लीडर बनने की बात कही कि मेरे मकान पर हमला हुआ....(विघ्न)...(शोर) इससे आगे पंडित चिरन्जीलाल जी ने उदारता की बात कही है, अगर सममुच में ऐसी बात है तो बड़ा अच्छा है लेकिन वह उदारता कहीं यूथ कांग्रेस के वर्कर्ज के लिये ही तो नहीं थी। पिछले 19 महीनों के अन्दर देश के अन्दर क्या वातावरण हुआ लोगों का दम घुटने लगा और तो और लोग बाजारों में सौदा वगैरह लाने के लिये भी नहीं जाना चाहते थे, उनके दिल में दहशत थी, लोगों को घरों में सोते हुये भी डर लगता था यह हालत थी फिर ये कहते हैं कि हमारा हरियाणा बड़ी तरक्की पर था, तरक्की कर रहा है, अगर मैं आकड़ गिनाने बैठूं तो काफी समय लग जाएगा। अध्यक्ष महोदय मैं आपके द्वारा एक विनेदन करना चाहता हूं कि यह तो ऐसे हुआ जैसे एक आदमी के मुंह के लड्डू दे दिया और ऊपर से सिर में जूते मारे, यदि वह आदमी पूछे कि क्यों मारे, तो कहा जाये कि भाई लड्डू खिला रहे है, क्या स्वाधीनता थी इनके राज में लोगों को। अब हरियाणा के किसानों का भी थोड़ा सा जिक्र करना चाहूंगा कि इन्होंने, इनकी सरकार ने आज तक हरियाणा के किसान की कद्र नहीं जानी, किसान ने कर्जा उठाया और पैदावार बढ़ाकर अनाज मंडियों में भर दिया, इनके आंकड़े यह कहते हैं कि इतने रूपये का अनाज बिका और सारा रूपया किसानों के घर में

गया। जैसे यह सरकार तो कहती है कि सरकार ने अनाज का दाम बढ़ाया है ओर उधर किसानों को पूरा नहीं मिलता। मुख्यमंत्री महेादय ने कहा कि हमने केन्द्र से भाव ऊंचा मांगा था पर यह नहीं बताया कि किस बेस पर इन्होंने मांगा था क्या पैदावारी लागत के हिसार से मांगा था? इनको किसान के खर्चे के बारे में कभी कुछ ध्यान नहीं आया कि उसकी कासट आफ प्रोडक्शन क्या है, ये तो समझते है कि जैसे किसान अनाज बिना खर्च किये ही जंगल से भर कर लाया और बेच दिया। लेकिन जो किसान का घाटा है वह कहां से पूरा होगा। यह इस सरकार ने कभी नहीं सोचा। किसान को भाव मिलने का प्रचार करते हैं कि किसान की हालत बड़ी सुधरी है। मैं तो यह कहूंगा कि कृशि विभाग के किसी फार्म को देखें कि उससे कितना लाभ हुआ है उससे ही उन्हें किसान की हालत का पता च जाएगा। मैंने यह कहा था कि कृशि काय्र के लिये पावर भी पूरी नहीं मिलती रही तो फिर ये किस बेस पर कहते है कि सारे प्रदेश में तरक्की हुई है। लेकिन तरक्की की कीमत जिसको चुकानी पड़ी आज उसका इस सरकार को ध्यान नहीं आया। उनको आज गिनती में नहीं रखा गया। पिछले 19 महीनों में जो कुछ हुआ सारा देश जेल बनाकर रखा गया लेकिन जो लोग जेल से बाहर थे उनका जेल से भी बुरा हाल था इनके व्यवहार से बहुत तंग थे और हर समय भय रहता था कि पता नहीं क्या होने वाला है (विघ्न)

**श्री बनारसी दास गुप्त**: आपको तो हमने निर्भय कर दिया था फिर क्यों डर लग रहा था?

**चौ. शिव राम वर्मा**: जेल में जाने के बाद तो कोई डर नहीं रहता था लेकिन बहार

**12.00 बजे**

ज्यादा दिख रहा था क्योंकि जेल वाले रात को तो आराम से सोते होंगे लेकिन बाहर वाले तो डरते थे कि कही कोई आकर छापा न मार लें। सोनीपत में कमेटी के सफाई कर्मचारियों की डियूटी लगी हुई थी कि घरों स जबरदसती निकाल कर लाओं नसबन्दी के लिये।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: एक गीत के सिवा कोई और गीत भी है?

**चौ. शिव राम वर्मा**: पिछले 19 महीनों में केवल जनता की ही नसबन्दी नहीं हुई बल्कि सारी बातों की नसबन्दी की गई। विधान की नसबंदी की गई और जनता की भी नसबंदी हो गई। पहले इन्होंने नसबंदी की और आगे फिर सांस बन्दी भी करने वाले थे यह तो लोगों के समय मिलते ही जाग कर अपने आपको और देश को बचा लिया। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि अब तो सरकार की आंख खुलनी चाहिये लेकिन अब भी एक दो बुद्धिहीन कहते हैं कि लोकसभा के चुनाव दुबारा करववा कर देख लो। अभी दस दिन पहले तो लोकसभा के इलैक्शन होकर चुके हैं।

विधानसभा में हम यहां पर पांच साल के लिये चुन कर आए थे और कानून के द्वारा यह अवधि छ साल के लिये कर ली गई है तो मैं तो कहता हूं कि लोकसभा के चुनाव तो अभी होकर हट हैं। आप विधान सभा के चुनाव करवा लो। हरियाणा के पहले 81 हल्के थे और हम 81 मैंबर चुनकर आए थे अब तो शायद 75–76 रह गये हैं। अब जो हल्के बनाए गए हैं वे 90 हल्के बनाए गए हैं .....

**श्री बनारसी दास गुप्त**: मेरी एक सबमिशन है कि यह रैपीटिशन है। यही बात पहले चौ. भजन लाल और देवी लाल भी कह चुके हैं। वही नसबंदी की बात और वही इलैक्शन में हारने की बात और वही कि इतने हल्कों में कांग्रेस हारी तो यह तो फिजूल में हाउस का वक्त नश्ट करने वाली बात है।

**चौ. शिव राम वर्मा**: 90 हल्को में से केवल एक तोशाम के हल्के के अन्दर ....

**श्री अध्यक्ष**: आर्डर प्लीज। यह बात कितने आदमी कह चुके हैं। रैपिटीशन करने से सिवाए हाउस का टाइम खराब होने के और कोई फायदा न होगा।

**चौ. शिव राम वर्मा**: वे अगर दिल्ली से कलकत्ता तक की बात करते हैं तब तो कोई बात नहीं (शोर)

**Mr. Speaker**: Order please. Do not go beyond limits. यदि कोई रैपिटिशन करता है तो वह अपने अख्यितार का मिस यूज करता है।

**चौ. शिव राम वर्मा**: मैं तो केवल एक ही बात कहने लगा था कि 90 कांस्टीच्यूएंसीज में से केवल एक हल्के तोशाम के अन्दर कांग्रेस को शायद पांच हजार वोट ज्यादा मिले हैं (विघ्न)

**कृशि मंत्री** (कर्नल महा सिंह): मेरे हल्के के अन्दर कांग्रेस जीती है, इनको गल्त ब्यानी नहीं करनी चाहिये।

**चौ. शिव राम वर्मा**: दो–तीन असैम्बली हलकों में वहां महेन्द्रगढ लोकसभा क्षेत्र के राव वीरेन्द्र सिंह इन्डीपेंडेट प्रत्याशी थे वहां कोई कांग्रेसी प्रत्याशी नहीं था ये तो उनके पीछे पीछे दुमछल्ले बने हुए थे लेकिन अगन इनके कोई काग्रेसी प्रत्याशी होते तो वहां भी नहीं मिलने थे। फिर ये कहते हैं कि अपोजीशन वालों ने मीटिंगे डिस्टर्व की। मैं इसको बताना चाहता हूं कि विरोधी पक्ष के आदमी ने कहीं भी किसी भी पार्टी की मीटिंग में कोई गड़बड़ नहीं की। हम कई जगह गये और लोगों को समझाया कि चुनावों के बारे में चाहे कोई भी जाता है उसको अपनी बात कहने दो और गांव में घूमने दो और अगर आपको उसकी बात पसन्द नहीं है तो उसकी बात मन सुनो और घर चले जाओ। लेकिन उसको कुछ न कहो वह तो लोगों के मन में, औरतों के मन में और बच्चों के मन में एक तरह की भावना उठी हुई थी (घंटी) कई माननीय सदस्यों ने ऐसी बात कही कि यह

भावना थोड़ी थी यह तो तूफान था। यह ुरि भी नहीं मानते कि जनता ने इनको हराया है। यह कहते हैं हवा ने हराया है लेकिन यह हवा या तूफान कहां से आई थी यह पता नहीं। मैं इनको यह बताना चाहता हूं कि यह हवा या तूफान जनता का ही था। आप जनता को भेड़ बकरी समझते रहे और आप समझ रहे हैं कि वह हवा दब गई हैं वह हवा दबी नहीं है बल्कि यह फिर उठेगी। इसलिये अब तो इनकी आंख खुल जानी चाहिये। अब तो इनको यह मान लेना चाहिये कि दुनियां के अन्दर आज भारत की जनता का कितना ऊंचा नाम हुआ है। भारत की जनता ने आज सारी दुनियाँ की आंखें अपनी तरफ फिरवा दी हैं, सारी दुनिया यह मानती है कि भारत की जनता लोकतन्त्र में विश्वास रखती है।

**एक आवाज**: अब आप चाहते क्या हैं?

**चौ. शिव राम वर्मा**: हम यह चाहते हैं कि आपको इन कुर्सियों पर बैठने का अब कोई अधिकार नहीं है। अगर जनता आपको दुबारा बनाती है तो हम आपका स्वागत करने के लिये तैयार हैं (घंटी) मैं अभी खत्म करता हूं। पिछले 19 महीनों में जो कुछ हुआ आपको पता है। भोले भाले लोगों को भेड़ बकरियों की तरह जिधर चाहा हांक लिया.....

**Mr. Speaker**: Order please. No repetition of all this. भेड़ बकरियों वाली बात तो आप कई बार कह चुकें हैं।

**चौ. शिव राम वर्मा**: बातें तो बहुत कहने के लिये हैं लेकिन .....

**Mr. Speaker**: Please wide up.

**चौ. शिव राम वर्मा**: कहने को तो बहुत बातें है लेकिन अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे मिनट ही पांच दिये है। जबरी नसबन्दी की चर्चा होती रही है वह जबरी नसबन्दी कही एक जगह महदूद नहीं रही। कर्मचारियों के साथ यह सबसे ज्यादा हुई हैं क्योंकि और लोग तो शायद भाग कर बाहर ईख में छुप गए होंगे लेकिन बेचारे कर्मचारी तो सारे रजिस्टरों में लिखे हुए थे। सबको नोटिस मिल गए कि तीन महीने में करवाओ वरना नौकरी खत्म। मैंने स्वास्थ्य मंत्री से सवाल किया तो वे कहने लगे कि मुझे तो पता नहीं कि कही जबरदस्ती हुई है। पता नहीं उनको शायद किसी ने न बताया हो। वे अपने हल्के में जाते होंगे, वहां पर तो लोगों ने उनको बताया होगा। इन्होंने प्रधानमंत्री को भी अन्धेरे में रखा और अपने आपको भी अन्धेरे में रखा। पिछले 19 महीनों के दौरान मैंने तो इनको कहा था कि जनता बिगड़ी बैठी है और अपनी बुक्ल में ईट लिये बैठी है जिस दिन मौका लगा तुम्हारे माथै पर मारेगी। यह समझते थे कि जनता का जोश ठंडा हो गया है, जनता को तो आज पता लगा है। जनता ने या तो 1946 में अपनी मर्जी से वोट दिये थे या अब सन् 77 मैं अपनी मर्जी से दिये हैं .....

**श्री बनारसी दास गुप्त**: तो क्या आपको बिना मर्जी के वोट दे दिये?

**चौ. शिव राम वर्मा**: 1946 और 1947 के बीच में गलत काम होते रहे। लोग अपनी राय के बारे में नहीं समझे थे और लापरवाही से वोट डालते रहे (घंटी) मैं तो यह कहा करता था कि लोग अगर एक बार राज बदलता सीख लें तो जिसकी वह राज देंगे वह भी डर कर रहेंगे और जिससे छिनेंगे वह भी डर कर रहेंगे और अगर दुबारा इनको राज दे दिया तो जो एमरजेंसी में थोड़ी बहुत ढील दी है वह दुबारा कस दी जाएगी। तो लोगों ने जब अपने अधिकार का सही प्रयोग किया तो एमरजैसी भी गई और गलत कानून भी गए और सरकारी कर्मचारियों को जो उनके अधिकार नहीं दिये जा रहे थे वह भी सारे मिलने लग रहे हैं। केन्द्रीय सरकार के बारे में कभी कुछ कहते हैं, कभी कुछ कहते हैं, यह इनको शोभा नहीं देता। अगर आप ठीक चलेंगे, उनकी जो पालिसिज हैं उनको ईमानदारी से लागू करेंगे तो मैं समझता हूं कि देश तरक्की करेगा, इस देश की जनता में आत्मीयता बढ़ेगी, आत्मिक–शक्ति बढ़ेगी। अध्यक्ष महोदय, एक दो बातें और कहूंगा, अगर आप इजाजत देंगे। (घंटी) ठीक है, मैंने जो कुछ कहा है, उसको ध्यान में रखते हुए, अध्यक्ष महोदय, मैं आपके द्वारा मुख्यमंत्री से निवेदन करूंगा कि जनता की भावनाओं का आदर करते हुए जल्दी ही अपनी सरकार के त्याग–पत्र की आज दी घोशण करेंगे। इन शब्दों के साथ में आपका धन्यवाद करता हूं।

**मुख्यमंत्री** (श्री बनारसी दास गुप्त): अध्यक्ष महोदय, दो दिनों से राज्यपाल महोदय के अभिभाशण पर चर्चा चल रही है। हमारे विपक्ष के कई साथी बोले, हमारी तरफ से भी कुछ साथी बोले। मुझे एक बात पर बड़ा अफसोस है कि राज्यपाल महोदय के भाशण के इतने पृश्ठ हैं, शायद ही किसी बोलने वाले सज्जन ने पढ़े हों। अगर हमारी बहस का, विवाद का स्तर ऊंचा होता तो इससे सारे प्रदेश को, सारी जनता को, सारे समाज को बड़ा लाभ होता। अध्यक्ष महोदय, मैं बिल्कुल इस बात को चाहता हूं और स्वीकार करता हूं कि विपक्ष में बैठने वाले भाई, हमारी हर बात की नुक्ताचीनी करें, हमारा प्रोग्राम देखें, हमारा विकास देखें, हमारी नीति देखें कि क्या कुछ हमने किया है और क्या कुछ करने जा रहे हैं, इन सब बातों पर ध्यान दें, लेकिन एक जरूर आशा करूंगा कि स्वस्थ आलोचना करें, हैल्दी क्रिटिसीजम हो तो मुझे इस बात में ऐतराज नहीं है। मैं यह साफ तौर से कहतना चाहता हूं कि डैमोक्रेसी में सरकार बदलती है ओर बदलती रहनी चाहिए। बिना बदलने से किसी देश में लोकतन्त्र जिन्दा नहीं रह सकता, लेकिन अगर राजनीति का स्तर ऊंचा नहीं किया गया, उसमें सुधार नहीं किया गया, तो सिर्फ हमारे सामने ही कठिनाईयां नहीं आएगी बल्कि उधर बैठने वाले भाइयों को भी बड़ी भारी दिक्कत आएगी। राजनीति का स्तर ऊंचा होना चाहिए, उसका स्टैन्डर्ड होना चाहिएध उसका कुछ मयार होना चाहिए और उसी बात पर बोलना चाहिए जो म्यार को ऊंचा करे। अध्यक्ष महोदय, मेरे जो बहुत पुराने दोस्त विपक्ष में बैठे हैं उनमें कुछ तो बड़े अनुभवी हैं बड़े पुराने

पार्लियामेटेरियन हैं उनसे मैं यह आशा करता था कि वे सारे अभिभाशण को पढ़ते और पढ़ने के बाद जो काम हमने जनहित में किए हैं उनकी सराहना करते। क्या हम इस बात का अधिकार नहीं रखते कि जो काम हमने जनहित में किए हैं, विकास के काम किए हैं दुनियां उनकी सराहना करे? वर्ल्ड बैंक की टीम सर्वे करने के लिए हिन्दुस्तान में आई और उसने अपनी सर्वे रिपोर्ट में लिखा है कि तमाम हिन्दुस्तान के अन्दर हरियाणा प्रदेश एक ऐसा प्रदेश है जिसमें बड़ा भारी विकास हुआ हैं। यह वर्ल्ड बैंक की सर्वे रिपोर्ट के अन्दर है, वर्ल्ड बैंक की टीम आई थी, उसने तरक्की के कार्यों का सर्वे किया और कहा कि तमाम दुनियां में, इजराइल को छोड़ कर, हरियाणा को जो भूमि विकास बैंक हैं, उसकी सबसे अच्छी परफौरमैंस है, सबसे ज्यादा, तरक्की की है। अध्यक्ष महोदय, आप देखें, विदेशी हमारी सराहना करते हैं, दूसरे प्रदेश हमारे विकास की सराहना करते हैं, और हमारे विपक्ष के भाई इतने तंगदिल हो गए हैं, कंजूस हो गए हैं कि एक शब्द भी किसी साथी ने सराहना का नहीं कहा। दौलता साहब ने कुछ शब्द कहे कि वे इस बात की सराहना करते हैं, इनके इलावा किसी विपक्षी नेता ने, साथी ने एक शब्द भी विकास के ऊपर नहीं कहा, कितने अफसोस की बात है। मैं कहता हूं कि हमारा जो अच्छा काम है उसकी सराहना करें, हमारा काम जहाँ त्रुटिपूर्ण है और बुरा है उसकी नुक्साचीनी करें और सुझायें कि यह गलती सरकार के प्रोग्राम में है, यह नीति में गलती है उसका सुधार किया जाए। बिजली की बात इसमें है, पानी की बात इसमें है, सड़कों की बात इसमें है, पशुओं की

नसल सुधार की बात इसमें है, डेरी डिवैल्पमैंट की बात इसमें है, एजुकेशन की बात इसमें है, उद्योग धन्धों की बात इसमें है, डेरी डिवैल्पमैंट की बात इसमें है, एजुकेशन की बात इसमें है, उद्योग धन्धों की बात इसमें है, कृशि की बात, हर वर्ग के हित की बात, यानी तमाम बातें इस अभिभाशण के अन्दर दर्ज हैं। अध्यक्ष महोदय, हमारे इन साथियों का एक–एक भाशण जो आपने रिकार्ड करवाया है, आप उठा कर देख लें, किसी व्यक्ति ने अभिभाशण को टच नहीं किया है, छूआ तक नहीं है। एक ही बात कही कि जनता ने कांग्रेस पार्टी को रिजैक्ट कर दिया, इन इन इलाकों में हार गए, तुम्हारा अधिकार यहां बैठने का नहीं है, नसबन्दी में अत्याचार किया–सिवाये इन तीन चार बातों के, जितने भी विपक्ष के नेता बोले हैं, और किसी बात को छू आ तक नहीं। चौ. रिजक राम बैठे नहीं हैं, मैं चाहता था कि उनको जवाब उसकी मौजूदगी में देता क्योंकि उनकी एक एक बात मैंने नोट की हुई है। वे मेरे साथी हैं, पुराने पार्लियामेंटेरियन हैं और मैं चाहता हूं कि वे रचनात्मक दृश्टिकोण हमारे सामने रखते और हम उन पर अमल करने की कोशिश करते। उन्होंने इलाहाबाद हाई कोर्ट का जिक्र यिका। एक तरफ तो ये कहते हैं कि जुडिशरी का सम्मान किया जाए, न्यायपालिका का सम्मान किया जाए और दूसरी तरफ जुडिशरी के फैसले को मानते ही नहीं। कैसे नहीं मानते, यह मैं बताता हूं। यह ठीक है कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के एक जज का फैसला श्रीमती इंदिरा गांधी के विरूद्ध हुआ, हाई कोर्ट ने उनकी इलैक्शन पैटीशन में उनके विरूद्ध फैसला दिया लेकिन इस फैसले

के साथ–साथ यह भी कहा कि इतने दिनों तक फैसले पर अमल नहीं होगा, मुझे याद नहीं कितने दिन थे, शायद दौलता साहब को याद होगा।

**चौ. प्रताप सिंह दौलता**: एक महीना।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: पूरा एक महीना दिया था कि मेरे इस फैसले पर अमल न हो। यह फैसला भी उसी इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज का था। उस एक महीने के अन्दर हमारी नेात श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सुप्रीम कोर्ट को एप्रोच किया। एक साधारण से साधारण आदमी को भी यह अधिकार हासिल है कि अगर एक न्यायालय, एक कोर्ट उसके खिलाफ फैसला करती है तो वह हाई कोर्ट के अन्दर जाकर अपनी अपील कर सकता है। एक साधारण नागरिक की हैसियत से उस समय की प्रधानमंत्री ने सर्वोच्च न्यायालय के अन्दर अपील की और उस अपील पर, जिस जज ने अपील सुनी, उसने इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले को स्टे किया लेकिन विरोधी दल वालों ने इस स्टे की परवाह नहीं की। सर्वोच्च न्यायाल के न्यायाधीश ने जो फैसला किया, विरोधी दल के भाईयों ने उसकी परवाह नहीं की और मांग कर दी कि इंदिरा गांधी अस्तीफा दें। क्या वह न्यायपालिका का सम्मान है? क्या यह उचित है? इसके बाद आपको पता है अध्यक्ष महोदय, सुप्रीम कोर्ट ने इंदिरा गांधी की अपील को मन्जूर किया और इलाहाबाद हाई कोर्ट के जज के फैसले को रिजैक्ट किया। इसके बाद कौन सी बात बाकी रह जाती है कि इंदिरा गांधी अस्तीफा दे, किस आधार

पर इन लोगों ने अस्तीफे की मांग की? आपको याद होगा, रामलीला ग्रांउड दिल्ली में जलसा हुआ और जितने विरोधी दल के नेता थे जिनमैं श्री मोरारजी भाई तथा अन्य तमाम विरोधी दल के महारथी वहां मौजूद थे, उन्होंने मांग की कि या तो तीन दिन के अन्दर–अन्दर इंदिरा गांधी अस्तीफा दे दें, नहीं तो कन्याकुमारी से हिमालय तक इतना भारी आन्दोलन करेंगे कि हिन्दुस्तान का जन–जीवन ठप्प करके रख देंगे और कहा गया कि हम पार्लियामेंट नहीं चलने देंगे और लोगों को मजबूर किया जाएगा कि वे इस्तीफा दें। क्या यह लोकतंत्र है? कौन कहेगा लोकतंत्र इसको? ये लोकतंत्र की बात करते हैं, न्यायपालिका के सम्मान की बात करते हैं लेकिन न न्यायपालिका की बात मानते हैं और न लोकतंत्र के सिद्धातों को मानते हैं। हमारे कांस्टीच्युशन में साफ लिखा है कि जनता अपने नुमांयदे चुनेगी और चुनाव के बाद जिस पार्टी का बहुमत आ जाए उस पार्टी के निर्वाचित सदस्य एक स्थान पर इकट्ठा होकर के अपने नेता को चुनेंगे। क्या हिन्दुस्तान की जनता ने 1971 के चुनाव में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत में चुनकर नहीं भेजा? क्या वे सब नौमिनेट होकर आये थे? आज भी जनता द्वारा निर्वाचित सरकार केन्द्र में है। हम उसका सम्मान करते हैं। मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की जनता ने इनको जो मौका दिया है पांच साल के लिए नहीं बल्कि 6 साल के लिए इसे ये मेहरबानी करके एक साथ मिलकर काम करने में इस्तेमाल करैं ताकि अपनी नीति के ऊपर अमल करके ये हिन्दुस्तान की जनता की भलाई कर पाएं। कोई एक कांग्रेस पार्टी ने ठेका तो नहीं

लिया है कि सारी उम्र उसने ही बागडोर संभाले रखनी है। परिर्वतन आना चाहिए। वह परिवर्तन आया है। लेकिन 6 साल से पहले ही आज कुछ भाई अगर कुर्सी की भूख में इस बात की धमकी दें कि इस्तीफा दे दो नहीं तो आन्दोलन करेंगे, क्या यह लोकतंत्र है? कौन कहता है इसको लोकतंत्र? इन्दिरा गांधी को उस भारी बहुमत वाली पार्टी से सर्वसम्मति से अपना नेता चुना था, जिसे 1971 के चुनाव में जनता ने चुनकर भेजा था, और वे देश की प्रधानमंत्री बनी थीं। उनको हक था कि वे पांच साल तक अपनी नीति और प्रोग्राम के अनुसार देश में प्रशासन चलातीं लेकिन इन्होंने दो साल के बाद यह आवाज बुलन्द कर दी कि इन्दिरा गांधी इस्तीफा दें। क्या कारण था इस बात का? कोई कारण आजतक ये बतला नहीं पाए। आज ये इलाहाबाद हाई कोर्ट की बात करते हैं। कहां इन्होंने जुडीशियरी का सम्मान किया? कहां इन्होंने लोकतंत्र का सम्मान किया? इन्होंने तो जुडिशियरी और लोकतंत्र को तोड़ फोड़ कर रख दिया हिन्दुस्तान के अन्दर। चौ. रिजक राम ने कहा कि आज संजय गांधी कहां है, उसका पांच सूची कार्यक्रम कहां है? आज उनकी चर्चा क्यों नहीं की जाती? अभिभाशण के अन्दर उसका जिक्र नहीं आया। अध्यक्ष महोदय, बीस सूत्री कार्यक्रम हिन्दुस्तान की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का था। हमें आदेश था प्रदेश की सरकारों को कि उन्हें इम्पलीमैंट किया जाए। उनके पास हमारी मासिक रिपोर्ट जाती थी और समय समय पर मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन बुला कर यह बात पूछी जाती थी कि कहां तक इम्पलीमैंटेशन हुई है।

उसका जिक्र राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाशण में किया है और मैं भी बतलाऊंगा कि 20 प्वायंट प्रोग्राम की क्या अचीवमैंटस है हरियाणा के अन्दर। एक भाई ने कहा कि हमें तो एक सूत्री प्रोग्रामनजर आता है। 19 सूत्र उनको नजर नहीं आते थे लेकिन मैं एक एक आंकड़ा ओर एक एक फिगर बतलाऊंगा ताकि पता लगे कि बाकी प्वायंट के तहत कितना कितना काम हरियाणा प्रदेश के अन्दर हुआ है। पांच सूत्री प्रोग्राम का जहां तक सम्बन्ध है, मैं आज भी उसकी सराहना करता हूं। मेरे सामने बैठने वाले भाईयों में से कोई भी यह कह दे कि परिवार नियोजन को प्रोग्राम राश्ट्र के हित में नहीं है। यह ठीक है कि तरीका गलत हो सकता है। अध्यक्ष महोदय, बजट की आम बहस में इन्टरवीन करते हुए मैंने खड़े होकर सइ बात को स्वीकर किया था कि इसमें हमारे अफसरों ने कुछ ज्यादती की लेकिन उसकी सारी जिम्मेवारी मैं अपने सिर पर लेता हूं। ये पता नहीं क्यों बार बार फिर भी इस बात को कहते हैं। मेरे यह कहने के बावजूद भी बार–बार यहां कहा गया कि अफसरों के ऊपर जिम्मेवारी डालते हैं। मैंने पहले ही दिन यह बात कही थी कि यदि हमारे किसी अफसर ने ज्यादती की है, कहीं जुल्म किया है, कहीं अत्याचार यिका है, वह बनारसी दास गुप्ता ने मुख्यमंत्री के नाते किया है। मैं ओन करता हूं उस सारी चीजों को। इसमें गलतियां हुई, इसमें ज्यादती हुइ, मैंने इस बात को स्वीकार किया। कौर कहता है कि हम जिम्मेवारी से बचना चाहते हैं? गलतियों का, अध्यक्ष महोदय, हमने खमियाजा भी भुगता है लेकिन परिवार नियोजन के बारे में कोई पार्टी या नेता

यह बात नहीं कह सकता कि यह राश्ट्र के हित में नहीं है। तो संजय गांधी के पांच सूत्री प्रोग्राम में पहला सूत्र था परिवार नियोजन दूसरा सूत्र दहेज के विरोध के बारे में था कि दहेज का लेन देन न हो। मेरे सामने जो भाई बैठे हैं। इनमें से कोई भी यह कह दे कि यह बात गलत थी। तीसरी बात संजय गांधी ने कही कि वृक्ष ज्यादा लगाओ। बताओ इसके अन्दर क्या पाप था? क्या बुराई थी इसके अन्दर? कौन कह सकता है कि यह बात बुरी थी? हमारे धर्म शास्त्रों के अन्दर लिखा हुआ है कि कम से कम हरेक व्यक्ति को एक पेड़ अपने जीवन में जरूर लगाना चाहिए। कितने फायदे पेड़ लगाने से हैं। इनके अलावा एक सूत्र था कि देश से अनपढ़ता को दूर किया जाए। जो हमारे वालिग शहरी हैं चाहे वह स्त्री है या पुरूश है, उनको पढ़ाया जाए। अब मुझे बतलाओं कि इन पांच सूत्रों के अन्दर कौन सा सूत्र है जिसको मेरे सामने बैठने वाले भाई गलत समझते हों।

**चौ. भजन लाल**: परिवार नियोजन का प्रोग्राम ठीक है लेकिन तरीका ठीक नहीं है।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: जब मैंने यह बात मानी है तो पांच सूत्री प्रोग्राम की इसमें क्या बात है?

**चौ. भजन लाल**: अगर बात नहीं है तो आप भी इसकी क्यों रट लगा रहे हो?

**श्री बनारसी दास गुप्ता**: मैं तो इसलिए यह बात कह राह हूं क्योंकि सामने वाले वैचिज से जो भी भाई बोलते के लिए खड़ा हुआ उसने बार बार यही बात कही। परसों मेरे द्वारा सारी बात स्पश्ट कर देने के बाद भी बार बार इस बात को दोहराया गया और बार बार यह इल्जाम लगाया गया कि हम जिम्मेवारी से बचना चाहते हैं। मैंने स्पश्ट शब्दों में यह बात कही थी कि ठीक है ज्यादती हुई है और वह ज्यादती चाहे किसी अफसर ने की है या किसी और ने की है उसकी जिम्मेवारी से हम भागना नहीं चाहते।

**चौ. शिव राम वर्मा**: चुनाव करा लो। यही झगड़ा है और कोई नहीं।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अब बात रह गई चुनाव कराने की। अध्यक्ष महोदय, अभी मैंने कहा था कि यह कैसा लोकतंत्र है? यह किसी कांस्टिच्युशनल बात को मानने के लिए तैयान नहीं हैं। चौ. देवी लाल ने हमारे ऊपर इल्जाम लगाया कि हम सारे काम अनकांस्टिच्युशनल करते हैं। यह कौन साह कांस्टिच्युशनल काम है? मैंने उस रोज भी यह बात हाउस के सामने रखी थी कि लोक सभा को इस बात का अख्तियार है कि वह दो तिहाई बहुमत से संविधान में संशोधन करे। लोकसभा द्वारा संशोधन करने के बाद वह बिल राज्यसभा में जाता है। अगर राज्यसभा भी अनुमोदन कर दे तो अध्यक्ष महोदय आप जानते हैं कि 50 फीसदी प्रदेशों की विधान सभाएं उसको अनुमोदन करती हैं। तो वह संशोधन

कांस्टिच्युशनल है, संवैधानिक है। कौन इन्कार करेगा इस बात से? अध्यक्ष महोदय, हमारी विधान सभाओं की और लोक सभा की मियाद कांस्टिच्युशनल अमैंडमैंट के द्वासरा पांच साल से बढ़ा कर 6 साल की गई है। जब तक कांस्टिच्युशन की वह अमैंडमैंट बल नहीं दी जाती तब तक इस हाउस की मियाद, इस हाउस की लाईफ, इसका जीवन 6 साल हैं। इनकी सरकार इसे कल बदल दे और बदल कर पांच साल कर दे हमें इसमें कोई एतराज नहीं। जिस दिन इसकी लाईफ खत्म हो जाएगी चुनाव हो जाएगा। (विघ्न).....

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption please.

**श्री बनारसी दास गुप्ता**: अगर अध्यक्ष महोदय, ये मुझे कोई प्रोविजन दिखा दें कांस्टिच्युशन के अन्दर कि लोक सभा के चुनाव के साथ विधान सभा के चुनाव भी हो जाते हैं तो मैं आज ही इस्तीफा दैने के लिए तैयार हूं। दौलता साहब तो विधिवेत्ता हैं, कांस्टिच्युशन को जानते हैं, ला जानते हैं। मेरी पहली बात को यह झुठला दें। कांस्टिच्युशन में अमैंडमैंट कांस्टिच्युशन के मुताबिक हुई या ना हुई। वह कांस्टिच्युशन है या नहीं है। कांस्टिच्युशन तरीके से यह कांस्टिच्युशन को फिर अमैंड कर दे तब भी बात ठीक है या कोई ऐसा प्रोविजन दिखला दें कि लोकसभा के चुनाव के साथ विधान सभा के चुनाव भी हो जाते हैं, तो भी मान लेते हैं। तो किस आधार पर ये त्यागपत्र की मांग करते हैं। अगर ये कांस्टिच्युशन में विश्वास नहीं रखते, लोकतन्त्र

में विश्वास नहीं रखते और इनको यह पूरा विश्वास है कि इनको जनता ने केवल पांच साल के लिए चुनकर भेजा है तो ये इस्तीा देकर अपने घर जायें। इनके तो पांच साल पूरे हो गये। ये यहां पर क्यों बैठे हुए हैं। (तालियां)

अगर ये कांस्टिच्युशन को जानते हैं, संविधान की भाशा को समझते हैं तो संविधान में ऐसा कोई प्रोविजन नहीं है कि लोकसभा के चुनाव के साथ विधानसभा के चुनाव हो जाते हैं। ऐसा कोई भी प्रोविजन नहीं है। इसलिए अध्यक्ष महोदय जब तक ये संशोधन नहीं करेंगे कि छः साल से घटा कर पांच साल नहीं करेंगे तब तक हम संवैधानिक और लोकतांत्रिक तरीके से बैठे हुए हैं। अगर किसी गैर–संवैधानिक तरीके से गैर–लोकतांत्रिक तरीके से यहां बैठे हैं तो हमें यह बताये कि कैसे बैठे हुए हैं।

एक बात चौ. रिजक राम जी ने कही कि देश में तो एमरजेन्सी 25 जून, 1975 को लागू हुई थी परन्तु हरियाणा में पहले ही लागू हो गई थी। मैं नहीं समझता कि किस आधार पर वे ये कहते हैं कि हरियाणा में एमरजेन्सी पहले ही लगी हुई थी। जो अधिकार हिन्दुस्तान की जनता को थे वही अधिकार हरियाणा की जनता को उपलब्ध थे। वे बात कहना कि एक एम.एल.ए. का आदर नहीं, यह गलत बात है। ये भाई अपने आप ही सोच सकते हैं। अगर विपक्ष का भी कभी कोई एम.एल.ए. मेरे पास आया है तो आराम से बैठा कर उनकी बात को सुना है और जो काम करने

का होता है उसको किया है। उनको पूरा सम्मान दिया है, पूरी इज्जत दी गई है।

**चौ. प्रताप सिंह दौलता**: ये इस सी.एम. साहब की बात नहीं कर रहे, आपसे पहले की बात है।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: एक बात चौ. रिजक राम जी ने और कही कि सहकारिया विभाग ठीक तरह से काम नहीं कर रहा। कोआपरेटिव सिस्टम के तीन भाग हैं। एक हमारा स्टेट कोआप्रेटिव बैंक है, एक हरियाणा मार्किटिंग फैडरेशन है, एक हमारा भूमि विकास बैंक है। उसके बारे में उन्होंने कहा कि तीनों पर आफिशियल कन्ट्रोल है लेकिन अध्यक्ष महोदय चौधरी साहब यहां बैठे नहीं वरना मैं उनको बताता कि तीनों अदायरों के अन्दर बाकायदा चुने हुए बोर्ड हैं, कोई नौमीनेटिड बोर्ड तीनों के अन्दर नहीं है। यह बात अगल है कि चौ. रिजक राम जी का जो चहेता है वह नहीं आ सका। उसके बारे में मेरे से भी सिफारिश की। अगर वे चुन कर नहीं आ सकें तो उसमें हमारा क्या कसूर है, हमारा क्या चारा है। इसलिए यह बात गलत है कि तीनों अदायारों के अन्दर कोआपरेटिव सिस्टम के ऊपर आफिशियल अधिकार है। उन्होंने फरमाया कि एकमात्र मुख्यमंत्री या डी.सी. का ही कन्ट्रोल हैं। तो ऐसी कोई बात हरियाणा प्रदेश में नहीं है। मुख्यमंत्री अपने स्थान पर हैं, मंत्री अपने स्थान पर हैं, एम.एल.ए. अपने स्थान पर हैं, जनता और अधिकारी अपने स्थान पर हैं। जो जिसका अधिकार

है और जिसके अधिकार क्षेत्र में है उसके अन्दर वे पूरा तरह से काम करते हैं।

यहां पर पब्लिक सर्विस कमीशन की बात कही गई। इन्होंनें कहा कि बाहर से लिस्ट बन कर आती है, मैरिट की बात नहीं होती। पहली बात तो मैं यह अर्ज करूंगा कि पब्लिक सर्विस कमीशन एक ऐसी उच्च समिति है, एक ऐसा अदायरा है कि उसका विरोध करना, उसके चेयरमैन या मैम्बर्ज का विरोध करना, उचित बात नहीं। कोई इस प्रकार के शब्द उनके प्रति इस्तेमाल करना मैं ऐसा ही समझता हूं जैसे कि जुडिशियरी क खिलाफ करना हैं उसको वही स्टेट्स है जो जुडिशियरी को है। अगर अध्यक्ष महोदय किसी गैर सरकारी आदमी को पब्लिक सर्विस कमीशन का चेयरमैन बना दें तो यह कहा जाता है कि अपने किसी पिट्ठू को बना दिया, अगर किसी आई.ए.एस. आफिसर को अध्यक्ष बना दिया जाये तो नुक्ताचीनी करते हैं। पहले हमारे जो चीफ सैक्रेटरी रह चुके हैं, जिनका सर्विस का बड़ा शानदार रिकार्ड है उस आदमी को चेयरमैन बनाया गया था, उनके बाद आज हमारे जो चेयरमैन हैं वे भी एक रिटायर्ड आई.ए.एस. आफिसर हैं। उनका सर्विस का रिकार्ड चौ. भजन लाल जी जानते हैं, इनके जिले में वे डिप्टी कमीश्नर रहे हैं।

**चौ. भजन लाल**: मैंने उनके बारे में कुछ नहीं कहा।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: उनको चेयरमैन बनाया गया (विघ्न) यह इल्जाम उन्हीं के ऊपर है। आज अगर यह कहा जाता है कि मैरिट पर सिलैक्शन नहीं होती, लिस्ट कहीं बाहर से बन कर आती है तो यह सीधा इल्जाम पब्लिक सर्विस कमीशन के चेयरमैन और मैम्बर्ज पर है। मैंने एक बात कही थी कि एक तरफ तो ये यह इल्जाम लगाते हैं कि लिस्ट दिल्ली से बनकर आती है दूसरी तरफ चौ. शिवराम वर्मा कहते हैं कि मेरा लड़का तो छाती पर पैर रखकर आया है। अगर छाती पर पैर रखकर आया है तो फिर वह मैरिट से आया है फिर किसी के साथ ज्यादती नहीं होती। अगर वे मैरिट से नहीं आया तो चौ. शिव राम वर्मा ने भी चापलूसी की होगी या फिर चौ. भजन लाल झूठे हैं या चौ. शिव राम झूठे हैं। तब आप ही देखें कि कौन सा गलत कहता है। स्पीकर साहब झूठ शब्द को तो मैं वापिस लेता हूं क्योंकि यह अन–पार्लियामैंटरी है। तो मैं यही कहूंगा कि इन दोनों में एक गलत जरूर कहता है।

अध्यक्ष महोदय चौ. शिव राम वर्मा जो हमारे विपक्ष के विधायक हैं उनके लड़के का एच.सी.एस. में चयन होना, इस बात का सबूत है कि मैरिट पर सिलैक्शन होती है। यही एस.एस.एस. बोर्ड की बात है और यही बात बिजली बोर्ड के बारे में है। चौ. रिजक राम जैसे पुराने आदमी के मुंह से यह बात सुनी कि एक ही इलाके के लोग लिये गये हैं, मैं जिलेवाइज लिस्ट पेश कर सकता हूं जिन जिन आदमियों की सिलैक्शन हुई है। बिजली बोर्ड

ऐटोनोमस बोडी है। उनका अपना सिलैक्शन बोर्ड है। लेकिन पब्लिक सर्विस कमीशन के द्वारा, एस.एस.एस. बोर्ड के द्वारा या बिजली बोर्ड के द्वारा जो भी सिलैक्शन हुआ है उनकी डिस्ट्रक्टवाइज लिस्ट पेश की जा सकती है। हां दो चार किसी जिले के ज्याद हैं, किसी के कम है लेकिन यह नहीं कि बहुत से जिले बिलकुल ही इग्नोर किये गये हों, किसी इलाके के लड़के बिल्कुल न लिए गये हों। यह झूठा आरोप है, निराधार आरोप है।

एक बात यहां पश्यिमी नहर के पानी के बारे में कही गई कि वहां से पानी निकाल कर भिवानी के इलाके को दिया गया, महेन्द्रगढ़ के इलाके को दिया गया। अध्यक्ष महोदय, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह आरोप भी बिल्कुल निराधार है। मेरे पास फिग्र्ज हैं। मैं आगे चलकर आपको बतलाऊगा। मेरे पास यह इरीगेशन के बारे मैं रिपोर्ट है। इनको तो ये देखते तक नहीं कि क्या काम हरियाणा में हुआ है। सन् 1967–68 में 33.93 लाख एकड़ भूमि को नहर का पानी मिलता था और 10.17 लाख एकड़ भूमि को दूसरे साधनों से यानी टयूबवैल्ज आदि से इरीगेट किया जाता था। टोटल इरीगेटिड लैन्ड सन् 1968 में 44.10 लाख एकड़ थी और आज अध्यक्ष महोयद 64.64 लाख एकड़ है। आप अन्दाजा लगाइये 22 लाख एकड़ जमीन के अन्दर ज्यादा पानी दिया गया है। सन् 1968 से आज तक 22 लाख एकड़ को जो पानी दिया है उसको ये काम ही नहीं समझते हैं। इसका कोई चर्चा नहीं, किसी ने इस बात का जिक्र नहीं किया। सन् 1968 मे ंसी.सी.ए 57.12

लाख एकड़ था और आज है 67.83 लाख एकड़। नहरों की लम्बाई सन् 1968 मे ंथी नौ हजार 122 किलोमीटर और आज है 10 हजार 556 किलोमीटर। दो हजार किलोमीटर के करीब नयी नहरे बनायी गई हैं। अब आप क्वांटिटी आफर वाटर देखिए। ये कहते हैं कि पश्चिमी नहर का पानी महेन्द्रगढ़, नाहड़ और भिवानी के इलाकों को दे दिया गया। सन् 1968 के अन्दर जो पानी उपलब्ध था वह 8.34 मिलियन एकड़ फीट और आज है 15.37 मिलियन एकड़ फीट। आलमोस्ट डबल, क्या यह उपलब्धि नहीं है? क्या यह अचीवमैंट नहीं है। अगर इस बढ़े हुए पानी में से और बाढ़ के पानी में से हमने उस इलाके को पानी दे दिया कि जिस इलाके के किसान भूख से मरते थे, तो क्या गुनाह कर दिया? अध्यक्ष महोदय, आपके तो पता है आपने देखा होगा और दौलता साहब की तो रिश्तेदारी है, इनको भी पता होगा कि वहां पर पहले क्या हालत हुआ करती थी। वहां पर हर दूसरे तीसरे साल कहत पड़ता था। किसान का पशुधन मर जाता था। गांव के गांव रोजगार की तलाश में खाली हो जाते थे? अगर उन भाइयों के गुजारे के लिये नहर का पानी दे दिया गया तो इनके पेट में क्यों दर्द होता हैं। अगर उन्हें एक इन्सान जैसा जीवन व्यतीत करने के लिये हमने पानी दे दिया तो इनके पेट में दर्द क्यों होता है? मैं एक बात स्पीकर साहब, दावे के साथ कहता हूं कि पश्चिमी जमुना नहर के एरिया से अगर एक बूंद पानी भी काटकर हमने उस इलाके को दिया हो तो मैं इस बात का जिम्मेदारी के साथ जवाब देने के लिये तैयार हूं। यह बिल्कुल गलत आरोप है जो यह लगाते हैं।

इन्होंने चुनाव के दिनों में भी इस बात को बहुत उछाला है और इस बात का बहुत गलत प्रचार लोगों के अन्दर किया है। बिल्कुल कोई भी पानी वहां से काटकर नहीं दिया गया। रिजक राम जी ने बतलाया कि इन्दिरा गांधी कैनाल, जुई कैनाल और चक्रवर्ती कैनाल जब बनाई गयी थी तो यह कहा गया था कि इसमें सिर्फ बाढ़ का पानी इस्तेमाल किया जायेगा। यह बात ठीक ळै। अध्यक्ष महोदय जिस वक्त यह नहरें बनायी गई, उस वक्त हमारे सामने दो ही उदेश्य थे। पहला उदेश्य तो यह था कि बाढ़ का पानी जो कई इलाकों को तबाह करता है, करनाल, अम्बाला, कुरूक्षेत्र और रोहतक तक के जिलों को डुबो कर किसानों की फसल को बरबाद करता है, उनके घरों का नाश करता है, उस पानी का इस्तेमाल किया जाये ताकि उससे दो फायदे हो सकें। इधर बाढ़ से राहत मिले उधर सूखे से राहत मिले। और वह प्रोग्राम चलाया गया लेकिन अध्यक्ष महोदय, इनकी जुबान पर एक लफ्ज भी उसकी सराहना का नहीं। फैमिली प्लानिंग मे जुल्म कर दिये, अत्याचार कर दिये। हैरानी इस बात की है कि इनके पास इस बात का के सिवाय और कोई बात कहने की नहीं है। एक तरफ तो बाढ़ का इन्तजाम कियाओर दूरी तरफ सूखे का इंतजाम किया। एक दूसरा उदेश्य जो नहरें बनाने का था वह यह था कि हमें इस बात का पता था कि हमें रावी ब्यास का पानी मिलेगा, उसके लिये हमें पहले सक ही इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करके रखनी चाहिये क्योंकि आपको अध्यक्ष महोदय, याद होगा कि जब पंजाब ओर हरियाणा का बंटवारा हुआ, हरियाणा प्रदेश अलग बना तो हमें पानी तो पूरा

मिला लेकिन हमें बिजली का हिस्सा कम मिला क्योंकि हमारे पास ट्रांसमीशन लाईन्ज कम थीं। हमारे पास पूरे साधन नहीं थे उसको यूटेलाईज करने के। रावी ब्यास के पानी के बंटवारे के वक्त भी हमें यह डार था कि अगर हमारे पास साधन न हुए तो हमें हमारे पानी का पूरा हिस्सा नहीं मिल पायेगा। जुई कैनाल को हमने पैरेनीयल बनाया। उस वक्त पैरीनीयल किया गया जिस वक्त आगुमैंटेशन कैनाल बन कर तैयार हुई ओर कई हजार क्यूसिक पानी जमीन से बाहर निकालकर इस नहर के द्वारा बढ़ाया। इसके अलावा हमने पानी और बढ़ाया। हमने नहरें पक्की बनायीं, खालें पक्की बनायीं, डिस्ट्रिब्यूटरीज पक्की बनायी। उनसे भी पानी बढ़ा है। जब हमारे पास पानी बढ़ा तो हमने जुई कैनाल को पैरोनीयल बनाया और चक्रवती कैनाल को पारशीयली पैरेनीयल बनाया है और अब हमारा इरादा यह है कि जब हमें रावी ब्यास का पानी मिलगा तो न सिर्फ उन नहरों को ही हम पैरेनीयल बनायेंगे बल्कि वैस्टर्न जमुना कैनाल सिस्टम में भी और भाखड़ा कैनाल सिस्टम में भी वाटर अलाउन्स बढ़ायेंगे और उन नहरों का बारहमासी बनाया जाये। इस बात से इन लोगों को क्या तकलीफ है? ये लोग किस बात की नुक्ताचीनी करते है? तो यह तो नहरों की बात है।

एक बात यहां पर पीने के पानी के बारे में कही गयी कि 924 गांवों के अन्दर पाने का पानी दिया गया और उसमें से अध्यक्ष महोदय चौ.रिजक राम जी ने यह कहा कि और दूसरे सब इलाकों के 12 प्रतिशत गांवों को पानी दिया गया और 88 प्रतिशत पानी

सिर्फ एक ही इलाके के अन्दर दिया गया। मेरे पास अध्यक्ष महोदय फिगर्ज हैं। जो पानी 911 गांवों के अन्दर दिया गया है उसकी परसैंटेज निकाल ले अगर कोई पढ़ा लिखा हो तो अम्बाला में 165 गांवों में भिवानी में 261 गावों में, गुड़गांव में 110 गावों में, हिसार में 68 गांवों में, जींद में 41 गावों में, करनाल में 3 गावों में, कुरूक्षेत्र में 11 गावों में, महेन्द्रगढ़ में 146 गांवों में, रोहतक में 59 गावों में सिरसा में 40 गांवों में और सोनीपत में 7 गांवों में पीने का पानी दिया गया। जो कुछ चौ. रिजक राम जी ने कहा, क्या यह सच है? उन्होंने जो यह कोट किया कि 12 प्रतिशत और इलाकों मे ंऔर 88 प्रतिशत सिर्फ एक इलाके के गांवों में पानी दिया गया, क्या यह सच बात है? इतनी गलत बात, इतने पुराने आदमी, इतने संजीदा आदमी हाउस के अन्दर कहें तो बड़ी हैरानी होती है। यह बात वह पढ़ते नहीं। तीनों तरु यहां पर यह लिखा हुआ है अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी में कि इस सदन के अन्दर या ता जुबान न खोले और अगर खोले तो यह सत्य के सिवाय कुछ न बोले नहीं तो वह पापी होता है। अब पाप का भागी कौन होता है? एक बात मैं और बतलाऊं। अध्यक्ष महोदय, कुछ इलाके ऐसे हैं, जैसे कुरूक्षेत्र के अन्दर क्यों कम गांव मे ंपनी का पानी दिया गया है, क्योंकि वहां जमीन के अन्दर मीठा पानी उपलब्ध है। वहां के लोग कुएं से पानी निकालकर गुजारा कर लेते हैं। कई इलाके, अध्यक्ष महोदय, भिवानी जिला, महेन्द्रगढ़, जिला, झज्जर और नाहउ़ के इलाके ऐसे हैं कि जहां पर जमीन के अन्दर जहर जैसा कड़वा पानी होता हैं। आठ–आठ, दस–दस कोस से वे लोग पानी

ऊंटो पर लाद कर लाते थे। वहां पर अध्यक्ष महोदय ऐसी हालत थी कि 60–60 मील तक उड़ते हुए काग की आंख निकल जाती थी, मगर चोंच मारने को पानी नहीं मिलता था। अगर उस हलके मे ंकुछ ज्यादा सुविधाएं दे दी गयीं तो इस बात की शिकायत की जाये, गलत फिगर्ज और गलत आंकड़े पेश किये जायें, क्या यह कोई शोभा की बात है? इसके बाद अस्पताल की बात है। यहां पर यह कहा गया कि भिवानी के अन्दर 500 बिस्तरों का अस्पताल बनाया जा रहा है। जबकि और जगहों पर कहीं दो सौ का बनाया कहीं अढ़ाई सौ का बनाया कही सौ का बनाया। अध्यक्ष महोदय, एक बात मैं आपके द्वारा यहां पर यह कहना चाहता हूं कि आप भी भिवानी के निकट के रहने वाले है। आपको भी यह याद होगा कि भिवानी को सिटी आफ हास्पिटल्ज कहा जाता था। भिवानी के अन्दर हमेशा से ही अनेक अस्पताल रहे हैं। वहां पर केवल भिवानी के लोग ही नहीं बल्कि राज्यस्थान और उत्तर प्रदेश तक के लोग और इधर डबवाली तक के लोग इलाज के लिये जाया करते थे। भिवानी की एक बैकग्राउन्ड है, भिवानी की एक पृश्ठभूमि अस्पतालों को लेकर ऐसी थी कि इसकी इम्पोटैंस हास्पिटल के नाम से ज्यादा थी। इसलिये वहां पर 500 बिस्तरों का हस्पताल बनाने की तजवीज की गयी। वह बन रहा है और इसके अलावा अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा मैं इन भाईयों को यह बतलाना चाहता हूं कि आज से एक साल पहले मैंने फरीदाबाद के अन्दर इस बात का ऐलान किया था कि हम भिवानी जैसा ही 500 बैडिड अस्पताल फरीदाबाद के अन्दर भी बनायेंगे। उसकी तैयारी शुरू हो

चुकी हैं। उसकी प्लान नक्शे और डिजाइन बन रहे हैं। यह बात नहीं है कि सरकार भिवानी में ही 500 बिस्तरों का अस्पताल बनाने जा रही है। फरीदाबाद तो बहुत दूर हे भिवानी से। हमने सोचा कि फरीदाबाद एक बड़ा भारी औद्योगिक नगर है, लाखों मजदूर वहां पर काम करते हैं। इसके अलावा हमने सोहना और नारायणगढ़ के अन्दर अस्पताल बनाया। क्या वे भिवानी के पास हैं। ऐसी बात नहीं है जो इन भाईयो के दिमाग में है। इनको तो इस बात का बहम हो गया है कि जो भी चीज यहां पर होती है, वह भिवानी के अन्दर ही होती है। लेकिन जब यह लोग भिवानी के अन्दर जाते हैं तो दूसरी तरह की बात करते हैं। भिवानी में जाकर वे यह बात नहीं करते कि भिवानी के लिये इस सरकार ने यह किया है भिवानी के अन्दर जाकर यह कहते हैं कि मन्दिर तोड़ दिया, घंटाघर तोड़ दिया। अध्यक्ष महोदय, आप ही देखिये, अजीब बातें हैं इन लोगों की। किस प्रकार की बातें वह करते हैं। सिवाय इस बात के कि लोगों के सैन्टीमैंट्स को एक्सप्लायट किया जाये, इनक पास और कोई बात नहीं है। अध्यक्ष महोदय, मै एक बात और यहां पर साफ कर देना चाहता हूं कि वे अपने जीत का घमण्ड न करें। मैं एक बात साफ तौर पर कह देना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय कि हम जरूर हारे हैं परन्तु यह नहीं जीते। हम जारे हैं यह घमंड न करें। कहीं यह गर्व न करें कि हम जीते हैं। हमने अपनी हार स्पीकार की। इस चुनाव के अन्दर अध्यक्ष महोदय, आपको भी तर्जुबा होगा न किसी ने पार्टी देखी। न किसी ने उम्मीदवार देखा है, एक उम्मीदवार की तो मैं आपको बात बताऊं।

अध्यक्ष महोदय, वह वोट मांगने के लिये गये। वह वकीलों के साथ जाकर बैठे। वह कहने लगे की भई तू एक काम कर, यहां से तू भाग जा। तेरी शक्ल देखकर वोट टूट जायेंगे। वोट तो तेरे पक्के बैठे हैं। इसके उम्मीदवार तो ऐसे हैं जिनकी शक्ल देखने से वोट टूट जाते हैं लेकिन जनता ने हमको हराना था (व्यवधान) यह तो आपके आदमियों ने बताई हैं। मैं अगल से नाम बता दूंगा (व्यवधान)। अध्यक्ष महोदय, बात यह हे कि लोगों ने तो हमारी पिटाई करनी थी और वह कर दी। अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात बता दूं कि ये भाई इस वहम में न रहे। कई दफा बाप नाराज होकर बेटे को चपत लगा देता है इसका मतलब यह तो नहीं कि उनके सम्बन्ध खत्म हो जाते हैं या उनके प्यार में कोई फर्क आ जाता है। बाप नाराज होकर जवान बेटे को घर से निकाल देता है तो वह तो अपने बेटे को गुस्से में आकर घर से निकाल देता है और वह गुस्सा क्षणिक है। हमने कुछ गल्तियां कीं, हमने कुछ ज्यादतियां की और जनता ने हमारे चपत लगा दी और वह चपत करारी लगाई है जिससे हमैं होश आ जाएगी, हम गल्तियां करना छोड़ देंगे। आगे के लिए ठीक चलेंगे। हम कोई जनता को भूले नहीं हैं और न ही जनता हमको भूली है। मैं अपने इन भाईयों को कहना चाहता हूं कि ज्यादा घमन्उ न करें। हमने घमंड आ गया था इस जनता ने हमारा घमंड निकाल दिया और अगर यह घमण्ड करेंगे तो जनता इनको भी निकाल देगी। स्पीकर साहब, हमारी जड़े तो पाताल में थीं। 85 साल पुरानी यह कांग्रेस पार्टी भी और तीस साल का राज था। आज हमारे साथ अगर यह जनता ऐसा

सलूक कर सकती है तो इनकी जड़ें तो हैं ही नहीं। इनकी जड़ें तो अभी अधर में हैं। स्पीकर साहब, एक बात ओर कह दूं। चुनावों के अन्दर जलसें हुए। सौ से ऊपर मीटिंग्ज मैंने एड्रैस की। मैं सब जगह एक ही बात कहता था। प्रैस गैलरी में कुछ ऐसे लोग बैठे होंगे जिन्होंने मेरी मीटिंग्ज कवर की होंगी और उनको याद होगा, मैं यह कहा करता था कि जब प्रधानमंत्री के चुनाव का वक्त आएगा तो इनका डंडा खड़केगा। आपने देखा कि वह खड़का। यह बात दूसरी है कि चेपाचापी करके एक बार सरकार बना ली। मेरा यह कहना कि प्रधानमंत्री के चुनाव के समय इनका डंडा खड़केगा और वह ठीक हुआ। आपने देखा कि जिन्दाबाद और मुर्दाबाद के नारे लगे और दूसरी बात मैं यह कहता था कि अगर किसी तरह चेपाचापी करके एक बार सरकार बना दी तो इसका चलना मुश्किल है। स्पीकर साहब, मैं तो यह कामना करता हूं कि यह सरकार चलें भगवान करे इन भाईयों को सदबुद्धि दे और ये एक जुट होकर राश्ट्र के हित में काम करें। यह सरकार पूरी मजबूती से चले, इनको काम करने का पूरा मौका मिले ताकि हिन्दुस्तान की जनता यह पहचान सके कि इन्होंने क्या काम किया ओर हमने क्या किया। लोकतन्त्र में फिर चुनाव होंगे। लोग फिर कसौटी पर कसेंगे। लोगों के पास जाने का फिर मौका मिलेगा। इसलिए अध्यक्ष महोदय, इन बातों का कोई झगड़ा नहीं है।

**श्री अध्यक्ष**: आप कितना टाईम और लेंगे?

**श्री बनारसी दास गुप्त**: स्पीकर साहब, 15 मिनट ओर लूंगां स्पीकर साहब, चौ. भजन लाल ने कहा कि हम पर जनता का विश्वास नहीं रहा। अध्यक्ष महोदय, 18 जनवरी को लोकसभा भंग हुई ओर चुनाव कराने का ऐलान किया गया। उसके कुछ दिन बाद मुझे ठीक तारीख तो याद नहीं दिल्ली में हमारी पार्टी की मीटिंग हुई। चौ. भजन लाल उसके अन्दर मौजद थे। उस दिन तक तो जनता का विश्वास कांग्रेस पर था। जिस दिन चौ. भजन लाल छोड़कर चाले गए जनता का विश्वास नहीं रहा। उसके बाद पार्टी मीटिंग के बाद ये अलग से मुझे मिले। कुछ बातें ये कहना चाहते थे, मनवाना चाहते थे और मैंने आश्वासन दिया था। अगर मैं उसी वक्त इनकी बात मानकर कुछ कहता तो जनता का विश्वास कांग्रेस पर टिका रहता, सारी बातें ठीक थी लेकिन आज यह और भाशा बोलते हैं। (Interruption)

## बैठक का समय बढ़ाना

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption please. The time is extended by half an hour.

## राज्यपाल के अभिभाशण पर चर्चा (पुनरारम्भ) तथा धन्यवाद प्रस्ताव पर मतदान

**श्री बनारसी दास गुप्त**: इनका दिल वही है, जबान वही है लेकिन भाशा दूसरी है। अध्यक्ष महोदय इस बात का कोई इलाज हमारे पास नहीं है कि लोकसभा भंग होने पर और चुनाव का ऐलान करने के बाद जनता का विश्वास कांग्रेस पर था और ये

बड़े अच्छे थे और 20 सूत्रीय प्रोग्राम और पांच सूत्री प्रोग्राम भी अच्छे थे .....

**चौ. भजन लाल**: मैंने कहा पांच सूत्रीय और बीस सूत्रीय प्रोग्राम की बात नहीं कही हमने बहुत पहले अनाउंस किया कि अगर .....

**श्री बनारसी दास गुप्त**: ये सारे भाई मींटिग में मौजूद थी। इन्होंने कोई शिकायत नहीं की। किसी बात का विरोध नहीं किया। अगर मीटिंग में .....

**चौ. भजन लाल**: अगर मीटिंग होती तो मैं उस मीटिंग में कहता। मीटिंग हुइ भी नहीं।

**श्री बनारसी दास**: स्पीकर साहब, ये लोग फैमिली प्लानिंग की बात करते हैं। इन्होंने जलासों के अन्दर, हमारे से जो कुछ हुआ, जो लोग नाराज हुए, उनके सेन्टीमेंटस को भड़काया। जससे के अन्दर 17 साल के लड़के को पेश कर दिया। अब किसने उसके पाजामें को खुलवा कर देखना था, सिने उसकी परीक्षा करनी थी। पहली बार एक बलदेव सिंह का नाम लिया। स्पीकर साहब, मैंने बार बार एलान कियाा कि हमारा तरीका गलत था। जनता ने पसन्द नहीं कियां लेकिन जा कुछ किया वह राश्ट्रहित में किया। हमारी नीयत साफ थी। तरीका गल्त हो सकता था, बात गल्त हो सकती है लेकिन नीयत साफ थी। अध्यक्ष महोदय, आप अन्दाजा लगाए कि नसबनदी करने से या आप्रेशन

करने से क्या हमारी पेन्शन बढ़ती थी या हमारा कोई निजी स्वार्थ था। इसमें तो राश्ट्र का भला था .....

**चौ. भजन लाल**: संजय को राजी करना था। इन्दिरा गांधी को राजी करना था।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: स्पीकर साहब, इन्दिरा गांधी का भी इसमें निजि स्वार्थ क्या था। कोइ भी यह साबित करके बताए कि नसबन्दी का आप्रेशन करने में किसी का क्या व्यक्तिगत स्वार्थ था? (व्यवधान)

स्पीकर साहब, फाजिल्का और अबोहर की बात कही गई। चौ. भजन लाल ने कहा कि फैसला प्रधानमंत्री ने किया। यह फैसला केन्द्रीय सरकार ने किया था। यह फैसला उस सरकार ने किया जिसमें बाबू जगजीवन राम भी बैठते थे। यह प्रधानमंत्री का फैसला नहीं है बल्कि केन्द्रीय सरकार का फैसला है। ठीक है हम नहीं दिलवा सके लेकिन फैसला बदला नहीं है। वह फैसला कागजों पर है और मैं यही चाहता हूं कि फैसला बदला न जाए। अगर ये भाई दिलवाने में मदद कर सकेंगे तो अच्दा होगा। इनकी सहायता हम लैंगे और हम भी कोशिश करेंगे।

रावी और व्यास के पानी की बात कही गई। हम कोई गल्त बात नहीं कहते। मैंने, अकाली पार्टी ने जो अपना मैनिफेस्टो छापा उसको पढ़कर बात की। अकालियों ने उसको छापा, उनके नेताओं ने बयान दिए। आज तो ये भाई तरदीद करते हैं लेकिन

इस हाउस के शुरू होने से पहले हरियाणा प्रदेश की जनता पार्टी के किसी नेता ने अकाली पार्टी के नेता के वक्तव्य की तरदीद नहीं की, उसको कन्ट्राडिक्ट नहीं किया। स्पीकर साहब, मैं समझता हूं और इस बात की मुझे पूरी आशा है कि श्री प्रकाश सिंह बादल हरियाणा के साथ कोई अन्याय नहीं करेंगे। मुझे इस बात की पूरी आशा है कि वह इन्साफ करेंगे और भारत सरकार का जो फैसला है उसको आनर करेंगे। मैं तो यहां तक उम्मीद करता हूं कि वे हमारी ज्यादा सहायता करेंगे। मैं नहीं समझता कि कोई ऐसी बात होगी। अकाली पार्टी के मैनिफैस्टो के बारे में कल तो एक साथी शायद दौलता साहब ने यह कह दिया कि वह तो जनता को बहकाने के लिए छाप दिया था। हमें इससे कोई एतराज नहीं, लोग अपने आप समझ जाएंगे कि क्या मैनिफेस्टो थां तो हमें तो डर था इस बात का लेकिन

**13.00 बजे**

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि हमारे सामने बैठने वाले भाईयों ने, हमारे दोस्तों ने मुझे पूरा यकीन दिलाया है कि हमारा यह सांझा उदेश्य है, साझा काज है। और हम इसके लिये मिलकर लडेंगे और मिलकर स्टैंड लेंगे मैं इनका स्वागत करता हूं और इस बात की सराहना करता हूं और मुझे यह आशा है कि हम इस बात पर एक रहेंगे क्योंकि यह हरियाणा प्रदेश के भविश्य का सवाल है, हरियणा प्रदेश की जिन्दगी और मौत का सवाल है। सच.सी.एस. के ग्रेड बढ़ाये गये परन्तु यह कहना गलत है कि एक

या दो आदमियों के लिये बढ़ाये गये। अगर एक या दो आदमियों के लिये बढाये गये होते तो एक या दो आदमियों को ही मिलता पर यह तो सारे केडर को मिला है।

**चौ. भजन लाल**: जुडिशियरी का नहीं मिला।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: जुडिशियरी का भी हम कंसिडर कर रहे हैं। वे लोग मेरे से मिले थे, मेरी उनसे बात भी हुई थी उनको भी मैंने यह आश्वासन दिया था कि हम आपका ग्रेड भी ऐट पर करेंगे। लेकिन एक दो आदमियों के लिये नहीं। अध्यक्ष महोदय, जुई कैनाल, इन्दिरा गांधी कैनाल, ये सारी बातें मैंने आपके सामने रखी। हां कुछ बातें हमारे एक माननीय सदस्य श्री गौरी शंकर जी ने कहीं, खूब मोटे–मोटे अलजाम लगाये हमारे किसी दोस्त ने कहा था कि शीशे के महल में बैठकर पत्थर नहीं फैकने चाहिए ऐसे कोई बात नहीं कहनी चाहिये, यह कोई अक्लमन्दी की बात नहीं है। मुझे बहुत सारी बाते याद हैं, मुझे बहुत सारी बातें पता है क्या इलजाम लगाते हैं मेरे पास तमाम कागजात मौजूद हैं। एक बात अध्यक्ष महोदय, उन्होने कही कि एक ही आदमी का कंकर या माइन्ज का ठेका दे दिया गया, मेरे पास यह सारा रिकार्ड है यह बिल्कुल गल्त बात है कि किसी एक आदमी को सभी ठेके या सभी माइन्ज दी गई हों। वह लीज के ऊपर दी गयी हैं और सरकार के इंट्रैस्ट में दी गयी हैं। जिन भाईयों का गांव या इलाका ऐसी माइन्ज या देहातों के पास है उनको इस बात का पता होगा कि जब ओपन आकशन की जाती

थी तो गांव वाले पूल कर लेते थे और पूल कर के बहुत कम बोली देते थे, सरकार के रैवन्यू में बहुत कम पैसा आता था। सन् 1973 में एक फलाइंग स्कवैड के द्वारा इस बात की जांच करवाई गयी और फलायंग स्क्वैड की बाकायदा रिपोर्ट है कि इन माइन्ज को एकसपेरीमेंन्टल बेसिज पर लीज पर दिया जाए। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको आंकड़े पढ़कर सुना सकता हूं कि किस .... (विघ्न)

**चौ. भजन लाल**: अध्यक्ष महोदय, यह गल्त कह रहे हैं, लाखों रूपये का घपला है जो कि एक ही आदमी को दिये गये हैं, यह बात किसी से छुपी हुई नहीं है।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, यह गल्त बात है कि आदमियों को ऐसी बातें करना शोभा नहीं देती हैं –(विघ्न)–

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, मैं रिकार्ड की बात करता हूं और दावे के साथ कह सकता हूं कि किसी एक ही आदमी को इस प्रकार का ठेका नहीं दिया हुआ है बल्कि डिफरेन्ट आदमियों का ठेके दिये हुये हैं और मैं यह भी पढ़कर सुना सकता हूं कि इन नामों से दिये गये हैं.....

**चौ. भजन लाल**: नाम कोई दिये हुये हों, आदमी तो एक ही है, असलीयत किसी से छुपी हुई नहीं है, हमें सब कुछ पता है (शोर)....(विघ्न)...

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, एक खेवड़ा सोनीपत है जब आकशन होती थी तो उसकी आमदनी थी 10211 रूपए और आज है उसकी आमदनी 32300 रूपयें। पालड़ा की पहले आमदनी थी 6 हजार एक सौ 54 रूपये और अब है 2 लाख 80 हजार 50 रूपये (विघ्न).....

**चौ. भजन लाल**: मेरा प्वायंट आफ आर्डर है स्पीकर साहब, अभी मुख्यमंत्री महोदय ने अपनी स्टेटमैंट पढ़कर सुनायी, मैं कहता हूं कि ठेका एक ही आदमी के पास है। अगर ऐसा न हो तो मैं चैलेंज करता हूं यह बात गल्त हो तो मैं इस्तीफा दे दूंगा या फिर मुख्यमंत्री महोदय मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दें, एम.एल.ए. बेशक वे बने रहें।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, क्या इन्कवारी करवायी जाए, किससे इंकवारी करवायी जाए, किस बात कि इन्कवारी (शोर)..... क्या कोई ऐसा घपला है इसमें .....(शोर).....

**चौ. भजन लाल**: लाखों रूपये का घपला है इसमें (शोर) यह गल्त नहीं है अगर गल्त होगा तो हम अस्तीफा दे देंगे नहीं तो दे दें (शोर)

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: किस बात का अस्तीफा दे दूं .... .....

**चौ. भजन लाल**: हम तो स्पीकर साहब, जायज बात कहते हैं, मैं अस्तीफा देता हूं नहीं तो ये दे दें (शोर)

**श्री बनारसी दास गुप्त**: आप इस्तीफा दे दो ....

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption.

**चौ. भजन लाल**: स्पीकर साहब, मैं सच कहा रहा हूं, लाखों रूपये का घपला है।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, इन्होंने जो गल्त बात हाऊस में कही हैं यह कोई कहने का तरीका नहीं है और यह कोई डेमोक्रेसी तरीका नहीं है।

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption. I will not allow such interruptions.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, यह जो कह रहे हैं, यह * * * * है निराधार है, यह जोश में आकर ऐसी बातें करते हैं, हमने इसकी पूरी तरह से जांच करवायी है ओर फिर इन्कवारी करवाने को तैयार हैं लेकिन इनके तरीके से नहीं .....(शोर)

**चौ. भजन लाल**: जुडिशियल इन्कवायरी करवाओ .....

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, हर काम में जुडिशियल इन्क्वायरी नहीं हुआ करती एडमिनिस्ट्रेटिव कामों के अन्दर .....(शोर) यह कोई जुडि ियल इन्क्वायरी की बात है ..... (विघ्न)

**चौ. भजन लाल**: आप अपने आदमियों की एक कमेटी बना लो और उनसे इन्क्वायरी करवा लो यानी हाउस की एक कमेटी बना दीजिए और मैम्बर चाहे आप कांग्रेस पार्टी के ले लें उनसे इन्कवायरी करवा लीजिए अगर इसमें घपला न हो तो मैं इस्तीफा दे दूंगा।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: हां अपने आप ही करवा लेंगे ... ...(शोर)

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, यहां तक स्टेट के रेवेन्यू का सवाल है .....

**चौ. भजन लाल**: आप अपनीन कमेटी के आदमियों के द्वारा .....(शोर) (विघ्न)

**श्री बनारसी दास गुप्त**: आप खामोश बैठिये, आप क्या बात कह रहे हैं, यूं ही बीच में बोलते हैं, कुछ ज्याद बोलना आता हैं आपको .....(शोर) खामोश .....

**Mr. Speaker**: Order please. No interruption.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: * * * *

**Mr. Speaker**: No interruption. Order please. No interruptions like this.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: * * * *

*अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार कार्यवाही से निकलाल दिये गये।

**श्री बनारसी दास गुप्त**: * * * *(Noise)

**Mr. Speaker**: Order please. This is a disorderly behaviour and I shall have to name you.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: * * * *

**चौ. भजन लाल**: * * * *

**श्री बनारसी दास गुप्त**: * * * *

**Mr. Speaker**: No interruption. Order please. No interruptions like this.

**चौ. भजन लाल**: * * * *

**श्री बनारसी दास गुप्त**: * * * *

**Mr. Speaker**: Order please. No interruptions like this.

**चौ. भजन लाल**: * * * *

**श्री बनारसी दास गुप्त**: * * * *

**Mr. Speaker**: I shall have to name you. The behaviour of Sh. Bhajan Lal is disorderly.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: * * * *

**श्रीमती लेखवती जैन**: स्पीकर साहब, यह सारी कार्यवाही रिकार्ड में नहीं आनी चाहिए क्योंकि लीडर आफ दी हाउस बोल रहे हैं ओर बीच में इन्ट्रस्अ करना कोई अच्छी बात नहीं है। जो इलजाम लगाये गये हैं यह सभी कुछ एक्सपंज होना चाहिए।

**Mr. Speaker**: All this is expunged.

**श्री बनारसी दास गुप्त**: अध्यक्ष महोदय, हमने इनकी बात बड़े सब्र से सुनी है जो उन्होंने इल्जाम लगाये बड़ी शान्ति के साथ सुने, उन्होंने जो बातें कहीं उन सब बातों को हमने बड़े ध्यान से, आराम से सुना, चैलेन्ज करने वाली क्या बात है एक और बात है मैं रिकार्डके फैक्ट्स बतलाता हूं उन सब बातों की इन्क्वायरी भी करवायी जा सकती है, हमारे पास इन्क्वायरी की एजेन्सी भी है, हम सब कुछ कर सकते हैं। यहां से बीड़ घघर नजदीक है

*Expunged as ordered by the Chair.

प्हले हमें यहां से एक लाख 6 हजार 535 यपये मिलते थे और अब मिलते हैं एक लाख 45 हजार रूपये। जिला सोनीपत से 63 हजार रूपया मिलता था और अब 72 हजार यपया मिलता है, सराये

ख्वाजा से 1 लाख 12 हजार 600 रूपये की आमदनी पहले होती थी और अब उससे 2 लाख 22 हजार रूपये की आमदनी होती है, आलमोसट डबल। तहसील कालका के अन्दर से 1 लाख 85 हजाार की आमदनी थी ओर अब उससे 2 लाख 8 हजार की आमदनी होती है। तहसील गुड़गांव के अन्दर 52 हजार 425 रूपये की आमदनी होती थी और अब वहां से 71 हजार 500 रूपये की आमदनी हो रही हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि स्टेट का रेवन्यू बढ़ाया है, स्टेट को फायदा हुआ है बाकायदा उसकी इंकवायरी हुई, फलायग स्क्वैड की सिफारिश के ऊपर यह आक्शन का तरीका बदला गया और अध्यक्ष महोदय एक बात और कहता हूं यह लीज के लिये बाकायदा पब्लिसिटी की जाती है, गजट के अन्दर नोटिफिकेशन आता है। एक अग्रेंजी अखबार में और एक हिन्दी अखबार में यह विज्ञापन दिया जाता है। किसी ने अगर कोई लीज लेनी हो तो वह प्रार्थना पत्र पेश करे। उन पर विचार करने के बाद जिसकी हाइएन्ट ओफर होती है उनको दी जाती है।

**चौ. भजन लाल**: तो फिर क्या हर्ज है अगर जुडिियिशल इन्क्वायरी करवा लो ....

**Mr. Speaker**: Order please. I say no interruption of any kind. कोई इन्ट्रपशन किसी किस्म की न हो। जब आप बोलते थे तो इधर के मैंबरों ने खुद कहा था कि इन्ट्रपशन नहीं होना चाहियें।

**चौ. भजन लाल**: अगर कोई गल्त बात कहे तो कलैरीफिकेशन करनी पड़ती है।

**Mr. Speaker**: Order please. This is not the method ot interrupt. Please go on.

**श्री बनारसी दास**: अध्यक्ष महोदय, किसी एक बात को ये गल्त साबित कर दें, किसी एक बात के खिलाफ ये सबूत करके दिखाएं, मेरे पास आंकड़े लाएं मैं वायदा करता हूं कि हम फौरन एकशन लेंगे। इसके अलावा अध्यक्ष महोदय, मैं आपके सामने कुछ डिवेल्पमैंट की बातें बताना चाहता हूं। हरियाणा प्रदेश के अन्दर कुछ काम इस अर्से के अन्दर हुए। अध्यक्ष महोदय, कोआप्रेटिव विभाग एक बहुत इम्पार्टेट विभाग है जो आज के युग में, समाजवाद के युग में सबसे ज्यादा रोल प्ले कर सकता है। अध्यक्ष महोदय, 1966–67 के अन्दर तमाम कोआप्रेटिव सोसायटियों के मैंबरों की संख्या जहां 9 लाख 23 हजार थी वहां आज वह संख्या 15 लाख 30 हजार है और सोसाइटियों के ओन फंड थे वे 1431 लाख थे और आज वह 6760 लाख हैं तो अध्यक्ष महोदय, आप अन्दाजा लगाएं कि कितना विकास हुआ है। वर्किंग कैपिटल जहां 1967 में 5890 लाख था वह आज 37471 लाख है। इसके अलावा प्रोफिट जहां 1967 के केवल 87 लाख होता था आज वह 621 लाख है। इसी प्रकार बैंकों के कर्जे की बात है। ये तमाम फिग्गर्ज हमारे सामने हैं लेकिन कोई भी बात गल्त तरीके से इस हाउस में नहीं रखी गई। अध्यक्ष महोदय, जहां तक कृशि उत्पादन की बात

है 1968–69 के अन्दर हमारे यहां 27.14 लाख टन पैदा होता था और इस प्रदेश की यह हालत थी कि अन्न की दृश्टि से यह घाटे का प्रदेश था और एक लाख टन अनाज बाहर से मंगा कर गुजारा करता था। आज यह हालत है कि हमारे यहां किसान ने मेहनत की और सरकार की तरफ से साधन उपलब्ध कराए गए और उसका यह नतीजा है कि आज हमारी पैदावार 50.38 लाख टन हो गई है। 15–16 लाख टन अनाज हम हर साल सैंट्रल पूल में देते हैं। इस साल हमने साढ़े पांच लाख टन चावल और 9 लाख टन गेहूं सैंट्रल पूल में दिये। अध्यक्ष महोदय, जहां तक सड़कों का ताल्लुक है जहां तक मुझे याद है कि पहले हरियाणा में 5100 किलोमीटर सड़कें बनीं हुई थीं लेकिन आज वह 15000 किलोमीटर से ऊपर जा चुकी हैं। इस वक्त परसेंटेज के हिसाब से भी 70 प्रतिशत विलेजिज को हमने लिंक कर दिया है। यह सारी विकास की बातें आपके सामने हैं जिनका मैंने अभी जिक्र किया। दौलता साहब ने एक बात कही कि गवर्नर साहब के अभिभाशण में फयूचर के बारे में कोठ बात नहीं कही गई है कि हमारे भावी प्रोग्राम क्या होंगे। मैं उनको आपके द्वारा बताना चाहता हूं कि हमने फयूचर के सारे प्रोग्राम इसके अन्दर लिखे हुए हैं कि हम पानी कितना बढ़ाएंगे, नहरें कहां निकालेंगे, सड़कें कहां बनाएंगे, उद्योग धन्धे कहां लगाएंगे और डेरी विास के काम कहां–कहां करेंगे। अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बतलाना चाहूंगा कि आज किसी भी देश सिकी भी प्रदेश को खुशहाल बनाने के लिये और बेकारी और बेराजगारी दूर करने के लिये सबसे बड़ा साधन पानी और

बिजली है। जहां तक बिजली का संबंध है आपको पता है कि हमने दो थर्मल प्लांट फरीदाबाद के अन्दर लगाए और तीसरे प्लांट का काम चल रहा है। हम दो थर्मल प्लांट पानीपत में 110–110 मैगावाट के लगाने जा रहे हैं। एक पर काम तेजी से चल रहा है जोकि अगले साल ही बनकर तैयार हो जाएगा ओर 250 मैगावाट बिजली हमें ब्यास प्रौजैक्ट से मिलेगी। इस पर ही हमने संतोश नहीं किया। दौलता साहब, हमने फयूचर की ही बात नहीं सोची हमने बीस साल आगे की बात सोची है। हमने यह सोचा कि यह तमाम थर्मल प्लांट लगने के बाद और ब्यास से बिजली मिलने के बाद अगले बीस साल में जो हमारी रिक्वायरमैंट होगी क्या हम उसको मीट कर पांएगे। इस बात को सोचकर हमने हिमाचल प्रदेश की सरकार से समझौता किया नापथा झाकरी प्रौजैक्ट को बनाने पर जोकि एक हजार मैगावाट का प्रोजैक्ट है। इस प्रोजैक्ट के ऊपर 400 करोड़ रूपये खर्च होंगें। हमारा एग्रीमैंट साइन हो चुका है और 80 प्रतिशत बिजली के अन्दर हमारा हिस्सा होगा। उस प्रोजैक्ट का हम बनाएंगे। एक तो इससे हमें बिजली मिलेगी और दूसरे ब्यास प्रोजैक्ट पर जो हमारे इंजीनियर्ज और दूसरी लेबर खाली होने वाले हैं उनको काम भी मिलेगा। हमने 20 साल आगे तक की बात सोची है तो यह बात कहना कि भविश्य की बात नहीं सोची, गल्त है। जहां तक नीति और पालिसी की बात है यह बदली नहीं जा सकती। हमारी कांग्रेस की पालिसी लोकतन्त्र, समाजवाद और धर्म निर्पेक्षता की पालिसी है और इसी नीति पर हम काम कर रहे हैं। तो अध्यक्ष महोदय, मैं आपका अधिक समय

न लेते हुए केवल यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि हमें इस बात का कोई लालच नहीं कि हम हमेशा के लिये सत्ता के अन्दर बैठे रहें। मैं तो यह समझता हूं कि वह लोकतन्त्र लंगड़ा है अगर उसमें मजबूत विपक्ष न हो। हमारी बदकिस्मती यही रही कि कांग्रेस के सामने विपक्ष दल मजबूत न बन पाया। अगर मजबूत होता तो शायद कांग्रेस वाले गल्तियों न करते, उनके दिमाग के अन्दर कमी न आती। अध्यक्ष महोदय, यह सत्ता जो होती है यह मदमस्त हाथी की तरह होती है अगर इसके ऊपर विपक्ष का अंकुश न हो तो यह गल्ती कर सकता हैं और खड्ड में गिरा सकता है। हमारी बदकिस्मती यही रही कि आजतक हिन्दुस्तान में मजबूत विपक्ष पनप कर सामने नहीं आया लेकिन आज विपक्ष भी मजबूत है और सरकार भी मजबूत है। सही ढंग से अगर काम चले, लोकतान्त्रिक ढंग से काम चाले और कांस्टीच्यूशनल तरीके से काम चले तो मैं समझता हूं कि हिन्दुस्तान का भविश्य उज्जवल होगा, हम आगे बढ़ेगे और जो सरकार अभी बनी है हमारे प्रदेश की और से उसको पूरा सहयोग मिलेगा। उनकी गाइडैंस के अन्दर हम काम करेंगे और जो आदेश हमें दिये जाएंगे उन आदेशों के ऊपर काम करेंगे लेकिन साथ साथ यह भी आशा रखेंगे कि केन्द्रीय सरकार की ओर से हमें भी पूरा सहयोग मिलेगा। इन शब्दों के साथ सदन से प्रार्थना करता हूं कि इस धन्यवाद प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पास किया जाए। (तालियां)

**Mr. Speaker**: Question is –

That an Address be presented to the Governor in the following terms:-

"That the Members of the Haryana Vidhan Sabha assembled in this Seasion are deeply grateful to the Governor for the Address which he has been pleased to deliver to the House on the 23rd March. 1977."

The motion was carried.

13.21 बजे

**Mr. Speaker**: The House stands adjourned Sine-die.

(The Sabha then *adjourned Sine-die)